ईश्वरीय सृष्टि का अद्भुत चमत्कार



एक पुरातन ऋषि का दिव्य जन्म परमपिता परमात्मा की विचित्रता से युक्त, अद्भुत और विलक्षण सृष्टि का उद्घाटन पूज्यपाद गुरुदेव शृङ्गी ऋषि कृष्णदत्त जी महाराज के प्रवचनों से हुआ। वह ईश्वर का एक अलौकिक और दिव्य प्रकटीकरण है और सृष्टि के इतिहास की एक मात्र, विलक्षण अद्भुत घटना भी। जब १४ सितम्बर सन् १९४२ को, उत्तर प्रदेश के गाजियाबाद जिले के, ग्राम खुर्रमपुर, सलेमाबाद में एक विशेष बालक ने जन्म लिया। बालक जन्म से ही एक विलक्षणता से युक्त था और विलक्षणता यह कि जब भी यह बालक सीधा, शवासन की मुद्रा में, कुछ अन्तराल लेट जाता या लिटा दिया जाता, तो बालक की गर्दन दायें-बायें हिलने लगती, लगभग १५ मिनट वेद मन्त्रोच्चारण होता और उसके उपरान्त सृष्टि के आदि काल से वर्तमान काल तक के विभिन्न कालों के स्वयं और विभिन्न ऋषि-मुनियों के चिन्तन और घटनाओं पर आधारित ४५ मिनट तक एक दिव्य प्रवचन होता। बाल्यावस्था होने के कारण, प्रारम्भ में आवाज अस्पष्ट होती और जैसे-जैसे आयु बढ़ने लगी, वैसे-वैसे ही आवाज और विषय दोनों स्पष्ट होने लगे। पर एक अपठित ग्रामीण बालक के मुख से ऐसे दिव्य प्रवचन सुनकर जन मानस आश्चर्य करने लगा, बालक की ऐसी दिव्य अवस्था और प्रवचनों की गूढ़ता के विषय में कोई भी कुछ कहने की स्थिति में नही था। ग्रामीण, निर्धन और अपठित समाज होने के कारण भूत प्रेत का प्रभाव मानते हुए बहुत-सी चिकित्सा भी कराई गई, पर सब व्यर्थ रहे। क्योंकि बालक की यह प्रवचन क्रिया तो यौगिक थी यह तो सतत् ऐसे ही चलती रही। आवाज जब कुछ स्पष्ट हुई तो इस स्थिति का स्पष्टीकरण भी दिव्यात्मा के प्रवचनों से ही हुआ। कि यह

आत्मा सृष्टि के आदिकाल से ही विभिन्न कालों में शृङ्गी ऋषि की उपाधि से विभूषित और सतयुग के काल में आदि ब्रह्मा के शाप के कारण इस युग में जन्म लेने का कारण बनी। और इस जन्म में अपठित रहने की स्थिति में भी जैसे ही यह शरीर श्वासन की मुद्रा में जाता तो कुछ अन्तराल बाद स्वतः ही योग समाधि की स्थिति बन जाती। जहां इस दिव्यात्मा का पूर्व जन्मों का ज्ञान उद्बुद्ध हो जाता और जैसा काल देखा था उस काल के अनुकूल व्याख्यान कण्ठ आ जाते। क्योंकि, जन्म जन्मान्तरों के संस्कार स्मृति में, अन्तःकरण में विराजमान रहते हैं। और अन्तरिक्ष में उपस्थित सूक्ष्म शरीर धारी दिव्यात्माओं के समक्ष एक सत्संग सदृश्य स्थिति बन जाती, जिसमें इस महान आत्मा का सूक्ष्म शरीरधारी आत्माओं के लिए प्रवचन होता। जिसमें इस आत्मा के पूर्व जन्मों के शिष्य महर्षि लोमश मुनि महाराज, और पूज्य महानन्द जी के प्रवचन भी होते। क्योंकि इस दिव्यात्मा का स्थूल शरीर यहां मृत्यु लोक में स्थित होने के कारण, वहां अन्तरिक्ष में दिव्य आत्माओं के सम्मुख सत्संग में दिया जाने वाला दिव्य प्रवचन, इस शरीर के माध्यम से यहाँ उपस्थित जन मानस को भी सुनाई देते। इन प्रवचनों में ईश्वरीय सृष्टि का अद्भुत रहस्य समाया हुआ है, ब्रह्माण्ड की विशालता, प्रत्येक लोक में जीवन की अनिवार्यता का बोध, सृष्टि का उद्देश्य, पूर्व कालों में विज्ञान की विशालता का दिग्दर्शन, वैदिक संस्कृति का उज्ज्वलतम स्वरूप, आत्मा, परमात्मा और प्रकृति का स्वरूप, विभिन्न कालों का आँखो देखा सदृश्य वर्णन, भगवान राम और भगवान कृष्ण के जीवन की दिव्यता का साक्षात दर्शन, समाज में प्रचलित रूढ़ियों का निवारण करने वाली दृष्टि, क्या कुछ दिव्य नहीं है इन दिव्य प्रवचनों में ? ये किसी भी मनुष्य को, समाज का और राष्ट्र को उच्च कोटि का जीवन जीने का कारण पैदा करने का सामर्थ्य रखते है।

पूज्यपाद गुरुदेव की २० वर्ष की अवस्था तक ये प्रवचन ऐसे ही जनमानस को आश्चर्यचकित और उनका मार्गदर्शन करते रहे। परन्तु कुछ प्रबुद्ध महानुभावों ने इन

प्रवचनों की इस अमूल्य निधि को सुरक्षित रखने के उद्देश्य से सन् १९६२ से शब्द ध्वनांकित यन्त्र (टेप रिकार्ड) संरक्षित करने का निश्चय किया, और यह क्रम पूज्यपाद गुरुदेव के महाप्रयाण १५ अक्टूबर सन् १९९२ तक होता रहा।

इस अन्तराल पूज्यपाद गुरुदेव के १५०० प्रवचन, टेप रिकार्ड से संरक्षित किये गये। जिनमें सृष्टि के अनन्तकाल की अमूल्य धरोहर निहित है। हम उनको व्यवस्थित रूप से और अनुसन्धानात्मक दृष्टि से पुस्तकों के रूप में प्रकाशित कर रहे हैं। परमात्मा की अनुपम कृपा से प्राप्त, इस अमूल्य धरोहर को जन जन तक पंहुचाने के प्रयास में योगदान देने के लिए, प्रत्येक वैदिक धर्मी को सहयोगी बनना चाहिए। जिससे हम सृष्टि के आदि काल से लेकर आधुनिक काल तक की मानव गाथा को सभी के सम्मुख रख सकें। विश्व कल्याणार्थ की भावना से निहित इस महान ज्ञान की वसुधैव कुटुम्बकम की संस्कृति को प्रसारित कर सकें।

मानव कल्याण की चर्चाएं

1.द्यौ गामी चित्र-820323

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भान्ति, कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस मेरे देव, जो आनन्दमयी है मानो जो आनन्द का स्रोत है, उस महान देव की महिमा का, हम गुणगान गाते चले जा रहे थे, आज का हमारा वेद मन्त्र, उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गा रहा था, क्योंकि यह जो संसार, आज हमें दृष्टिपात आ रहा है, चाहे वह इस पृथ्वी मण्डल वाला जगत हो, चाहे वह मङ्गल मण्डल वाला जगत हो, परन्तु किसी भी लोक लोकान्तरों वाला जगत क्यों न हो, यह सर्वत्र ब्रह्माण्ड, उस मनोहर देव की महिमा में गति कर रहा है। मानो उसके ही गर्भ में यह सर्वत्र ब्रह्माण्ड नृत्त कर रहा है। जिस प्रकार माता के गर्भस्थल में, बालक का निर्माण हो रहा है, सूक्ष्म से जगत का निर्माण, माता के गर्भस्थल में हो और व्यापक ब्रह्माण्ड की रचना प्रभु के गर्भ में होती रहती है, वे परमपिता परमात्मा यज्ञोमयी रहता है। जैसे बेटा! आज का हमारा वेदमन्त्र कह रहा था, यं श ना रथं ब्रह्मणे यज्ञं रथाः वेद का ऋषि कहता है कि यज्ञशाला का एक रथ बनता रहता है और वह रथ बन करके जिस स्थली में जाता है उस स्थली का नाम द्यौ लोक कहा जाता है।

स्वर्ग तुल्य गृह

तो आओ, मेरे प्यारे! आज मैं तुम्हें विशेष चर्चाओं में ले जाना नहीं चाहता हूँ मुझे इस संसार की बहुतसी वार्त्ताएं स्मरण आती रहती है। परन्तु उन वार्त्ताओं में, नाना प्रकार के ज्ञान और विज्ञान की चर्चाएं भी हमारे यहाँ वैदिक साहित्य में होती रही है। आज मैं तुम्हें ज्ञान और विज्ञान में न ले जाता हुआ और महर्षि रोहिणीकेतु बेटा! ये तीनों ऋषि महाराज प्रजापति के यहाँ, याग करने के लिए पहुंचे और जब वहाँ याग करने के पश्चात पूर्णता को प्राप्त करके जब यह अपने आश्रम में आये,

तो बेटा! महर्षि वैशम्पायन अपने आसन पर विद्यमान थे, परन्तु सायंकाल का समय हो गया, अपनी निंद्रा की गोद में चले गये, स्वप्न होता है। ऐसे ही वेद के मन्त्र में बेटा! उनके स्वप्नवत में एक ध्वनि आने लगी, वह उच्चारण कर रही थी रथं दिव्यां गतं प्रमाणा यजूँषि देवं द्यौ लोकाः बेटा! यह वेद का मन्त्र कह रहा था, कि रथं द्यौ जब्रणा द्यौ लोकाः मानो देखो, यज्ञमान जब यज्ञशाला में विद्यमान होता है और होता गण होते है परन्तु जब वे स्वाहा उच्चारण करते है जिन ग्रहों में स्वर्ग और नरको की कल्पना की जाती है तो ऋषि मुनियों ने बेटा! बहुत ऊँची कल्पना की, उन्होंने कहा कि जिस गृह में मानो एक दूसरे के विचारों में परस्पर विवाद रहता है मानो देखो, वह नारकिक समाज रहता है। और जिस गृह में पति पत्नी, गृह पति बेटा! सब एक दूसरे से प्रसन्न रहते है सन्तुष्ट रहते है और दर्शनों का चलन होता है तो बेटा! वह गृह स्वर्ग के तुल्य माना गया है। इसी प्रकार बेटा! यह जो ब्रह्माण्ड है मानो इसमें तुम शब्दों को भरण करते हो, तुम्हारे मानो वाणी के द्वारा, शब्दों के द्वारा, आचरणों के द्वारा यह वायुमण्डल का निर्माण होता है बेटा! मेरे प्यारे! यह मैं नहीं कह रहा हूँ, आज का वेदमन्त्र कहता रहता है।

महर्षि वैशम्पायन द्वारा मन्त्र चिन्तन

आओ, मेरे प्यारे! देखो, जब ऋषि के आगंन में, यह वाक आने लगा तो बेटा! ऋषि चिन्तन में लग गया, और ऋषि ने यह विचारा कि दर्शन क्या कहता है? वे बेटा! मानवीय दर्शनों के ऊपर अपनी टिप्पणियाँ प्रारम्भ करने लगा, और वैशम्पायन ऋषि महाराज अपने विचारों में संलग्न हो गएं और उसी वेदमन्त्र के ऊपर, परन्तु उसको पृथक दृष्टिपात नहीं कर सके, दर्शनों से घट रहा है, कि विचारों से संसार, विचारों से द्यौलोक और विचारों से ही यह अन्तरिक्ष लोक कहलाता है। परन्तु शब्दों से ही मानो देखो, यह द्यौ मण्डल, आभा में युक्त होता रहा है। मेरे प्यारे! इसीलिए वेदमन्त्र कहता है, हे वाणी! तू उद्गान गाने वाली बन, हे वाणी! तू उद्गाता बन करके, उद्गान गा, मानो जिससे तू मानो देखो, वाणी, जो सत्य उच्चारण करता है वह सत्य

वाणी उसी को प्राप्त होती है, जो सत्योमयी रहता है।

तो मेरे प्यारे! महर्षि वैशम्पायन इस चिन्तन में लगे रहे, परन्तु प्रातःकाल हो गया, सूर्य उदय हो गया, ऋषि अपने आसन को नहीं त्याग रहे थे। मेरे प्यारे! निकटतम आसन, महर्षि विभाण्डक मुनि भी रहते थे। महर्षि विभाण्डक मुनि भ्रमण करते हुए ऋषि के द्वार पर पहुंचे। ऋषि से कहा हे ऋषिवर! तुम अपने आसन को क्यों नहीं त्याग रहे हो? उन्होंने कहा कि ब्रह्मणे! वेद का मन्त्र मुझे यह उच्चारण कर रहा है कि यज्ञमान का रथ बन करके द्यौ लोक को जाता है। मैं उस रथ को साक्षात्कार करना चाहता हूँ। मेरे प्यारे! महर्षि वैशम्पायन की यह चर्चा प्राप्त करने के पश्चात, मेरे प्यारे! देखो, विभाण्डक मुनि भी इसी चिन्तन में लग गये। मेरे प्यारे! देखो, महर्षि शौनक मुनि भी आ पहुँचे और देवत्रां घृणित ऋषि महाराज बेटा! आदि ब्रह्मवेत्ता इसके ऊपर मनन करने लगे। जब मनन करने लगे तो मेरे प्यारे! मुझे स्मरण है, जब चिन्तन करने लगे, मध्य दिवस आ गया उन्होंने कहा भई! यहाँ से गमन करो और भ्रमण करते हुए, तुम अयोध्या में पहुँचों। और एक याग का अयोजन किया जाए, जहाँ यह वाक प्रत्यक्ष हो सकता है।

भगवान राम का उपदेश

मेरे प्यारे! यह वाक सब ऋषियों के आंगन में आ गया, मेरे प्यारे! वहाँ से ऋषियों का गमन हुआ और ऋषि मुनि भ्रमण करते हुए, अपने वाहनों में, रात्रि समय बेटा! महर्षि वरतेन्तु का आश्रम मिला। वहाँ उन्होंने वास किया। प्रातःकालीन वहाँ से गमन करते हुए वे बेटा! अयोध्या में पहुँचे। जहाँ अयोध्या में बेटा! देखो, राम के यहाँ नित्यप्रति याग होता था, बेटा! क्योंकि देखो, अयोध्या काल में देखो, ब्रह्मणे कृतां देवाः अयोध्या में नित्यप्रति याग होता रहता था। तो मेरे प्यारे! देखो, राम का याग समाप्त हो गया था और राम की उपदेश मंजरी प्रारम्भ हो रही थी। राम, उच्चारण कर रहे थे, कि हे राष्ट्र के कर्मवेत्ताओं! आओ, मैं तुम्हें कुछ वेद के शब्दों में उच्चारण करना चाहता हूँ, तो राम उच्चारण कर रहे थे कि राष्ट्र का निर्माण करना

है, मानो समाज को कर्तव्यवाद में लाना है। प्रत्येक मानव को कर्तव्यवाद में लाने के लिए ही, राष्ट्र का निर्माण होता है।
तो मेरे प्यारे! भगवान राम उच्चारण कर रहे थे, कि यह समाज उस काल में ऊँचा बनता है, जिस काल में एक दूसरे का कोई ऋणी नहीं रहता। क्योंकि यहाँ नाना प्रकार के ऋण, मानव के समीप रहते है। सबसे प्रथम देव ऋण रहता है, उसके पश्चात पितर ऋण रहता है, उसके पश्चात देखो, ऋषि ऋण रहता है। तो इन सब ऋणों से अवऋण होने के लिए भगवान राम ने कहा कि हमें प्रातःकालीन देव याग करना चाहिए। देव याग किसे कहते है, देवताओं के पूजन को देव याग कहते है। मेरे प्यारे! देखो, देवां दलप्रव्हणा देव याग उसे कहते है जहाँ देवताओं का पूजन होता है। मेरे प्यारे! देखो, देवताओं का पूजन कहाँ से होता है? यागाजां ब्रह्मणे लोकाः वेद का ऋषि कहता है। भगवान राम ने भी यही कहा कि देखो, जिस गृह में याग होता है, वह गृहदेवपूजा कहलाता है। याग ही देवपूजा है। मेरे प्यारे! ब्रह्म पूजा, ब्रह्मयाग है, प्रभु का चिन्तन करना और मेरे प्यारे! देखो,। पितर याग है, पितरों की आज्ञा का पालन करना। मेरे प्यारे! पितर कौन होते है? पितरश्चदं ब्रह्मणे मानो देखो, पितर वे होते है, जो हमें ऊँचे मार्ग पर लगाते है। हमें मार्ग के प्रदर्शक मानो वही हमारे पितर कहलाते है।

याग का प्रभाव

आओ, मेरे प्यारे! मैं पितरों के सम्बन्ध में विवेचना नहीं देने आया हूँ परन्तु भगवान राम उच्चारण कर रहे थे, अपनी उपदेश मंजरी में क्या, हमें अपने राष्ट्र को ऊँचा बनाना है, तो प्रत्येक गृह में याग होने चाहिए, सुगन्धि होनी चाहिए। जहाँ पदार्थों की सुगन्धि हैं, वहाँ शब्दों की भी सुगन्धि होनी चाहिए। मेरे प्यारे! यथार्थ उच्चारण करने वाला, मानव समाज रहना चाहिए। मेरे प्यारे! देखो, यागां ब्रह्मणे जब प्रत्येक गृह में याग होता रहेगा, प्रत्येक मानव अपने अपने जीवन के सम्बन्ध में, नाना वार्त्ताओं के ऊपर चिन्तन करने लगेगा, तो बेटा! भगवान राम ने, अपने राष्ट्र में यह

घोषणा कर दी, कि प्रत्येक गृह में याग होना चाहिए। क्योंकि याग होने से मानव बुद्धिमान बनता है, मानव के मस्तिष्क की ग्रन्थियाँ का स्पष्टीकरण हो जाता है। तो मेरे प्यारे! देखो, माताएं अपने गर्भ से, ऊँचे सन्तान को जन्म देने वाली बनती है। मानो जिन माताओं के गर्भस्थल में, जब शिशु होता है तो माताओं को वेद का अध्ययन करना चाहिए। दर्शनों की चर्चाएं स्मरण करनी चाहिए, परन्तु देखो, वह आयुर्वेद का अध्ययन करके बेटा! आयु को ऊर्ध्वा बनाने वाली औषधियों को ग्रहण करना चाहिए। मेरे प्यारे! मैं इस सम्बन्ध में कोई विवेचना नहीं देने आया हूँ। राम ने बेटा! अपनी अयोध्या में यह घोषणा कर दी थी।

मेरे प्यारे! देखो, राम की उपदेश मंजरी जैसे ही समाप्त हुई तो मुनिवरों! देखो, वे ऋषिवर, एक पंक्ति में आ करके विद्यमान हो गये, भगवान राम ने दृष्टिपात किया, कि यहाँ तो ऋषि मुनियों के, ब्रह्मवेत्ताओं के दर्शन हो रहे है बेटा! राम, लक्ष्मण, चारों विधाता बारी बारी ऋषियों के चरणों को स्पर्श करने लगे, राम ने कहा कि हे ऋषियों! आज तुम्हारा आगमन कैसे हुआ? मानो मुझे सूचना दे देते, मैं अपने वाहनों में, अपने राष्ट्र में तुम्हें घोषणा के सहित मानो तुम्हारा आगमन होता। तो मेरे प्यारे! ऋषियों ने कहा, कोई वाक नहीं राम, रमं ब्रह्मणे, भगवान राम ने कहा कि महाराज! तुम्हारा आगमन क्यों हुआ? उस मूल कारण को उच्चारण कीजिए। मेरे प्यारे! इसमें महर्षि वैशम्पायन ने कहा कि हे राजन! हम इसलिए आए है क्योंकि हम एक याग कराना चाहते है आपके राष्ट्र में एक याग हो, राम बड़े प्रसन्न हुए और प्रसन्न हो करके बोले कि हे प्रभु! ऋषियों की आज्ञा का पालन करना हमारा कर्तव्य है मानो देखो, ऋषि मुनि हमें जो वाक कहते है वह यथार्थता में हमारे गुणों के लिए, मानो देखो, हमारे लिए सौभाग्यशाली है।

अयोध्या में याग

तो मुनिवरों! देखो, भगवान राम ने शिल्पकारों को आज्ञा दी, कि एक यज्ञशाला का निर्माण हो और हम याग करेंगे। मेरे प्यारे! देखो, भगवान राम की आज्ञा के अनुसार

नाना शिल्पकार बेटा! देखो, एक यज्ञशाला का निर्माण करने लगे और भगवान राम ने ऋषि मुनियों को जैसे मानो कुछ उनमें ब्रह्मवेत्ता थे कुछ ब्रह्म जिज्ञासु थे मानो देखो, कुछ ऊर्ध्वा मार्ग में गति करने वाले थे, सर्वत्र ऋषियों का आगमन मानो देखो, उनके कक्षों में वर्णित कराया। मेरे प्यारे! देखो, अब वह समय आने लगा, मानो नित्यप्रति याग तो होता ही था परन्तु देखो, यज्ञशाला का निर्माण भी हो गया। जब यज्ञशाला का निर्माण हो गया, यज्ञोमयी वेदियाँ बन गई, तो मुनिवरों! देखो, भगवान राम से शिल्पकारों ने कहा प्रभु! आपके यहाँ यज्ञशाला का निर्माण हो गया है। मेरे प्यारे! भगवान राम ने ऋषि मुनियों से प्रार्थना की और यह कहा कि प्रभु! यज्ञशाला का निर्माण हो गया है अब हम यज्ञ करें।

तो मेरे प्यारे! देखो, ऋषि मुनि सर्वत्र यज्ञशाला में विराजमान, आसन लगे हुए थे। मेरे प्यारे! ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे हम ब्रह्मपुरी में विद्यमान हो। मानो यज्ञशाला में जब वेदज्ञ ध्वनि होने लगी तो मेरे प्यारे! देखो, भगवान राम ने निर्वाचन किया महर्षि वैशम्पायन को, उस यज्ञ का ब्रह्मा नियुक्त किया और मुनिवरों! देखो, नाना ऋषिवर, कोई उद्गाता बना कोई अध्वर्यु बना कोई मानो देखो, पुरोहित बन करके, महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज पुरोहित बने और उद्गाता महर्षि विभाण्डक और महर्षि रोहिणीकेतु बनें। मेरे प्यारे! उद्गान हो रहा है, उद्गान गाया जा रहा है, वेदों की पवित्र ध्वनियाँ हो रही है, मुनिवरों! देखो, जब वह याग मानो प्रारम्भ हुआ, अग्निहोत्र होने लगा, तो भगवान राम उस यज्ञ के यज्ञमान बनें, तो मेरे प्यारे! देखो, वेद में वह ध्वनि होने लगी, क्या ध्वनि यज्ञमानो द्यौ लोकां हिरण्यं प्रव्हा द्यौ लोकां देवं रथाः मेरे प्यारे! जब यह वाक भगवान राम ने भी श्रवण किया, तो उन्होंने ब्रह्मवेत्ताओं से कहा, उन्होंने उन पुरोहितों से कहा कि हे महाराज! आप जो वेद मन्त्रों को उच्चारण कर रहे है, यह वेदमन्त्र कहता है कि यज्ञमान का रथ बन करके द्यौ लोक को जाता है। प्रभु! मैं उस रथ को दृष्टिपात करना चाहता हूँ?

मेरे प्यारे! ऋषि मुनि अपने वेद मन्त्रों की ध्वनि की आभा में सन्दर्भ में मानो वह

निर्णय करा रहे थे, वेद मानो दर्शनों से दार्शनिक सिद्धान्तों से वह सिद्ध होता रहा था। परन्तु राम ने कहा नहीं, प्रभु! मैं उसको प्रत्यक्ष दृष्टिपात करना चाहता हूँ। मेरे प्यारे! याग शान्त हो गया, ऋषि मुनि चिन्तन में लग गये, कहते है बेटा! उसी समय महर्षि भारद्वाज अपने वाहन में विद्यमान हो करके उनके मानो देखो, वाहन में मुनिवरों! देखो, ब्रह्मचारी सुकेता, ब्रह्मचारिणी शबरी, मेरे प्यारे! देखो, उस आश्रम में आ गए, जहाँ यज्ञ हो रहा था। मानो देखो, राम ने महर्षि भारद्वाज को दृष्टिपात करके, उनके चरणों को स्पर्श किया और उन्होंने कहा आईए, भगवन! भारद्वाज मुनि बोले राम! तुम्हारा याग शान्त क्यों हो रहा है? उसने कहा प्रभु! एक वेदमन्त्र आ रहा है, और वह वेदमन्त्र कहता है कि यज्ञमान का रथ बन करके, द्यौ लोक को जाता है तो प्रभु! मैं उस द्यौ लोक वाले रथ को दृष्टिपात करना चाहता हूँ कि यज्ञशाला का रथ कैसे बनता है?

भगवान राम ने जब ऐसा कहा तो भारद्वाज मुनि बोले हे राम! तुम इन ब्रह्मवेत्ताओं का अपमान तो नहीं कर रहे हो? मेरे प्यारे! भगवान राम ने कहा प्रभु! मेरे में इतना सामर्थ्य कहां है, जो मैं ब्रह्मवेत्ताओं का अपमान कर सकूं, मैं तो इन सर्वत्र ब्रह्मवेत्ताओं का सेवक हूँ, और सेवा करना मेरा कर्तव्य है। मेरे प्यारे! देखो, जब राम ने यह कहा तो मुनिवरों! भारद्वाज मुनि ने ब्रह्मचारिणी शबरी को और मुनिवरों! देखो, ब्रह्मचारी सुकेता को दोनों से कहा जाओ, आश्रम में से नाना चित्रावलियों को लाओ।

द्यौ गामी चित्रों का अवलोकन

मेरे प्यारे! देखो, भारद्वाज मुनि महाराज उस काल में महान वैज्ञानिक थे, मेरे प्यारे! देखो, वे अपने वाहन में विद्यमान हो करके, मुनिवरों! देखो, वे कजली वनों में पहुंचे और भारद्वाज मुनि के आश्रम से बेटा! नाना प्रकार की चित्रावलियों को लाया गया, मेरे प्यारे! भगवान राम ने मानो उन चित्रावलियों को, अयोध्या में उस यज्ञशाला में स्थित कर दिया, जिसमें बेटा! शब्दों के साथ में, चित्र भी मुनिवरों!

देखो, गति करते थे और उसमें मानो देखो, शब्द के साथ में जो चित्र जाते थे वे उस मानो चित्रावली में बेटा! दृष्टिपात आते थे। तो मेरे प्यारे! भारद्वाज मुनि महाराज ने जब नाना चित्रावलियों को स्थित कर दिया, तो मेरे प्यारे! देखो, राम से कहा राम! तुम याग का प्रारम्भ करो। बेटा! जैसे याग का प्रारम्भ हुआ और यज्ञमान, होता गण जैसे स्वाहा कहते है, तो उनके चित्र और मुनिवरों! उनका रथ बन करके, जितने में वह यज्ञशाला थी, उसका रथ बन करके शब्दों के साथ में बेटा! वह रथ मानो द्यौ लोक को जाता हुआ दृष्टिपात आने लगा। नाना प्रकार की चित्रावलियां, नाना प्रकार के यन्त्र लगे हुए थे, उन यन्त्रों में बेटा! शब्द के साथ में मानो आकार जा रहा है, सूक्ष्म बन करके बेटा! द्यौ लोक में रमण कर रहा है। भारद्वाज मुनि ने कहा राम! यह देखो, तुम्हारें शब्द और तुम्हारी यज्ञशाला का रथ बन करके द्यौ लोक को जा रहा है।

मेरे प्यारे! राम बड़े प्रसन्न हुए और वैशम्पायन ऋषि महाराज, महान प्रसन्न हो रहे थे। क्योंकि उनका वेद का मन्त्र सिद्ध हो रहा था। वेद का मन्त्र जो कहता है वह यथार्थ कहता है। मैं वेदज्ञ ध्वनि को अपने में श्रवण कर रहा हूँ। मेरे प्यारे! मुझे स्मरण आता रहता है, भारद्वाज मुनि ने कहा हे राम! यह तो शब्दों का ही चित्र है, परन्तु मेरी यज्ञशाला में, मेरी विज्ञानशाला में ऐसे ऐसे यन्त्र है कि एक मानव के रक्त के बिन्दु से मानो जिस मानव का रक्त का बिन्दु हो, उस मानव का एक ही रक्त के बिन्दु से उस मानव का साक्षात्कार, उसका चित्र आ जाता है। मानो चाहे वह प्राणी संसार में है या नहीं है।

रक्त बिन्दु से पूर्वजों के चित्र

भारद्वाज मुनि ने कहा हे राम! एक समय देखो, शाण्डिल्य गोत्रीय ऋषि सोमकेतु मेरे द्वार पर आये, तो सोमकेतु ऋषि ने कहा कि मेरे जो छठे महापिता थे, मैं उनके दर्शन करना चाहता हूँ वैज्ञानिक मन्त्रों के द्वारा, उन्होंने कहा प्रणे कृताम् मुनिवरों! देखो, उनकी स्थली पर, उनका एक वस्त्र प्राप्त हो गया, उस एक वस्त्र

पर, एक रक्त का बिन्दु लगा हुआ था। मुनिवरों! देखो, जिस महापिता को समाप्त हुए दो सौ वर्ष हो गएं थे। मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने भारद्वाज मुनि से कहा तो बेटा! देखो, वह जो वस्त्र पर मानो एक रक्त का बिन्दु लगा हुआ था, उस एक रक्त के बिन्दु से मुनिवरों! देखो, जो चौथे महापिता थे, बेटा! उनका साक्षात्कार उन चित्रावलियों में बेटा! दर्शन होने लगा।

तो विचार विनिमय क्या, विज्ञान मानव के मस्तिष्क में, विज्ञान ऋषि मुनियों के मस्तिष्क में, परम्परागतों से बेटा! नृत्त करता रहा है। एक एक रक्त के बिन्दु से, मानव का चित्र आ जाता है, इससे यह सिद्ध होता है कि माता के गर्भस्थल में मानो एक बिन्दु से ही मानव के शरीर का निर्माण हो जाता है। मेरे प्यारे! देखो, वहीं बिन्दु है जो शून्यता में रह करके निर्माण हो करके, व्यापक बन जाता है। मेरे प्यारे! वहीं आभा में रमण करने लगता है। तो विचार विनिमय, क्या मुनिवरों! मैं विशेष चर्चाएं तुम्हें प्रगट करने नहीं आया हूँ, विचार यह देने के लिए आया हूँ कि राम का याग चल रहा है, राम अपनी यज्ञशाला में याग कर रहे है और चित्रों का दर्शन कर रहे है, मेरे प्यारे! चित्रावलियों में दर्शन हो रहा है, दिग्दर्शन हो रहा है, महानता को मानव प्राप्त हो रहा है। मेरे प्यारे! देखो, यज्ञमान का रथ बन करके, द्यौ लोक में गति कर रहा है और द्यौ लोकों को मानो एक एक स्वाहा जो शब्द है, वह मेरे प्यारे! अशुद्ध परमाणुओं को निगलता चला जाता है और द्यौ लोकों को प्राप्त होता है।

तो मेरे प्यारे! भगवान राम का वह याग मुझे स्मरण है बेटा! छहमाह तक वह याग चलता रहा। मानो चित्रावलियों में दर्शन होते रहे। बेटा! महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज के यहाँ, यह वही ब्रह्मचारिणी शबरी थी, जो बेटा! देखो, भगवान राम जब अयोध्या से संग्राम करने के लिए, जब वह लंका में पहुंचे तो यही शबरी थी, जिन्होंने भारद्वाज मुनि महाराज का बेटा! देखो, जो अस्त्रों शस्त्रों का, परमाणु शस्त्रों का जो जितना कोष था, वह मुनिवरों! देखो, शबरी ने राम को प्रदान कर दिया

था और यह कहा था रामं ब्रह्मणो व्रतो सुति देवाः मेरे प्यारे! भारद्वाज मुनि महाराजा, उस समय अणु, परमाणु मानो देखो, उनके ऊपर नाना प्रकार का विश्लेषण करते रहते थे, और अनुसन्धान में गति मानो विज्ञान में ऐसी गति उनकी थी, बेटा! लोकों में, यानो में, विद्यमान हो करके वह मानो लोकों का गमन करते रहते थे।

तो आओ, मेरे प्यारे! मैं राम के उस याग में जाना चाहता हूँ भगवान राम ने बेटा! उस याग का निर्माण किया, याग की आभा, बेटा! देखो, छह माह तक चलती रही, छह माह के पश्चात याग सम्पन्न हुआ, सम्पन्न होने के पश्चात मुनिवरों! देखो, भगवान राम ने, नानाएं मुद्रा दे करके गऊ इत्यादियों को दे करके मुनिवरों! देखो, ब्राह्मण समाज को वहाँ से, मेरे प्यारे! देखो, उपरामता को प्राप्त कराया। सर्वत्र अपने अपने आश्रम को उन्होंने गमन किया। मेरे प्यारे! देखो, जहाँ विज्ञान अपरोक्ष रूप में रहता है, वहाँ प्रत्यक्ष रूप में भी बेटा! मानव समाज अपने में गति करता रहा है।

राजा व माता का कर्तव्य

तो विचार विनिमय क्या, आज का हमारा यह वेदमन्त्र क्या कहता है, कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, शुभ कार्यो में रत्त हो जाए, क्योंकि मेरी प्यारी माता कितना प्रिय याग करती है, जब बेटा! माता के गर्भ स्थल में शिशु होता है तो माता यह कहती है कतमोऽसि सम्भविता मानो हे बालक! तू जो मेरे गर्भ स्थल में आया है, हे आत्मा! तू कौन है? मेरे प्यारे! माता अपने गर्भ स्थल की आत्मा से वार्ता प्रगट करती रहती है, मुझे स्मरण है बेटा! देखो, मल्दालसा का जीवन क्या, माता कौशल्या का जीवन और भी नाना मेरी पुत्रियों के जीवन मुझे स्मरण आते रहते है। परन्तु यह चर्चाएं तो बेटा! मैं कल प्रगट करूंगा, आज का विचार हमारा क्या कह रहा है, कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, अपने मानवीय समाज को ऊँचा बनाने के लिए हम सदैव तत्पर रहे। क्योंकि राष्ट्र का जो निर्माण है भगवान राम का कथन है कि देखो, ब्रह्मणो वेद का मन्त्र भी

कहता है, राष्ट्र का जो निर्माण होता है वह केवल समाज को कर्तव्यवाद में लाने के लिए होता है। और मुनिवरों! वेद का मन्त्र तो यह कहता है कि जो माता, अपने गर्भ से जन्म लेने वाले पुत्र को यदि महानता नहीं दे सकती और राजा समाज को चरित्र नहीं दे सकता तो मानो वह माता, राजा दोनों न होने के तुल्य होते है। मेरे प्यारे! देखो, माता को तो अपने पुत्र को महानता देनी चाहिए मानो यौगिकता देनी चाहिए और राजा को, प्रजा को कर्तव्यवाद में लाने के लिए बेटा! राष्ट्र का निर्माण होता है। भगवान राम ने यह वाक कहा है।

देव का महान जगत

तो बेटा! आज मैं विशेष चर्चाएं तुम्हें प्रगट करने नहीं आया हूँ विचार यह देने के लिए आया हूँ कि प्रत्येक मानव, प्रत्येक देव कन्याएं, प्रत्येक मेरा प्यारा ऋषि मण्डल, बेटा! प्रत्येक मानव को अपने जीवन को ऊँचा बनाना चाहिए और वैज्ञानिक धाराओं से अपने गृह में सात्त्विक वातावरण बना करके, याग करना चाहिए, सुगन्धि होनी चाहिए, एक मानव, मानव दूसरे लोकान्तर से सन्तुष्ट रहे, यही बेटा! देखो, आज के वाक उच्चारण करने का अभिप्राय है। आज का हमारा यह वाक क्या कह रहा है बेटा! यह जो संसार है यह मानो देखो, मण्डल गतियाँ कर रहे है, नाना लोक लोकान्तर गतियाँ कर रहे है मानो देखो, उस गति में परस्पर विवाद नहीं रहता, वह एक धारा में, एक सीमा में एक नक्षत्रों में, नाना नक्षत्र बेटा! गति करते है। कैसा मेरे प्यारे! प्रभु का, कैसा मेरे प्यारे! देव का, यह महान जगत है वैज्ञानिक तन्तुओं से गुथा हुआ, मानव के प्राणं ब्रह्मणे, एक एक श्वांस के साथ में, परमाणु गति कर रहा है और वह गति करता हुआ, वह चित्र भी चला जा रहा है। वह मानव के आकार का चित्र बन रहा है। अन्तरिक्ष में बेटा! गतियाँ हो रही है मानो आभा में यह मानव गति कर रहा है।

आओ, मेरे प्यारे! मैं विशेष चर्चाओं में तुम्हें ले जाना नहीं चाहता हूँ, आज के वाक उच्चारण करने का अभिप्राय यह कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते

हुए, देव की महिमा का गुणगान गाते हुए, इस संसार सागर से पार हो जाए, यह है बेटा! आज का वाक्, अब मुझे समय मिलेगा, मैं तुम्हें शेष चर्चाएं कल प्रगट करूंगा, आज का वाक समाप्त, अब वेदों का पठन पाठन। ओ३म् मधुमा देवाः गृहणान्त्वा मानं ब्रह्म गताः। ओ३म् सर्वाणि भद्राः मां धेनुः रथा आप्यां लोकाः। ओ३म् शन्नावताः मां धेनु रथं ब्रह्माः। ओ३म् सर्वश्चारी गतं मा वसु। ओ३म् गता सर्वं मया।

2.धर्म और मानवता-820324

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व का भान्ति, कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेद मन्त्रों का पठन पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस मेरे देव की महिमा का गुणगान गाया जाता है जो चेतना व उस प्रकृतिवाद दोनों की आभा में रमण करने वाला है, क्योंकि वह स्त्रीलिंग भी है और पुरुष लिंग भी कहलाया जाता है। तो मेरे प्यारे! वह जो मेरा प्रभु है, उसको वेद आनन्दमयी कहता है। क्योंकि प्रत्येक वेदमन्त्र मानो उसकी गाथा गा रहा है, जैसे मानो यह पृथ्वी है, यह ब्रह्माण्ड की गाथा गा रही है। जैसे माता का पुत्र, माता की गाथा गा रहा है इसी प्रकार प्रत्येक वेद मन्त्र, उस ब्रह्म का गान गा रहा है। ब्रह्म की आभा में रमण कर रहा है, क्योंकि उस वेदमन्त्र में जितना ज्ञान और विज्ञान हमें दृष्टिपात आता है मानो वह ब्रह्मसूत्र में पिरोया हुआ है। प्रत्येक मानव का शब्द, आभा मानो वह ब्रह्म के गर्भस्थल में गति कर रही है। कोई भी मानव हो इस संसार में, परन्तु वह ब्रह्म के गर्भस्थल में अपना क्रियाकलाप कर रहा है। चाहे वह पृथ्वी मण्डल का रहने वाला प्राणी हो, चाहे वह मङ्गल में वास करने वाला हो, परन्तु जितना भी यह ब्रह्माण्ड है, जितनी भी निहारिका है परन्तु जितना भी यह क्रियाकलाप हो रहा है, वह सर्वत्र, उस माता वसुन्धरा के गर्भ में हो रहा है क्योंकि वेद उसे माता वसुन्धरा से वर्णन कर रहा हैं।

पृथ्वी का वसुन्धरा रूप

हमारे वैदिक साहित्य में, वसुन्धरा के नाना पर्यायवाची शब्द माने गएं है, परन्तु वसुन्धरा उसे कहते है, जिसके गर्भस्थल में हम वास करते है अथवा वसते है। माता के गर्भस्थल में मानव, मानो जीवन पा रहा है, माता वसुन्धरा उसे धारण कर रही है, निर्माणवेत्ता निर्माण कर रहा है परन्तु जब वह मानव इस माता के गर्भस्थल

से पृथक होता है तो इस पृथ्वी माता के आंगन में आ जाता है, अथवा इसकी गोद में आ जाता है और यह नाना प्रकार के खनिज दे करके और खाद्य पदार्थों को दे करके मानव को सजातीय बनाना देती है। मानव बेटा! माता वसुन्धरा की गोद में, उसके आंचल में नाना प्रकार की आभा को प्राप्त कर रहा है। मेरे प्यारे! उस माता के ही गर्भ स्थल में, मानव राष्ट्र का निर्माण करता रहता है। कोई धिराज बना हुआ है तो मानो कोई प्रजा बनी हुई है। परन्तु सब वह माता वसुन्धरा के गर्भ में, यह समाज बनता रहता है, विकृत्त होता रहता है। मेरे प्यारे! यह माता वसुन्धरा है। मुनिवरों! देखो, जब वैज्ञानिक जन, इस पृथ्वी के गर्भ में प्रवेश करते है, तो बेटा! नाना प्रकार के खनिज को प्राप्त करने लगते है।

बेटा! स्मरण आता रहता है, भारद्वाज मुनि के यहाँ बेटा! जब बाल्यकाल में भगवान राम थे, तो मुनिवरों! देखो, विश्वामित्र के सहित भारद्वाज मुनि के आश्रम में पहुँचे और भारद्वाज मुनि के आश्रम में बेटा! छह वर्षों तक रह करके, भगवान राम ने बेटा! नाना प्रकार के यन्त्रों की शिक्षा को प्राप्त किया। कहीं इन्होंने वरुणास्त्र एक यन्त्र का निर्माण किया था बेटा! जिस यन्त्र से माता वसुन्धरा के गर्भ में, कितनी दूरी पर कौनसा खनिज है, वह खनिज बेटा! देखो, यन्त्र में दृष्टिपात आता था। मेरे प्यारे! कितनी दूरी पर स्वर्ण है, कितनी दूरी पर मुनिवरों! देखो, सूर्य, इस पृथ्वी माता को तेज दे करके, बेटा! जल को विस्तृत बना रहा है, तो मेरे प्यारे! विचार विनिमय क्या मानो देखो, भगवान राम ने भी, इस माता वसुन्धरा के गर्भ को जाना।

अहिल्या का उद्धार

तुम्हें प्रतीत होगा, जब राम वन को जाने लगे तो बेटा! देखो, निषाधां ब्रव्हे व्रणाम् विश्वामित्र के साथ वनों में गमन कर रहे थे। तो मुनिवरों! देखो, उन्होंने निषाद से, एक निषाद मानो देखो, भूमि का विशेषज्ञ था उससे कहा कि यह जो पृथ्वी है, इस पृथ्वी को जहाँ वसुन्धरा कहते है वहाँ इसको अहिल्या भी कहते है। उन्होंने कहा अहिल्या का उद्धार होना चाहिए, बेटा! उद्धार क्या, बेटा! यह जो पृथ्वी है, वसुन्धरा

है, बेटा! देखो, जो वैसे ही पड़ी हुई है, और उसमें अन्न उत्पन्न हो सकता हो, तो मुनिवरों! ऐसी भूमि का नाम वसुन्धरा भी है और अहिल्या भी माना गया है तो जहाँ जहाँ से राम अपने यन्त्रों से अपने वैज्ञानिक तथ्यों से, इस पृथ्वी के ऊपर नाना प्रकार का खाद्य पदार्थ उत्पन्न होने लगा। तो मेरे प्यारे! देखो, भगवान राम अपने यन्त्रों से भारद्वाज मुनि के यहाँ नाना प्रकार के यन्त्र उन्होंने जानते हुए, इस माता वसुन्धरा के गर्भ को जानने का प्रयास किया। तो मेरे प्यारे! जहाँ यह पृथ्वी माता वसुन्धरा कहलाती है, माता के गर्भ से पृथक होता हुआ मानव, बेटा! पृथ्वी के गर्भ में प्रवेश करता है और यहाँ अपने गृहों का निर्माण करता है, इससे वसता रहता है। तो इसलिए पृथ्वी को वेद ने वसुन्धरा कहा है।

प्रभु का जगत

मेरे प्यारे! जहाँ पृथ्वी को हम वसुन्धरा कहते है वहाँ वसुन्धरा नाम मेरे प्यारे! प्रभु को भी कहा जाता है। बेटा! उसके आंचल में, यह संसार बस रहा है। मानो यहाँ एक मानव नहीं बस रहा, बेटा! नाना प्रकार का यह जगत, यह ब्रह्माण्ड उसी के गर्भ में विद्यमान है। उसी के आंचल में है, उसी में यह बस रहा है, उसी में गति कर रहा है। पृथ्वी अपनी आभा में गति कर रही है, सूर्य अपनी आभा में गति कर रहा है, मङ्गल अपनी आभा में गति कर रहा है, चन्द्रमा अपनी आभा में गति कर रहा है। मेरे प्यारे! यह गतियां, एक नहीं, नाना प्रकार की गतियाँ हो रही है। मेरे प्यारे! देखो, नाना निहारिका गति कर रही है, एक निहारिका नहीं, नाना निहारिका बेटा! इसमें गति कर रही है। मानो यह वस रही है, अपनी आभा में आभायित हो रही है तो बेटा! यह मानो प्रभु का गर्भाशय कहलाता है। यह प्रभु का जगत कहलाता है। इस प्रभु के गर्भ में, इस माता वसुन्धरा के आंचल में बेटा! कैसे कैसे मण्डल अपनी गतियाँ कर रहे है। मानो कहीं ध्रुव गति कर रहा है, कहीं वशिष्ठ मण्डल गति कर रहा है कहीं अरूणधति मण्डल अपनी आभा में गति कर रहा है। मेरे प्यारे! मुझे स्मरण है, नाना प्रकार के वैज्ञानिक, बेटा! परम्परागतों से ही, नाना

प्रकार की गाथाएं, नाना प्रकार की आभा में रमण कर रहे है। बेटा! देखो, इस माता वसुन्धरा के गर्भ में बेटा! एक योगी है, वह योगेश्वर बन करके बेटा! सूर्य की किरणों के साथ, सूर्य मण्डल में गति करता है। मेरे प्यारे! एक वैज्ञानिक है, यन्त्रों का निर्माण करके मानो देखो, उसके गर्भ में, प्रभु के गर्भ में बेटा! उड़ान उड़ रहा है। कैसी उड़ान उड़ रहा मुझे बेटा! स्मरण आता रहता है महात्मा ध्रुव एक समय देव.....।

भारद्वाज मुनि से कुम्भकरण ने यह कहा कि महाराज! जैसे मानो इसका सूत्र यह माना गया है तो मानो हम यह जानना चाहते है कि यह जो परमाणुवाद है जब परमाणुवाद ही इसका सूत्र, तो परमाणुवाद का सूत्र क्या है? मेरे प्यारे! उन्होंने कहा कि परमाणुवाद का सूत्र गति है, उन्होंने कहा गति का सूत्र क्या है? तो मुनिवरों! भारद्वाज मुनि ने कहा कि गति का सूत्र चेतना है और उस चेतना का नाम ही परमपिता परमात्मा माना गया है। तो विचार विनिमय क्या, मेरे प्यारे! यह सिद्ध हुआ, कि हम उस माता के गर्भस्थल में विद्यमान है जहाँ मुनिवरों! देखो, जो संसार का सूत्र बना हुआ है जैसे प्राणो ब्रह्मणे कृता जैसे प्राण एक सूत्र कहलाता है, प्रत्येक प्राणियों में प्राण गति कर रहा है और वह प्राण ही सूत्र कहलाता है, प्राण से ही बना हुआ मनस्तव माना गया है, उसी से मनस्तव, प्राणत्व आत्मा भी उसी के आश्रित रहता है। मानो देखो, कहीं आत्मा के आश्रित प्राण रहता है कहीं प्राण के आश्रित आत्मा रहता है।

लोकों का सूत्र

तो मेरे प्यारे! यह मानो एक सूत्र कहलाता है, यह ब्रह्माण्ड.......वह दोनों विचार रहे थे मानो यन्त्रों को दृष्टिपात कर रहे थे, वह अपनी विज्ञानशाला में यन्त्रों से, कुछ लोकों की गणना कर रहे थे। मेरे प्यारे! देखो, वह जब गणना करने लगे, मानो यन्त्रों में चित्र आने लगे, तो बेटा! देखो, एक अरून्धति मण्डल है एक मानो देखो, वशिष्ठ मण्डल कहलाता है। दोनों मण्डलों के अन्तर्गत, जब उनकी मुनिवरों! देखो,

यन्त्र की छाया पहुँची, तो मुनिवरों! देखो, एक ही मण्डल के मानो आंगन में, नाना मण्डल गति कर रहे थे। उनके अस्वतों में, क्योंकि एक वशिष्ठ है और एक इतना विशाल वशिष्ठ मण्डल कहलाता है, जिसमें बावन लाख मुनिवरों! देखो, मङ्गल उसके अन्तर्गत गति करते रहते है। जब उन्होंने बेटा! यह वशिष्ठ मण्डल के आंगन में यह दृष्टिपात किया तो बेटा! ऋषि आश्चर्य चकित हो गया और मुनिवरों! देखो, उन्होंने अपने यन्त्रों में, इस ब्रह्माण्ड के दर्शन करने लगे। तो विचारा गया, कि वह जो गतियाँ कर रहे थे, उनका सूत्र क्या है? तो बेटा! वेद का ऋषि कहता है प्राणं ब्रह्मा कृतो देवाः मानो वह जो प्राण है सर्वत्र लोक लोकान्तरों का सूत्र बना है। मेरे प्यारे! अपने अपने आंगन में, गतियाँ हो रही है।

मानव का कर्तव्य

तो विचार विनिमय क्या मुनिवरों! अप्रतम देवाः ऐसा वेद का मन्त्र कहता है कि मानव मुनिवरों! देखो, मानव का शब्द गति करता रहता है, मानव का एक एक शब्द अन्तरिक्ष में गति करता रहता है, द्यौ लोकों में गति करता रहता है तो इसीलिए मेरे प्यारे! हमारे यहाँ ऋषि मुनियों ने कहा है कि हे मानव! तू इस संसार में, अपने धर्म अपनी मानवता को जानने का प्रयास कर जैसे लोक लोकान्तर अपने धर्म में आरूढ़ रहते है जैसे सूर्य अपने धर्म में आरूढ़ रहता है, इसी प्रकार तू भी अपने धर्म की आभा को जान। मेरे प्यारे! यह धर्म क्या है? प्रत्येक मानव धर्म की मीमांसा करता रहता है प्रत्येक मेरी प्यारी पुत्री मानो धर्म को जानने की उत्सुकता में लगे हुए है। परन्तु विचार आता है कि यह धर्म क्या है? मेरे प्यारे! राष्ट्र का निर्माण भी होता है तो धर्म की रक्षा करने के लिए होता है परन्तु एक माता बनी हुई है पुत्र की, वह माता क्यों है? क्योंकि वह मर्यादा और धर्म की रक्षा करने वाली बने क्योंकि मैं अपने पुत्र को धार्मिक बनाना चाहती हूँ। मानो ओजस्वी बनाना चाहती हूँ। तो यह धर्म क्या है? इसके ऊपर बेटा! आज सूक्ष्मसी टिप्पणी मैंने कई काल में भी की है आज भी मैं करने वाला हूँ।

धर्म की मीमांसा

बेटा! धर्म कहते है जो मानव की इन्द्रियों में समाहित रहता है। मेरे प्यारे! यह जो मानव का शरीर है, यह एक ब्रह्माण्ड का सूक्ष्मसा एक चित्र कहलाता है। मानो देखो, धर्म क्या है? मुनिवरों! देखो, धर्म उसे कहते है जो अपने अपने आंगन में, अपने कर्तव्य का पालन कर रहा है, उसी का नाम धर्म कहलाता है। जैसे बेटा! मानव के नेत्र है, वे सदैव सुदृष्टिपात कर रहे है, सुदृष्टि ही दृष्टिपात कर रहे है। तो मेरे प्यारे! दृष्टिपात करना ही नेत्रों का धर्म कहलाता है। बेटा! श्रोत्र है, वह दर्शनों की भाषा, दर्शनों के आभामयी शब्दों को श्रवण कर रहे है। मानो श्रवण करते हुए उनमें अशुद्धवाद नहीं जाता, शब्द ग्रहण करना यह श्रोत्रों का कर्तव्य है। मुनिवरों! देखो, मानो श्रोत्रों का धर्म कहलाता है। एक मानव वाणी उच्चारण कर रहा है, शब्द आ रहा है, रसों को ले रहा है, मेरे प्यारे! देखो, वाणी का जो रस है उसमें सात्विकवाद हो, मानववाद हो, मुनिवरों! देखो, वही वाणी का धर्म है। जो शब्द उच्चारण करने वाली है। मेरे प्यारे! त्वचा है नाना प्रकार के प्रीतियों में रमण करने वाला मानो प्रीति ही उसका धर्म है।

तो मेरे प्यारे! जो इन्द्रियों में समाहित होने वाला, मानो जो सात्त्विक धर्म है, उसका नाम बेटा! धर्म कहा जाता है। प्रत्येक मानव धर्म को विचारता रहता है, परन्तु **व्यापकवाद का नाम धर्म कहलाता है। जितना मानव व्यापकवाद में रमण करता है, व्यापकता से दृष्टिपात करता है मानो जैसे एक ब्रह्मचारी, ब्रह्मचारिणी के दर्शन कर रहा है। परन्तु वह ब्रह्मचारी कहता है, यह ब्रह्मचारिणी कितनी प्रिय और सुन्दर है, परन्तु यदि इसके लेपन, उसकी सौन्दर्यता पर निर्माणवेत्ता के द्वारा उसकी दृष्टि चली जाती है, मानो उसका जो लेपन है, निर्माण करने वाला प्रभु है और वह व्यापक है तो बेटा! देखो, धर्म बन जाता है, और यदि उसमें सङ्कीर्णता आ गई है उसमें अपनाने की कुदृष्टि बन गई है तो वही बेटा! पाप का मूल बन करके अधर्म बन जाता है।**

तो विचार विनिमय क्या, व्यापकता का नाम धर्म कहलाता है और सङ्कीर्णता का नाम स्वार्थ आ जाता है और स्वार्थपरता ही मुनिवरों! देखो, अमूल्य मानो देखो, वह पाप का मूलक बन जाता है। विचार विनिमय क्या मुनिवरों! देखो, जो अतिस्वार्थता, स्वार्थपरता आ जाती है, तो वही मेरे प्यारे! देखो, अशुद्ध बन जाती है। तो विचार विनिमय क्या, एक योगेश्वर है मानो वह यौगिक साधना में रमण कर रहा है, वह इन्द्रियों के ऊपर अध्ययन कर रहा है इन्द्रियों के ज्ञान और विज्ञान के ऊपर, वह अपना अधिपथ्य बना रहा है। तो मुनिवरों! देखो, वह उस धर्म और मानवता की आभा में रमण कर रहा है।

माता का धर्म

आओ, मेरे प्यारे! मैं विशेष चर्चा प्रगट करना नहीं चाहता हूँ, विचार विनिमय क्या, मेरी प्यारी माता के गर्भ स्थल में, एक शिशु पनप रहा है माता मानो देखो, अपने गर्भाशय को पनपा रही है। मानो नाना प्रकार की औषधियों को पान करा रही है। परन्तु देखो, वह यह चाहती है कि मेरा पुत्र राष्ट्र का नायक बनें। मेरा पुत्र ब्रह्मवेत्ता बने, मेरा पुत्र मानो देखो, समाज को विचित्र बनाने वाला बने, तो वह माता का एक धर्म बन जाता है। वह माता अपने कर्तव्य का पालन कर रही है, मानो नक्षत्रों की छाया में, अपने जीवन को पनपा रही है मानो वह उसका धर्म और मानवता कहलाती है।

माता मल्दालसा की शिक्षा

आओ, मेरे प्यारे! मैं इस क्षेत्र में, विशेष चर्चाएं प्रगट करना नहीं चाहता हूँ विचार विनिमय क्या, आज मैं तुम्हें यह वाक इसलिए प्रगट कर रहा हूँ क्योंकि संसार अपनी अपनी आभा में गति कर रहा है। प्रत्येक मानव जो अपने कर्तव्य का पालन करता है, वह कहीं भी हो, परन्तु वह उसका धर्म बनता रहता है, वह उसकी विचारधारा बनती रहती है। मानो उन्हीं विचारधारा में धर्म और मानवीयता ओत प्रोत हो जाती है, वह बेटा! देखो, अपनी आभा में गति करता रहता है। मुझे स्मरण

आता रहता है माता मल्दालसा थी। परन्तु देखो, माता मल्दालसा के मन में एक वाक आया कि मैं अपने गर्भस्थल से महान पुत्र को जन्म देना चाहती हूँ, तो माता मल्दालसा के गर्भ में जब शिशु प्रवेश होता तो माता कहा करती आत्मा निरब्रणे देवाः **हे आत्मा! तू आत्मा है, मेरे गर्भ में प्रवेश हो गई है मानो देखो, वह विचारती रहती और दर्शनों की भाषा में देखो, शब्द उच्चारण करती रहती थी, शुद्धोऽसि, बुद्धोऽसि, निरंजनोऽसि हे आत्मा! तू बुद्ध है, हे आत्मा! तू शुद्ध है, हे आत्मा! तू निरञ्जन है, किसी काल में तेरी मृत्यु भी नहीं होती।**

आत्मा का मौलिक गुण

तो मेरे प्यारे! माता यह शिक्षा देती रहती थी, वह पांच वर्ष का ब्रह्मचारी बेटा! देखो, ब्रह्मवेत्ता बन गया, हे माता! तू वास्तव में वसुन्धरा बन करके, जब तू अपने पुत्र को मानो ब्रह्मवेत्ता बनाना चाहती है, तो ब्रह्मवेत्ता बन जाता है। राष्ट्रीय बनाना चाहती है तो राष्ट्रीय बन जाता है। मेरे प्यारे! देखो, उतना ज्ञान और तप मानव के समीप होना चाहिए। वह अपने कर्तव्य का पालन कर रही है और वह उसका धर्म है।

मेरे प्यारे! धर्म की मीमांसा करता हुआ, वेद का मन्त्र कहता है कि मानव की अन्तरात्मा में नाना प्रकार के विचार आते रहते है और वह जो आत्मिक विचार होता है जो शुद्ध विचार होता है वह एकान्त स्थली में मानव को प्राप्त होता है बेटा! देखो, उन तरंगों का नाम धर्म कहलाता है। धर्म आत्मा का मौलिक गुण कहलाया जाता है।

आओ, मेरे प्यारे! मैं तुम्हें विशेष चर्चाएं देने नहीं आया हूँ, विचार विनिमय क्या कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, देव की महिमा का गुणगान गाते हुए, हम ज्ञान और विज्ञान को उस परमात्मा के, उस माता वसुन्धरा के गर्भ में, बेटा! हम विद्यमान हो करके और मुनिवरों! देखो, धर्म और मानवता को ऊँचा बनाना चाहते है। क्योंकि वह जो प्रभु का, मेरे प्यारे! देखो, प्रभु, माता कहलाती

है, वसुन्धरा कहलाती है, माता वसुन्धरा कहलाती है, पृथ्वी वसुन्धरा कहलाती है, जिसके गर्भ में बेटा! नाना प्रकार के खाद्य और खनिज पदार्थों से मानो अपने जीवन को ऊँचा बनाता है। राजा, राष्ट्र नायक बनता है। मेरे पुत्रों! देखो, जब एक वैज्ञानिक माता के गर्भस्थल में विद्यमान हो करके, लोकों की गणना करता हुआ मुनिवरों! देखो, नाना प्रकार के गन्धर्व लोकों की गणना करता है गन्धर्व लोकों को वह दृष्टिपात करता रहता है।

गन्धर्व मण्डल

मैंने तुम्हें बहुत पुरातन काल में वर्णन करते हुए कहा था, कि प्रभु का विज्ञान इतना विचित्र है, इतना महान है कि उसके विज्ञान की कोई सीमा नहीं है बेटा! देखो, एक समय भारद्वाज मुनि महाराज, रोहिणीकेतु, ब्रह्मचारिणी शबरी, ब्रह्मचारी कवन्धी, ब्रह्मचारी गौरपुत्र केतु महाराज मेरे प्यारे! सर्व विद्यमान हो करके, एक समय मुनिवरों! देखो, यन्त्रों में, यन्त्रों की उड़ान उड़ने लगे, कि प्रभु के राष्ट्र में कितने, एक गन्धर्व, कितने मण्डलों का बनता है। तो बेटा! देखो, भारद्वाज ने अपने यन्त्रों में मेरे प्यारे! एक आकाशगंगा का गणित किया, उस आकाश गंगा के सौर मण्डलों को गणित किया और सौर मण्डलों को मानो देखो, बावन सौर मण्डलों का मुनिवरों! देखो, एक मानो देखो, गन्धर्व मण्डल कहलाता है। बेटा! एक सौर मण्डल क्या है, एक सौर मण्डल में तीन अरब तो सूर्य होते हैं और मुनिवरों! एक सौर मण्डल में मानो देखो, लगभग बावन अरब मुनिवरों! देखो, बृहस्पति होते है और मुनिवरों! देखा, बावन करोड़ के लगभग ध्रुव होते है और मुनिवरों! देखो, चालीस अरब के लगभग कृणि असुतां देवत लोक कहलाते है। बेटा! देखो, ऐसे ऐसे बावन सौर मण्डलों का बेटा! एक मानो वह गन्धर्व मण्डल बना करता है।

तो मेरे प्यारे! प्रभु का, यह जो मैं प्रभु के गर्भ की चर्चा कर रहा हूँ, माता वसुन्धरा के गर्भ में बेटा! ये कितने मण्डल बस रहे है और एक दूसरा मण्डल बेटा! एक दूसरे की सहायता में लगा हुआ है। एक दूसरे में ओत प्रोत हो रहा है जैसे बेटा!

एक मानो वंश है, पशु है एक दूसरे में ओत प्रोत होते हुए, यह जगत, यह आभा दृष्टिपात होती है। जैसे बेटा! देखो, माता, पुत्र की सहायता कर रही है, पिता, पत्नी की सहायता कर रहा है, मानो देखो, पुत्र भी प्रबल हो करके माता की सहायता कर रहा है और मुनिवरों! वह उस अपने वंश को ऊँचा बनाने में लगा हुआ है, नाना पशु है एक दूसरे को बेटा! कहीं श्वांस के द्वारा, कहीं प्राणत्व के द्वारा, कहीं परिश्रम के द्वारा बेटा! यह जगत एक दूसरे की सहायता कर रहा है बेटा! मेरे प्यारे! यह कैसा मेरे प्यारे! प्रभु का जगत है कैसा सजातीय है, कितना उज्ज्वलता में बेटा! यह ब्रह्माण्ड गति कर रहा, बेटा! कैसे लोक अपनी अपनी आभा में गति कर रहे है, मेरे प्यारे! मुझे जब यह विज्ञान स्मरण आता है, तो हृदय गद् गद् हो जाता है और मैं यह कहा करता हूँ कि सर्वत्र उस प्रभु को, अपने से दूरी न करो जो संसार का नियन्ता है, निर्माण करने वाला है, निर्माण कर रहा है। वह मेरे प्यारे! प्रभु से दूरी नहीं हो सकते।

विचार विनिमय क्या, आज का हमारा वाक यह क्या कह रहा है, कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, देव की महिमा का गुणगान गाते हुए, हम उस माता वसुन्धरा की याचना करते चले जाए, हे माता! तुझे वेद वसुन्धरा कहता है, एक एक वेदमन्त्र बेटा! देखो, प्रभु की गाथा गा रहा है। मानो माता वसुन्धरा की गाथा गा रहा है, मेरे प्यारे! देखो, कैसी वसुन्धरा है, बेटा! प्रभु की सूक्ष्म वसुन्धरा का नाम पृथ्वी है, पृथ्वी की सूक्ष्म वसुन्धरा का नाम माता है, वसुन्धरा का अभिप्राय केवल इतना जिसमें बेटा! हम सब वशीभूत हो रहे है। सब बस रहे है, बसते रहते है मानो देखो, गृहों का निर्माण करते रहते है। निर्माणवेत्ता, निर्माण करता है परन्तु सब वसुन्धराओं का मूलक मानो चैतन्य देव कहलाता है। इसीलिए बेटा! उसको माता वसुन्धरा कहते है। हम माता वसुन्धरा के गर्भ में, सब विद्यमान है इसीलिए बेटा! हमें प्रभु की उपासना करनी चाहिए। वह माता की शरण में जाना चाहिए, जो माता मानो देखो, संसार को जन्म देती है। लोकों को जन्म देती है, लोक

गतियाँ कर रहे है मानो ब्रह्माण्ड में एक लोक दूसरे लोक को गति दे रहा है।

ब्रह्माण्ड का सूत्र

मेरे प्यारे! देखो, सूर्य द्यौ से सहायता लेता है और द्यौ से सहायता ले करके अपने प्रकाश से नाना पृथ्वियों को गति दे रहा है बेटा! वह द्यौ कैसी माता है? मानो देखो, उसी से सहायता ले करके मेरे प्यारे! देखो, बृहस्पति नाना सूर्यों को गति दे रहा है। कैसा ब्रह्माण्ड है? बेटा! मानो नाना ध्रुव है, जो नाना कृत्तियों में बेटा! रमण करते है, गति दे रहे है, आभा में गतियाँ हो रही है। तो विचार विनिमय क्या बेटा! वह माता एक दूसरे में पिरोई हुई है, एक दूसरे में पिरोया हुआ जगत, एक दूसरे में पिरोया हुआ विचार, एक दूसरे में पिरोई हुई वाणी, एक दूसरे में पिरोया हुआ ब्रह्माण्ड देखो, एक दूसरे में पिरोया हुआ है, कैसी माला बनी हुई है, यह कैसी माला है, मानो जो एक ही सूत्र में पिरोई हुई है बेटा! यह ब्रह्माण्ड एक प्रकार की माला है और प्रभु, मुनिवरों! देखो, उसका सूत्र बना हुआ है।

आओ, मेरे प्यारे! आज का विचार क्या, हम बेटा! यह विचार कर रहे है कि हम अपने में देखो, सूक्ष्मता में जा करके, उस प्रभु को जानने लगे और अपने को उसमें पिरोने लगे बेटा! देखो, एक मानव दूसरे मानव का मनका बना हुआ है। सूत्र में पिरोया हुआ है, गतियों में रमण कर रहा है गतियों में गति हो ही है। मेरे प्यारे! उस प्रभु की आभा में, यह महान ब्रह्माण्ड अपनी अपनी ओजस्वी वाणी में गाथा गा रहा है। जैसे बेटा! प्रत्येक वेद का मन्त्र, प्रभु की गाथा गा रहा है यह पृथ्वी ब्रह्माण्ड की गाथा गा रही है, पुत्र माता की गाथा गा रहा है मेरे प्यारे! देखो, कर्म इस ब्रह्माण्ड की गाथा गा रहा है।

यह है बेटा! आज का वाक्, अब मुझे समय मिलेगा मैं बेटा! तुम्हें शेष चर्चाएं कल प्रगट करूंगा आज के वाक उच्चारण करने का अभिप्राय क्या, मुनिवरों! हम माता वसुन्धरा की याचना करते चले जाए, यह माता वसुन्धरा, हमारे जीवन में मानो देखो, वह माता है। हम उसमें बसे है, बसते रहते है मुनिवरों! देखो, हम प्रभु की

उपासना करते हुए, वसुन्धरा स्वीकार करके, हम उसकी शरण में पहुंचे यह है बेटा! आज का वाक अब मुझे समय मिलेगा शेष चर्चाएं हम कल प्रगट करेंगे। ओ३म् गायन्त्वा माहं ईषणा देवं रथाः मां प्रीति वन्धनां आप्यां लोकं सर्वाः। ओ३म् आत्मां गताः मां धेनु रुद्राः आ पाः। ओ३म् ब्रह्मणाः देवं मया सर्वं भद्राः। अच्छा भगवन! आनन्दम्।

3.महर्षि विश्वश्रवा व नाचिकेता का चिन्तन-820410

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भान्ति, कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेद मन्त्रों का पठन पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस मेरे देव परमपिता परमात्मा की प्रतिभा का वर्णन किया जाता है, क्योंकि वे परमपिता परमात्मा वरणीय है, जो मानव उसका वरण कर लेता है, अथवा उसे वर लेता है, वह प्रायः उसी को प्राप्त हो जाता है। हमारे यहाँ, प्रत्येक मन्त्र, उस परमपिता परमात्मा की गाथा गाता रहता है, जिस प्रकार यह पृथ्वी ब्रह्माण्ड की गाथा गा रही है उसी प्रकार मानो यह वाणी परमपिता परमात्मा की गाथा गा रही है, और वाणी के स्वरूप में, यह वेदों की ध्वनि, वेद मन्त्र, परमपिता परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान का वर्णन करता रहता है। क्योंकि सृष्टि के प्रारम्भ से, वर्तमान के काल तक, नाना प्रकार के वैज्ञानिक हुए और नाना ब्रह्मवेत्ता हुए, परन्तु कोई वैज्ञानिक ऐसा नहीं हुआ, जो परमपिता परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान को सीमाबद्ध कर सके, क्योंकि वे सीमा से रहित है, मानव परम्परागतों से ही, नाना प्रकार की उड़ान उड़ता रहा है।

परन्तु बेटा! परमात्मा का यह विशाल जगत, इतना विचित्र है, कि मानव जिस सम्बन्ध में उड़ान उड़ना चाहता है, मानव उसी उड़ान को उड़ने लगता है और अन्त में वह मौन हो जाता है। कोई भी विषय संसार का ऐसा नहीं है, जो परमपिता परमात्मा की इस विज्ञानशाला में, अथवा विचारशाला में, विचार विनिमय कर रहा है, विचारों की उड़ान उड़ रहा है। परन्तु उसका जब अन्तिम छोर आता है तो बेटा! वह मौन हो जाता है। कोई भी विषय हो संसार का, मुझे बेटा! नाना दार्शनिकों के वाक स्मरण आने लगते है, क्योंकि मृत्यु के सम्बन्ध में, एक मानव उड़ान उड़ रहा है और यह विचार रहा है कि मृत्यु केवल अभाव बन करके रहती है। परन्तु जब

वह उड़ान उड़ने लगता है, तो उड़ान उड़ता ही रहता है, तो अन्त में बेटा! वह मौन हो जाता है। तो वह इस संसार को अभाव में दृष्टिपात करने लगता है।

विज्ञान में अशान्ति

मुझे स्मरण आता रहता है, हमारे यहाँ नाना प्रकार के गोत्र हुए है उन गोत्रों में, उन ऋषि मुनियों के वंशलज में, नाना ब्रह्मवेत्ता हुए, वैज्ञानिक हुए, उन वैज्ञानिकों की बड़ी विचित्र उड़ान रही है। हमारे यहाँ एक गोत्र हुआ, जिसका नाम उद्दालक गोत्र कहलाता था। क्योंकि उद्दालक गोत्र में नाना ऋषि हुए, नाना मेरी पुत्रियाँ हुई, जिनकी उड़ान बड़ी विचित्र रही है। मुझे स्मरण आता रहता है, महर्षि उद्दालक गोत्र में बेटा! एक विश्वश्रवा नामक ऋषि हुए। परन्तु विश्वश्रवा के मस्तिष्क में विवेक की भावना रहती, ब्रह्मनिष्ठ कहलाते। एक समय बेटा! वह अध्ययन कर रहे थे, वेदों का अध्ययन कर रहे थे। अग्नि काण्ड की चर्चाएं आ रही थी, परन्तु एक समय उनके मस्तिष्क में यह वाक आया, एक वेदमन्त्र स्मरण भी आ रहा था और वह वेदमन्त्र कह रहा था मुमुक्षाणां ब्रह्मे कृतं देवाः द्रव्याणि गतं ब्रह्मा वर्णोस्सुता विप्राणि गच्छतं ब्रह्मे मोक्षाः वेद का मन्त्र यह कह रहा था कि मानव को इस संसार से उपराम होना चाहिए। उपराम की चर्चा आने लगी वेदमन्त्र यह कह रहा था विज्ञानां विज्ञानं ब्रह्मे वर्णं स्वस्तां देवं गतप्रमा व्रती अस्सुताः वेद का द्वितीय मन्त्र यह कह रहा था कि मानव को कहाँ जाना चाहिए, उड़ान उड़ते हुए, हम अन्तरिक्ष के विज्ञान में दृष्टिपात करते है, पृथ्वी के गर्भ में चले जाते है, परन्तु नाना प्रकार के लोक लोकान्तरों में गति करने लगते है और अपने महापुरुषों के चित्रों को भी दृष्टिपात करते है परन्तु जब यह विचार विश्वश्रवा के मस्तिष्क में आया कि विज्ञान में शान्ति नहीं है। एक मानव ने यन्त्रों का निर्माण किया है, और वह यन्त्रों में विद्यमान हो करके लोकों की यात्रा कर रहा है। परन्तु वह ध्रुव इत्यादि लोकों तक, उनकी सीमा रहती है। परन्तु देखो, यह लोकों के गर्भ में परणित हो जाते है। नाना प्रकार के विज्ञानवेत्ता मानो देखो, सूर्य के गर्भ में, और बृहस्पति के गर्भ में भी वह वहाँ के

क्रियाकलाप भी दृष्टिपात करते रहे। परन्तु उसके पश्चात भी विश्वश्रवा के मस्तिष्क में, अशान्ति ही प्रतीति होने लगी। परन्तु उन्होंने यह विचारा, कि यह जितना द्रव्य है, मैं सर्वत्र द्रव्य का याग करना चाहता हूँ। तो बेटा! इस चिन्तन में लग गये, कि इस द्रव्य को मैं कैसे उपयोग में लाऊं, कैसे देवताओं को इसे प्रदान कर सकता हूँ।

देवताओं का मुख

तो मेरे प्यारे! महाराजा विश्वश्रवा ने विज्ञानां ब्रह्मे कृतं देवाः मानो यह चिन्तन कर रहे थे, कि मैं इसको विज्ञान में परणित कर दूं या मैं देवताओं के लिए याग के द्वारा इसे हूत करूं। परन्तु यह विचार विनिमय करते करते, उनके आश्रम में महर्षि विभाण्डक मुनि आ पहुंचे और महर्षि विभाण्डक ने कहा कहो ऋषिवर विश्वश्रवा! आज तुम शान्त और गम्भीर मुद्रा में विद्यमान हो, इसके मूल को हम नहीं जान पाए है। उन्होंने कहा कि प्रभु! हमारी इच्छा यह बन रही है कि हम सर्वत्र द्रव्य का याग करना चाहते है, और उसे देवताओं को परणित करना चाहते है। तो प्रभु! उसका कोई मार्ग हमें दर्शाईए, तो महर्षि विभाण्डक ने कहा कि भई! इस वाक को मैं इतना ही जानता हूँ कि इसका याग कर देना चाहिए। यागां ब्रह्मणा यागां रूद्रं यागां ब्रह्मणे यागां गतप्रमाणं ब्रह्मे व्रतं प्रव्हे अस्सुताः मानो याग कर देना चाहिए, याग ही देवताओं का, क्योंकि अग्नि ही देवताओं का मुख कहलाया जाता है। यह अग्नि ही है, जो शब्दों को ले करके अन्तरिक्ष में परणित कर देती है। यह अग्नि की धाराओं पर, मानव के चित्र अन्तरिक्ष में गति करते है यह अग्नि ही ऐसी है, जो वाणी स्वाहा उच्चारण करके, मानो साकल्य को ले करके स्वाहा उच्चारण करके मानो देवताओं को प्रदान कर सकती है।

महर्षि विभाण्डक द्वारा पितर याग

मेरे प्यारे! उन्होंने इस यज्ञ के, मानो याग के महत्त्व का वर्णन किया। और उन्होंने कहा कि अग्नि देवताओं का मुख है अग्नि में जो भी वस्तु तुम प्रदान करते हो, अग्नि

सूक्ष्म बना करके, देवताओं को प्रदान कर देती है। मानो यह अग्नि ही है जिसके ऊपर ऋषि मुनि चयन करते हुए मानो देखो, अग्नि की धाराओं पर, अपने पूर्वजों के चित्रों को दृष्टिपात करते रहे है। महर्षि विभाण्डक मुनि महाराज ने एक गाथा प्रगट की और उस गाथा का उन्होंने वर्णन किया और गाथा में कहा सम्भविता ब्रह्मणे प्राणा स्वस्त प्रह्वि मानो उन्होंने एक वाक वर्णन किया, विभाण्डक जी ने, कि एक समय जब मेरा युवा काल था ऋषिवर! तो मेरी पत्नी शृङ्खलाकेतु ने कहा, मेरी पत्नी संकला केतु ने कहा कि हे भगवन! आओ, आज तो हम पितर याग करते है तो उन्होंने पितर याग करने के लिए मुझे बाध्य किया और मैं पितर याग के लिए मानो परणित हो गया और जब मैं याग करने लगा, तो अग्नि का चयन किया गया, अग्नि का पूजन किया गया, पूजन का अभिप्राय क्या है? पूजनाति पूजनां ब्रह्मे पूजा मानो पूजा का अर्थ है कि उसका सदुपयोग करना है। अग्नि की धाराओं पर याग करना, स्वाहा कह करके शब्दों की महानता को ऊर्ध्वा में परणित कराना है।

अन्तरिक्ष में शब्द

तो मेरे प्यारे! देखो, विभाण्डक जी ने कहा कि हम जब याग और पितर याग करने लगे, तो नाना पितर आ गएं और पितरों के अग्रणी मंगलं ब्रहे उस समय देखो, महर्षि शौनक मुनि आ गएं और महर्षि शौनक मुनि के द्वारा उस समय एक वैज्ञानिक यन्त्र था, क्योंकि महर्षि शौनक ऋषि महाराज उस समय विज्ञान में पारायण थे मानो देखो, महर्षि शौनक मुनि ने यन्त्रों में, हमारे पिता, महापिता, पड़पिता मानो देखो, चौथे महापिता, पांचवें महापिता, अन्तरिक्ष में जो अग्नि की धाराओं पर विद्यमान हो करके, अन्तरिक्ष में गति करते थे। मानो उनके चित्र, उन्होंने मुझे यन्त्र में दृष्टिपात कराए। उनके चित्र आते रहे, मानो देखो, विज्ञानशाला, विज्ञानमयी आभा में रमण करने लगे। तो मुझे स्मरण है विश्वश्रवा जी! कि उस समय मैंने एक पितर याग किया और द्रव्याणि गथप्प्रमाणम् उसी समय मैंने शौनक मुनि से यह कहा कि महाराज! इस यन्त्र में यह विशेषाएं कहाँ से, तुमने प्राप्त की है? उन्होंने कहा यह

तो विज्ञान है, मानव का शब्द जा रहा है, शब्द गति कर रहा है, शब्दों की प्रतिभा आ रही है, उनका चयन अग्नि के द्वारा अन्तरिक्ष में हो रहा है। मानो शब्दों की स्थिति, अन्तरिक्ष में निहित रहती है। मेरे प्यारे! देखो, शौनक मुनि ने यह कहा कि यहाँ ब्रह्मवेत्ता इसी का चयन करते रहे है। ऋषि मुनि महाराज अपने अन्तःकरण को जागरूक करते हुए, संस्कारों को उद्बुद्ध करते रहे है। अहिंसा परमोधर्म की धाराओं को जान करके वह अपने में मानो प्रतिष्ठित होते रहे है।

तो मेरे प्यारे! महाराजा विश्वश्रवा के मस्तिष्क में यह वाक आ गया, कि मुझे याग करना है, मुझे मानो देव याग करना है। तो मेरे प्यारे! सर्व द्रव्य का उन्होंने अपना कर्म बनाया, कर्म बनाने के पश्चात उन्होंने यज्ञशाला का निर्माण किया और निर्माण करने के पश्चात मुनिवरों! देखो, उन्होंने एक यज्ञशाला में महर्षि विभाण्डक, महर्षि कुक्कुट, महर्षि सोमकेतु, महर्षि स्वाति और महर्षि श्वेताश्वेतर और महर्षि कवन्धी, महर्षि सोमभानु, महर्षि वैशम्पायन, महर्षि शाण्डिल्य, महर्षि मुद्गल, महर्षि प्रवाहण, महर्षि शिलक, महर्षि दालभ्य, महर्षि सोम प्रतिभा मेरे प्यारे! नाना ऋषि मुनियों का वहाँ आगमन हुआ और आगमन होने के पश्चात मुनिवरों! देखो, याग का प्रारम्भ हुआ। अग्निहोत्र होने लगा, अग्नि की पूजा में मानो सब ऋषि मुनियों ने आह्वान किया और आह्वान करने के पश्चात मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने याग किया और याग के पश्चात मानो देखो, ब्राह्मणों को वह दक्षिणा प्रदान करने लगे।

पुत्र माता का हृदय

तो मेरे प्यारे! उसी समय त्रेणकेतु ऋषि महाराज आ पहुंचे, क्योंकि त्रेणकेतु ऋषि महाराज हरितत गोत्रीय कहलाते थे। मेरे प्यारे! त्रेण ऋषि ने कहा कि हे विश्वश्रवा! आप तो उद्दालक गोत्रीय हो, आप यह क्या कर रहे हो? उन्होंने कहा मैं दक्षिणा दे रहा हूँ, उन्होंने कहा यह दक्षिणा क्या है? उन्होंने कहा दक्षिणा मानो देखो, श्रद्धामयी कहलाती है और यह श्रद्धा मानो हृदय की आभा है, यह जो हृदय है, यह मानव का, सर्वत्र ब्रह्माण्ड की एक आभा कहलाती है। यह हृदय ही है जहाँ ऋषि मुनि

याग करते है, यह हृदय है जहाँ मेरी प्यारी माता, अपने पुत्र से स्नेह करती है, अपने पुत्र का पालन करती है, वह हृदय से होता है। क्योंकि माता का पुत्र, माता का हृदय कहलाता है। मेरे प्यारे! देखो, इसीलिए उसका स्नेह, उसको विष्णु प्रतिभा कहते है, तो मानो देखो, ऋषि ने कहा कि यह यथार्थ है। परन्तु मैं यह जानना और चाहता हूँ कि यह दक्षिणामयी क्या है?

पाप का मूल

उस समय उन्होंने कहा कि यह दक्षिणा श्रद्धा में रहती है, क्योंकि सर्वत्र ब्रह्माण्ड एक श्रद्धा में है। क्योंकि श्रद्धा से ही मानव के जीवन की आभा का जन्म होता है और श्रद्धा ही मानव को उद्बुद्ध करती है और यह श्रद्धा ही मानव को आत्म ज्ञान में ले जाती है, यह श्रद्धा ही मानो राष्ट्रपिता बनाती है, तो इस श्रद्धा के ऊपर, श्रद्धा से दक्षिणा का जन्म होता है। दक्षिणा किसे कहते है? मेरे प्यारे! देखो, **जब त्रुण ऋषि ने यह कहा तो विश्वश्रवा ने कहा कि यह जो दक्षिणा है, अप्रतम मानो यह अपने दुर्गणों को नष्ट करना है। जो मानव के शरीर में काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह इत्यादि जो मानव के शरीर को विनाश के मार्ग पर ले जाते है मानो देखो, इनको त्यागने का नाम दक्षिणा कहलाता है मेरे प्यारे! ऋषि की उड़ान, कितनी विचित्र है। दक्षिणा का अभिप्राय द्रव्य तो देना है ही परन्तु देखो, दुर्गणों को, आचार्य को अर्पित कर देना है।** जैसे ब्रह्मचारी को आचार्य कहता है चक्षुम्मे शुन्धामि, श्रोत्रम्मे शुन्धामि, प्राणम्मे शुन्धामि हे ब्रह्मचारी! तू सर्वत्र इन्द्रियों के विषयों को मुझे प्रदान कर, क्योंकि इन्द्रियों से ही पाप और पुण्यों की प्रतिभा आती है। जैसे मानव सुदृष्टिपान कर रहा है, सुपान करता हुआ मुनिवरों! देखो, उसमें आभा अहे जहाँ वह कुदृष्टि में चला जाता है वही पाप का मूल बन जाता है।

तो मेरे प्यारे! ऋषि कहता है सम्भविता ब्रह्म कृतं दिव्याः कि यह दक्षिणा कहलाती है। परन्तु देखो, त्रुण ऋषि ने प्रश्न किया कि हे ऋषिवर! तुम दक्षिणा क्यों दे रहे हो? तो ऋषि कहता है कल्याणां वृत्ति देवाः कि मैं अपने कल्याण के लिए, जिससे

मेरा कल्याण हो, कल्याणां ब्रह्मे मानो देखो, कल्याण को चाहता हूँ। परन्तु त्रुण ऋषि ने यह प्रश्न किया कि यह कल्याण तुम क्यों चाहते हो? उन्होंने कहा कि यह इसलिए चाहता हूँ क्योंकि मेरा जो अन्तरात्मा है, मैं जो आत्मा हूँ, परन्तु मेरा आत्मा प्रसन्न हो जाए, मेरा आत्मा कैवल्य, पाप, पुण्यों से रहित हो जाए। उन्होंने कहा कि हे ऋषिवर! मैं यह और जानना चाहता हूँ.... वाह रे, मेरे प्यारे! ऋषि ने यह उत्तर दिया कि धर्मणां ब्रह्मे व्याख्यानि कृति देवाः व्यापिकता में धर्म रहता है, रचना में धर्म रहता है और रचना के भोगने में, रचना के कृणि अस्सुतो में मानो देखो, पाप की प्रतिभा रहती है।

तो मेरे प्यारे! जब त्रुण ऋषि ने यह उत्तर पाया, तो त्रुण ऋषि मौन हो गएं और मौन हो करके, यह कहा कि यह जो मानव का हृदय है, यह क्या है? मेरे प्यारे! देखो, त्रुण ऋषि के प्रश्न करने पर विश्वश्रवा ने कहा कि यह जो हृदय है, यह एक प्रकार की यज्ञशाला है। जिसमें मानो सप्त होता है, वे आहुति दे रहे है, क्योंकि नेत्र भी एक होता बने हुए है, मानो देखो, यह बाह्य जगत से साकल्य लाते है और हृदय में प्रतिष्ठित कर देते है, हृदय में उनकी प्रतिष्ठा हो जाती है। जैसे एक मानव रूप को दृष्टिपात कर रहा है, संसार का दृष्टा बना हुआ है, और वह दृष्टिपात करके, नाना प्रकार के रूप को कहाँ लाता है, हृदय में स्थिति हो जाती है। बेटा! और नाना प्रकार के शब्दों को ला करके, हृदय में ओत प्रोत करा देता है। नाना सुगन्धियों को, घ्राण के द्वारा ला करके, हृदय में प्रवेश करा देता है। नाना प्रीति को ला करके बेटा! हृदय में उसकी प्रतिः स्थिति हो जाती है। जैसे माता के हृदय में स्नेह रहता है मानो उस स्नेह को पुत्र को प्रदान कर देती है। इसी प्रकार वह स्नेह कहाँ रहता है? वह हृदय में रहता है।

प्रभु का हृदय

तो इसीलिए मुनिवरों! देखो, हृदय की तुलना करते हुए ऋषि ने कहा जैसे यह मानव का हृदय है ऐसे ही बाह्य जगत में यह ब्रह्माण्ड प्रभु का हृदय माना गया है

और इस प्रभु के हृदय में मुनिवरों! देखो, संसार की वस्तु विद्यमान है, किसी प्रकार का कोई सङ्कल्प करता है, किसी प्रकार की आभा को लाना चाहता है तो वह अन्तरिक्ष में से आनी प्रारम्भ हो जाती है। मेरे प्यारे! देखो, प्रभु का विज्ञान कितना अनन्तमयी कहलाता है, कितना महान कहलाता है, यह प्रभु का हृदय है। एक वैज्ञानिक बेटा! विज्ञानवेत्ता बनना चाहता है, विज्ञानवेत्ता बनता हुआ, वह यहाँ से नाना प्रकार के रूपों को यत्रों में लाना चाहता है, परमाणुवाद को एकत्रित करना चाहता है वह नाना प्रकार के परमाणुओं को ला करके मुनिवरों! देखो, वह विज्ञानवेत्ता यन्त्रों का निर्माण करता है और यन्त्रों में मुनिवरों! देखो, संसार के चित्र आते है, चित्रावलियाँ आती है, द्यौ लोक में रमण करने वाला जो शब्द है, वह भी उस चित्र में आ रहा है यह मानो शब्दों का रथ बन रहा है, रथ बन करके वह शब्द उसी को प्राप्त हो जाता है। जैसा जिसका वो शब्द होता है।

ब्रह्माण्ड की आभा

तो मेरे प्यारे! यह प्रभु का विज्ञान, कितना अनन्तमयी कहलाता है नाना प्रकार का क्रियाकलाप होता रहता है और वह क्रियाकलाप अन्तरिक्ष में मानो देखो, उसकी स्थिति हो जाती है, वह स्थिर हो जाता है। तो विचार विनिमय क्या मेरे प्यारे! देखो, त्रुण ऋषि के जब आचार्य विश्वश्रवा ने यह उत्तर दिया, तो उन्होंने कहा कि प्रभु! आपका जो ज्ञान है, वह अनन्त है नितान्त माना गया है परन्तु देखो, उन्होंने कहा कि, नही, प्रभु, त्रुण ऋषि से, कहा कि प्रभु ब्रह्मणे, मैं यज्ञ में, मैं हृदय को इसलिए उच्चारण कर रहा हूँ कि मैं अपना मोक्ष चाहता हूँ। मैं मोक्ष में जाना चाहता हूँ, आनन्द को प्राप्त करने के लिए मोक्षणी गतं ब्रह्मण दिव्यां लोकं ब्रह्मणे कृता वेद का आचार्य कहता है धन्य है, ऋषिवर! आपने मुझे हृदय की वार्ता प्रगट कराई है, संसार की जितनी भी स्थितियाँ है, वह सब हृदय में ओत प्रोत हो जाती है, हृदय ही ब्रह्माण्ड की आभा कहलाती है। वह ब्रह्म में ओत प्रोत हो जाती है।

पुत्र, पिता की सम्पदा

तो आओ, मेरे प्यारे! अब ऋषि ने कहा हे तरूणमयी! आओ, हे हरितत गोत्रीय, आओ, अब हम दक्षिणा प्रदान करते है। मेरे प्यारे! विश्वश्रवा ने जब दक्षिणा प्रारम्भ की तो उनमें बहुतसी गऊएं, वृद्ध थी मानो देखो, वृद्ध गऊओं को अर्पित करने से कोई लाभ नहीं होता, वह पाप का मूल बन जाता है। परन्तु देखो, ऋषि ने सम्भविता ब्रह्मणे क्योंकि उनका एक पुत्र या, सात वर्षीय, सात दिवस का, जिसका नाम नचिकेता था। बालक नचिकेता ने मुनिवरों! देखो, अपने पिता से कहा हे पिता! आज यह जो तुम दान दे रहे हो, आज जो सम्पदा प्रदान कर रहे हो अहा! यागां ब्रह्मे व्रणे अस्सुता मैं भी एक सम्पदा हूँ आप मुझे किसे प्रदान करोगे।

तो मेरे प्यारे! जब उन्होंने यह कहा कि मुझे किसे प्रदान करोगे? तो याग, मुनिवरों! उद्दालक गोत्रीय वर्णो मुनिवरों! उद्दालक गोत्रीय ऋषि ने कहा कि मैं तुझे मृत्यु को दूंगा। अब मेरे प्यारे! ब्रह्मचारी मौन हो गया, जब सायंकाल को, अपने क्रियाकलाप से, ऋषिवर मानो उपराम हुए तो मुनिवरों! देखो, स्थली पर विद्यमान, अपने विश्राम गृह में, जब विश्राम के लिए पहुंचे तो बालक नचिकेता उनके समीप जा पहुंचे और बालक नचिकेता ने चरणों को स्पर्श करके कहा कि हे प्रभु! आपने जो मुझे कहा था कि मैं तुझे मृत्यु को दूंगा, क्योंकि हमारा यह जो गोत्र, यह उद्दालक कहलाता है और उद्दालक गोत्र का जो निकास हुआ है, वह हरितत गोत्रों से हुआ है, हरितत गोत्र का निकास, अंगिरस गोत्रों से हुआ है और अंगिरस गोत्रों का निकास वह ब्रह्मा के पुत्र अथर्वा से हुआ है। हमारा जो इतना वंशलज चला आ रहा है, इसमें कोई भी मानव ऐसा नहीं हुआ जो मिथ्यावादी हो, मानो देखो, परम्परा चल रही है, कोई भी मानव मिथ्यावादी नहीं हुआ है आपका वाक भी, पितर मिथ्या नहीं होना चाहिए।

मृत्युञ्जय

मेरे प्यारे! देखो, जब उद्दालक गोत्रीय ऋषि ने इस वाक को श्रवण किया, तो उन्होंने कहा बालक! जाओ, तुम मृत्यु को चले जाओ। तो मेरे पुत्रों! नचिकेता ने

कोई पाप तो नहीं किया था, वह वहाँ से गमन करने लगा, गमन करते हुए, नमस्कार करके, चरणों को स्पर्श करके मैं मृत्यु को जा रहा हूँ। मुनिवरों! विश्वश्रवा ने कहा हे ब्रह्मा ब्रणे हे ब्रह्मचारी! तुम मृत्यु को चले जाओ। तो मेरे प्यारे! बालक ने कोई पाप नहीं किया था, नचिकेता ने वहाँ से गमन किया और भ्रमण करते हुए यमाचार्य के गृह में पहुंचे, जिन ऋषियों ने मृत्यु को विजय कर लिया था, मृत्यु को विजय कौन करता है? मृत्यु कैसे विजय होती है? यह बेटा! एक प्रसंग आते रहते है मृत्यु को विजय वह करता है जो मानव देखो, अज्ञान को त्याग देता है। क्योंकि अज्ञान में मृत्यु रहती है, अज्ञानियों को मृत्यु आती है, जो यह जानता है कि प्रभु के राष्ट्र में आलस्य नहीं है, प्रमाद नहीं है और वहाँ ज्ञान ही ज्ञान है, वहाँ प्रकाश ही प्रकाश है और जो प्रकाश में रत्त रहने वाला है, वह प्रकाशमयी कहलाता है और प्रकाश में बेटा! मृत्यु नहीं होती।

यमाचार्य नचिकेता मिलन

मेरे पुत्रों! देखो, ऐसे यमाचार्य थे, यमाचार्य के गृह पर, जब बालक, ब्रह्मचारी नचिकेता पहुंचे तो बेटा! देखो, नचिकेता तीन दिवसं ब्रह्मे मानो द्वार पर विद्यमान हो गये। माता से कहा हे मातेश्वरी! गुरु पत्नी से कहा कि आचार्य कहा है? उन्होंने कहा वे भ्रमण करने पहुंचे हैं। हे ब्रह्मचारी! आओ, तुम अन्न, जल का पान करो। अन्न, जल का पान न करने वाले नचिकेता ने कहा कि मुझे जब तक आचार्य के दर्शन नहीं होंगे, तब तक मैं कोई भी अन्न, जल का पान नहीं करूंगा। मेरे प्यारे! देखो, पत्नी दुःखित हो गई, कि हम कैसे दुर्भागी है, एक ब्रह्मवेत्ता ब्रह्मचारी हमारे आश्रम में अन्न, जल से पीडित है मानो देखो, व्याकुल होती रही, जिस गृह में ब्रह्मवेत्ता मुनिवरों! अन्न, जल से पीडित रहता है, वह अपने पाप को त्याग देता है और उस गृह के पुण्य ले जाता है।

नचिकेता के तीन वर

तो मेरे पुत्रों! मुझे स्मरण है नचिकेता को तीन दिवस, तीन रात्रि हो गई, इतने में

मुनिवरों! यमाचार्य आ पहुंचे। तीन दिवस के पश्चात, पत्नी व्याकुल होने लगी। हे प्रभु! हम तो बड़े अप्रतं ब्रहे हम तो पातक बन गएं है। मानो पाप अग्रणी बन गएं है। एक ब्रह्मवेत्ता, उद्दालक गोत्रीय नचिकेता हमारे द्वार पर विद्यमान है, तीन दिवस और तीन रात्रि हो गएं हैं। मेरे पुत्रों! देखो, उन्होंने ब्रह्मचारी को अश्वणा ब्रह्मे व्रताः उन्होंने कहा हे ब्रह्मचारी! अप्रतम् ब्रह्मचारी का नाम उच्चारण करते ही मुनिवरों! ब्रह्मचारी, ऋषि के चरणों में ओत प्रोत हो गये। उन्होंने कहा हे ब्रह्मचारी! मैं तुम्हें तीन वर देता हूँ, तुम चाहो, जो इच्छा हो, वह स्वीकार करो। उन्होंने कहा हे प्रभु! मैं यह चाहता हूँ जिस पिता ने, जिस अभिलाषा से मुझे मृत्यु को दिया है मेरे पिता की वह अभिलाषा पूर्ण हो जानी चाहिए। उन्होंने कहा तथास्तु वह द्वितीय वचन में कहा कि प्रभु! मैं तीन प्रकार की अप्रतं अग्नं ब्रह्मणो स्वर्ग गच्छतम् मैं स्वर्ग को जानना चाहता हूँ, यह स्वर्ग क्या है?

ब्रह्म और चरी

तो बालक नचिकेता के प्रश्न करने पर, यमाचार्य ने कहा हे ब्रह्मचारी! तीन प्रकार की अग्नियों का चयन करने वाला, मानो स्वर्ग का गामी बनता है। वे तीन प्रकार की अग्नि कौनसी हैं? सबसे प्रथम अग्नि का नाम गार्हपथ्य कहलाता है। गार्हपथ्य, गृहपथ्य, वैश्वानर ये तीन प्रकार की अग्नि कहलाती है। मानो देखो, गार्हपथ्य नाम की अग्नि में ब्रह्मचारी तप रहा है। प्रत्येक इन्द्रिय को तपा रहा है, मानो वह गार्हपथ्य नाम की अग्नि कहलाती है। जिसमें देखो, वह विद्या का अध्ययन करता है, चयन करता है, अपने को अपनी ही आभा में परणित होने लगता है। मानो वह ब्रह्मचरिष्यामि गतप्रव्हा अवर्णास्ति वह ब्रह्मचारी अपने को ब्रह्म में पिरो देता है। ब्रह्मचारी यह जानता है कि ब्रह्मचर्य के दो प्रकार के स्वरूप कहलाते है। एक ब्रह्मचारी, ब्रह्मचारिष्यमि मानो देखो, ब्रह्म और चरी, दो ही शब्द कहलाते है। ब्रह्म कहते है परमात्मा को, और मुनिवरों! चरी कहते है प्रकृति को, जो दृष्टिपात आने वाला जगत है, दृष्टि जो पात आ रहा है यह तरंगों वाला जो जगत है, यह सूक्ष्म

जो जगत है जो नाना प्रकार की तरंगों में निहित रहता है। मानो यह जगत एक चरी कहलाता है और ब्रह्म कहते है परमपिता परमात्मा को, ब्रह्मचरिष्यामि।

प्रज्ञा में प्रभु दिग्दर्शन

मेरे प्यारे! देखो, तो इस ब्रह्मचर्य की दो प्रकार की गतियाँ होती है एक ध्रुवा और एक ऊर्ध्वा होती है। ऊर्ध्वा गति करने वाला देवता बनता है, ऊर्ध्वा गति करने वाला ब्रह्म का दर्शन करता है इसी ब्रह्मचर्य की ध्रुवा गति होने पर यह संसार का प्राणी पितर याग करता है, यह पितर बनता है पितर बन करके मानो संसार की आभा में रमण करता है। विचार क्या मुनिवरों! कि ब्रह्मचरिष्यामि, ब्रह्म, चरी देखो, ब्रह्मचर्य के दो ही अर्थ है, ब्रह्म और चरी, चरी नाम प्रकृति का है ब्रह्म नाम परमात्मा का है जिस ब्रह्म की आभा में, मानव रमण करने लगता है जिस ब्रह्म की ऊर्ध्वा गति बनाने से ब्रह्मचरिष्यामि बेटा! ब्रह्म से मिलान करता है।

अब विचार आता है कि ब्रह्म क्या है? ब्रह्म, चरी के ही परमाणुओं को क्या ब्रह्म कहते है, उन्होंने कहा नहीं, यह ब्रह्मा कृत प्रव्हा मानो देखो, अपनी जो विचार धारा है, तरंगवाद है उन तरंगों को ऊर्ध्वा में पहुंचाना मानो देखो, मेधा, ऋतम्भरा और प्रज्ञा में जो रमण कराता है मुनिवरों! देखो, जो प्रज्ञावी में पहुंच जाता है, जैसे मेधा है, और प्रज्ञा कहलाती है, प्रज्ञा में रमण करने से, प्रभु का दिग्दर्शन होता है, अज्ञान समाप्त हो जाता है, ज्ञान में परणित हो जाता है। सङ्कीर्णता नहीं रहती, विलासिता नहीं रहती। वह मेरे प्यारे! देखो, आभा में रमण करता है, वह प्रभु से मिलान करता है। मुनिवरों! देखो, उसकी विचारधारा, प्राण जैसे संसार में पिरोया हुआ है, ऐसे ब्रह्म को प्रत्येक, मानव कण कण में, एक सूत्र को दृष्टिपात कर लेता है, कि ब्रह्म तो सूत्र है उस सूत्र को जान करके सूत्र में सूत्रता परणित करने से, मेरे प्यारे! आभा में रमण कहने लगता है।

तो विचार विनिमय क्या, आज मैं तुम्हें यह वाक इसलिए प्रगट कर रहा हूँ बेटा! देखो, ब्रह्मचारी, अपने विद्यालयों में, अपने विचारों में बेटा! वह गार्हपथ्य नाम की,

अग्नि की पूजा करता है। यह अग्नि कहलाती है जिसका सम्बन्ध द्यौ लोक से होता है, जिसका सम्बन्ध अन्तरिक्ष से होता है, सूर्य, जिस आभा को ले करके बेटा! प्रकाशमान हो रहा है।

स्वर्ग की आभा

तो विचार विनिमय क्या, मेरे पुत्रों! मैं दूरी चला गया हूँ, विचार देता हुआ दूरी न जाऊं, विचार क्या मुनिवरों! देखो, उन्होंने कहा कि इस गार्हपथ्य अग्नि की पूजा करने वाला ब्रह्मचारी मानो गृह में प्रवेश करता है, वह गृह में जब प्रवेश करता है, तो गृहपथ्य नाम की अग्नि की पूजा कौनसी है? जब माता पिता बेटा! गृह को स्वर्ग बनाना चाहते है, कोई माता पिता यह नहीं चाहता, कि हमारा गृह स्वर्ग न रहे, स्वर्ग कैसे बनेगा? जब गृहपथ्य नाम की अग्नि की पूजा की जाती है, गृहपथ्य नाम की अग्नि की पूजा क्या है? मुनिवरों! देखो, गृह में याग करना, गृह में दर्शनों की चर्चा होना, गृह में अपने आचरणों की सुगन्धि होना, मेरे प्यारे! बाल्य बालिका उनका अनुसरण करते है और जब अनुसरण करते है, तो गृह स्वर्ग बन जाता है। तो मेरे पुत्रों! देखो, यह स्वर्ग है, उसके पश्चात अपने अनुभव को विद्यालय में प्रवेश कराना ममत्तव की आभा को शान्त करना, यह बेटा! देखो, स्वर्ग की आभा कहलाती है।

नाचिकेता का तीसरा प्रश्न

परन्तु बालक नचिकेता ने तीसरा प्रश्न किया, कि हे भगवन! मैं यह जानना चाहता हूँ कि आत्मा इस शरीर को त्याग करके कहाँ जाता है? मैं यह जानना चाहता हूँ। परन्तु देखो, नचिकेता ने जब यह प्रश्न किया तो यमाचार्य ने यह विचारा कि यह ब्रह्मचारी प्रश्न तो कर रहा है, परन्तु यह योग्य है अथवा नहीं, तो उन्होंने कहा हे ब्रह्मचारी! तू संसार के राष्ट्र को क्यों नहीं भोगता, तू इस पृथ्वी के राज को स्वीकार कर मानो नाना सुन्दरियाँ हो, दुग्ध देने वाले पशु हो, नाना वाहन हो, तू यह स्वीकार कर यह पृथ्वी का राज्य, तू आत्मा के प्रश्न को न छेड़, क्योंकि आत्मा के प्रसंग में

नाना ऋषिवर मौन हो जाते है। नाना ब्रह्मवेत्ता, आत्मवेत्ता इसमें मौन हो गये। परन्तु देखो, नचिकेता ने क्या उत्तर दिया, नचिकेता ने कहा हे प्रभु! जो आज वस्तु है वह कल नहीं रहेगी, हे प्रभु! जैसे दुग्ध देने वाला पशु है, आज है, वह कल नहीं रहेगा, ये नाना सुन्दरियाँ आज हैं, कल नहीं रहेगी, परन्तु देखो, यह नाना जो वाहन है, राष्ट्र है, यह आज है, कल नहीं रहेगा, हे प्रभु! उस अज्ञान में मुझे न लगाईए। मुझे आत्मा का ज्ञान कराईए, जिस आत्मा के कारण, यह संसार, यह मानव का शरीर जीवित रहता है। क्रियाशील बना रहता है, क्रियाकलाप करता रहता है, मानवीय दर्शनों में यह गुथा हुआ रहता है।

तो मेरे प्यारे! जब यह उत्तर यमाचार्य ने पान किया, तो यमाचार्य मन ही मन नतमस्तिष्क हो गया, और उसने कहा हे ब्रह्मा ब्रणे तू वास्तव में इस शिक्षा के योग्य है। उन्होंने कहा हे नचिकेता! तुम ब्राह्मण हो। अब मैं तुम्हें आत्मा का सूक्ष्म परिचय दूंगा। जब यह आत्मा, इस शरीर को त्यागता है, तो इस मानव के शरीर में मानो देखो, दस प्राण कहलाते है, पांच ज्ञानेन्द्रियां, पांच कर्मेन्द्रियाँ कहलाती है। मन, बुद्धि, चित्त, अहङ्कार कहलाता है यह चौबीस खम्बों का, यह मानवीय शरीर कहलाता है।

शरीरोपरान्त आत्मा की गति

हे ब्रह्मचारी! आओ, अब मैं तुम्हें इसका बोद्ध कराता हूँ जब यह मानो आत्मा इस शरीर को त्यागता है तो उस समय मन, बुद्धि, चित्त अहङ्कार ये मन के अन्तःकरण बन करके, मन की अवस्था स्तुति हो जाती है। मानो देखो, उस समय, यह मन, अन्तःकरण, चित्त के मण्डलों को ले करके, यह आत्मा के समीप आता है। आत्मा इनके ऊपर सवार हो जाता है, और जब सवार होता है तो यह उदान प्राण के समीप पहुंचता है। उदान प्राण मेरे प्यारे! देखो, चित्त के मण्डल को ले करके, आत्मा को ले करके इस मानव शरीर को त्याग देता है। जब यह त्यागता है वो यह अपने साथ में, अन्तःकरण में जो संस्कार होते है, मानो जो चित्त मण्डल में

विद्यमान होते है, उन चित्त के मण्डलों को ले करके, जब यह मानव शरीर को त्याग देता है, तो यह वायु मण्डल में गति करता है। वायु मण्डल में, उदान प्राण ले जाता है, क्योंकि उदान का जो सखा है, वह वायु मण्डल है। क्योंकि प्राण की जो आभा है, वह वायु मण्डल कहलाती है। मानो देखो, वायु मण्डल में तीन नाना प्रकार की वायु कहलाती है। जैसे मृचि वायु है, इन्द्र वायु है, समीपि वायु है और भी नाना प्रकार की वायु के भेदन माने गएं है। यह उनमें रमण करता हुआ और जैसा संस्कार होता है, उसी के आधार पर यह किसी माता के गर्भ में प्रवेश कर लेता है।

तो मानो देखो, यह स्थिति आत्मा के शरीर के साथ होती है, इसीलिए हमारे आचार्यों ने यह कहा है कि हे मानव! तू मानव बन करके, तू प्रभु का चिन्तन कर, अन्त में जब तेरा आत्मा शरीर को त्यागेगा तो तेरे संस्कार, मोह के न आ जाए, मोह के आ जाएंगे तो मोह को प्राप्त होगा। यदि क्रोध के आ जाएंगे, तो क्रोध को प्राप्त होगा, उनकी नाना प्रकार की योनियाँ है परन्तु मैं गम्भीर क्षेत्र में नहीं नाना चाहता।

विचार विनिमय क्या, बालक नचिकेता को यह वर्णन कराया कि अन्तं ब्रह्मे व्रतप्रव्हा मानव के जैसे शरीर को त्यागते समय, जैसे भी आत्मिक विचार होते है, उन विचारों के साथ में, अन्तःकरण में उनकी स्थिति हो जाती है और संस्कार को ले करके इस शरीर को त्यागता है, उसी के अनुसार उसका जन्म हो जाता है। यह जैसा, यदि मोक्ष को जाना चाहता है, तो मोक्ष को प्राप्त हो जाता है, यह मोह में आना चाहता है तो वहीं आ जाता है, इसकी क्रोध की स्थिति बन जाती है तो मानो देखो, यह हिंसक प्राणियों में प्राप्त हो जाता है तो यह वाक्, तो बेटा! मैं तुम्हें किसी काल में ही प्रगट करूंगा, आज का वाक अब समाप्त होने जा रहा है आज का वाक समाप्त। अब वेदो का पठन पाठन होगा।

4.रावण राष्ट्र की चर्चाएँ-820411

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भान्ति, कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का, गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेद मन्त्रों का, पठन पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस मेरे देव परमपिता परमात्मा की प्रतिभा का वर्णन किया जाता है, क्योंकि वे परमपिता परमात्मा विष्णु कहलाता है, वह संसार का पालन करने वाला है और यह संसार मानो उसका आयतन माना गया है। तो मुनिवरों! यह जो संसार हमें दृष्टिपात आ रहा है, यह उस परमपिता परमात्मा का आयतन है मानो यह ब्रह्माण्ड उसी में ओत प्रोत हो रहा है। यहाँ नाना प्रकार के, वेद यन्त्रों की ध्वनियाँ होती रहती है, हमने तुम्हें बहुत पुरातन काल में, यह निर्णय देते हुए कहा था, कि हमारे यहाँ, वेद मन्त्रों का जो पठन पाठन होता है उसके नाना प्रकार कहलाएं जाते है जैसे जटा पाठ, माला पाठ, विसर्ग पाठ, उदात्त अनुदात्त और भी नाना प्रकार के इसके भेदन माने गएं है। जो वेद के मन्त्र का उच्चारण होता है, तो प्रथम एक वेदज्ञ ध्वनि, प्रथम जो ध्वनि है वह ओ३म् कहलाता है। आचार्यों के इसमें भिन्न भिन्न प्रकार के विचार रहे है, परन्तु अनुसन्धानवेत्ताओं ने यह कहा कि जितना भी वेदमन्त्र है वह जो कुछ उच्चारण कर रहा है, वह ब्रह्माण्ड की गाथा गा रहा है। मानो वह ज्ञान और विज्ञान का वाक, ज्ञान और विज्ञान का स्पष्टीकरण कर रहा है।

ओ३म् रूपी सूत्र

तो मुनिवरों! देखो, जितना भी संसार का ज्ञान और विज्ञान है, चाहे वह आध्यात्मिकवादी हो, चाहे भौतिकवाद, परन्तु जितना ज्ञान विज्ञान है वह ओ३म् रूपी सूत्र में पिरोया हुआ है। जैसे बेटा! माला होती है। माला में भिन्न भिन्न प्रकार मनके होते है और वे मनके और सूत्र दोनों भिन्न भिन्न होते है। परन्तु जब उन दोनों का समावेश कर दिया जाता है, अथवा मनके सूत्र में पिरो दिए जाते है, तो मेरे

पुत्रों! वह माला बन जाती है। इसी प्रकार प्रत्येक वेद का मन्त्र बेटा! ओ३म् रूपी सूत्र में पिरोने से वह पाठ बन जाता है। और वह माला पाठ बन करके मेरे प्यारे! बुद्धिमान का आभूषण बन करके रहता है। जैसे भक्तजन मानो देखो, माला धारण कर लेते है, माता अपने कण्ठ में नाना प्रकार के, आभूषणों को ग्रहण कर लेती है अथवा धारण कर लेती है, इसी प्रकार जो बुद्धिमान है जो पाण्डित्व है, जो विवेकी है, इस वेदज्ञ ध्वनि को बेटा! ओ३म् रूपी सूत्र में पिरो करके, एक माला के सदृश बेटा! उसे कण्ठ में धारण कर लेता है।

राष्ट्र की पवित्रता

तो मेरे प्यारे! ये वेद के वाक्, जब हमें स्मरण आते रहते हैं तो नाना प्रकार की आभाएं हमारे समीप आ जाती है। आज मैं मुनिवरों! तुम्हें माला पाठ या पाठों के भेदन करने की चर्चा करने नहीं आया हूँ, आज बहुत पुरातन काल में बेटा! ये हमने चर्चाएं की हैं। परन्तु आज का वेदमन्त्र हमारा क्या कह रहा है, मैं उन वाक्यों पर जाने के लिए आया हूँ। मुझे मेरे प्यारे महानन्द जी! ने बहुत पुरातन काल में, नाना प्रकार के वाक प्रगट किए और मुनिवरों! देखो, कुछ राष्ट्रीय चर्चाएं, कि वेद, राष्ट्र के सम्बन्ध में क्या कहता है, मानव समाज के सम्बन्ध में वेद क्या कहता है? तो मुनिवरों! देखो, एक एक वेदमन्त्र के ऊपर, जब अध्ययन किया जाता है तो सर्वत्र ब्रह्माण्ड की आभा अपने में निहित होती हुई, उसमें दृष्टिपात होती हुई, दृष्टिपात आती है मानो सर्वत्र राष्ट्र की आभाएं, उसके अन्तर्द्वन्द्व आ जाती है। हमारे यहाँ राष्ट्रवेत्ताओं ने कहा है कि राजा के राष्ट्र में, विवेकी पुरुष होने चाहिए, क्योंकि जितने विवेकी पुरुष होते हैं, बुद्धिमान होते है, तपस्वी होते है, उतना ही राजा का राष्ट्र पवित्र बन जाता है। राजा के राष्ट्र में महानता आ जाती है। क्योंकि महापुरुषों की रक्षा करने के लिए मानो देखो, राष्ट्र का निर्माण होता है। राष्ट्र का जिस भी काल में निर्माण हुआ है बेटा! वह मानव को कर्तव्यवाद में लाने के लिए हुआ है और वेद का आचार्य यह कहता है कि जो राजा, इस समाज को महानता नहीं दे

सकता, वह कोई राष्ट्र नहीं, वह कोई महान नहीं होता है।

विवेकी पुरुषों से राष्ट्र

आओ, मेरे प्यारे! इस सम्बन्ध की वार्ता प्रगट करते हुए, आज मैं तुम्हें त्रेता के काल में ले जाना चाहता हूँ, क्योंकि वह समाज, राजा को विवेकी पुरुष, क्या कह सकता है इस सम्बन्ध में, मैं तुम्हें त्रेता के काल में राजा रावण के राष्ट्र में ले जाना चाहता हूँ बेटा! मुझे स्मरण आता रहता है ज्ञान और विज्ञान की चर्चाएं आती रहती है क्योंकि यह जो समाज है यह जो राष्ट्रवाद है, यह बेटा! विज्ञान से कदापि ऊँचा नहीं बना है, यह मङ्गल की यात्रा करने वाला वैज्ञानिक हो, नाना प्रकार के अस्त्रों शस्त्रों का निर्माण करने वाला भी क्यों न हो, परन्तु यह समाज तब तक पवित्र नहीं बनता है जब तक मानो ऋषि और विवेकी पुरुष नहीं होते, और राजा, उनका मार्ग दर्शन करने वाला न हो।

लंका में वैज्ञानिक सभा

तो बेटा! मुझे आज वह वाक स्मरण आ रहे है, वह काल स्मरण आता है, जब राजा रावण के यहाँ, नाना वैज्ञानिकों का समूह एकत्रित होता। मेरे प्यारे! एक समय राजा रावण के यहाँ, एक वैज्ञानिकों की सभा हुई, वैज्ञानिकों की सभा में यह निर्णय होने वाला था कि पृथ्वी मानो अपने में कितना गुरुत्व को धारण करने वाली है। मानो इस पृथ्वी में अन्तरिक्ष भी है, आपो भी है, अग्नि भी इसको गति दे रही है, मानो इसे वायु प्राण दे रहा है। तो मेरे प्यारे! पार्थिव तत्त्वों के ऊपर कुछ विश्लेषण होने वाला था। परन्तु राजा रावण की अध्यक्षता में वह सभा हुई, उसमें बेटा! देखो, नाना वैज्ञानिक, क्योंकि राजा रावण के जो विधाता कुम्भकरण थे, वह उस काल के महान वैज्ञानिक थे। मानो देखो, नारायन्तक वैज्ञानिक थे, और उनके पुत्र मेघनाथ जी, जो इन्द्र को विजय करने वाले थे, वे भी महान वैज्ञानिक थे और भी नाना वैज्ञानिक, जैसे महात्मा भुञ्जु थे मानो आयुर्वेद के जानने वाले, आयुर्वेद के मर्म को जानने वाले अश्विनी कुमार थे, मेरे प्यारे! वह सभा हुई, परन्तु देखो, जब निर्णय

होने लगा, तो प्रातः से सायंकाल हो गया, परन्तु वैज्ञानिक अपने निर्णय को नहीं दे सके और जिस वाक पर विचार हो रहा था, उस विचार में वह असफल हो गये। राजा रावण भी असफल हो गये।

मेरे प्यारे! सायंकाल को वैज्ञानिक अपने कक्षों में जा पहुंचे, राजा रावण रात्रि के काल में, अपने विश्राम गृह में, विश्राम करने लगे, परन्तु वह चिन्तन करने लगे, आत्म चिन्तन करने लगे, कि हम विज्ञान में असफल हो गये, क्योंकि विज्ञान राष्ट्र का आभूषण कहलाता है, विज्ञान मानव की सम्पदा है, राष्ट्र की सम्पदा बन करके रहता है विज्ञान, परन्तु राजा रावण इसी चिन्तन में, मध्यम रात्रि में, एक वाक पर स्थिर हो गएं कि हम किसी महापुरुष के दर्शन करेंगे, प्रातःकाल से प्रस्थान करते हुए, महापुरुषों से कुछ आत्म चर्चाएं करेंगे। तब हमारे हृदय में आत्म शान्ति होगी। तो मेरे प्यारे! राजा रावण इसी चिन्तन में, प्रातःकाल हो गया। प्रातःकाल होते ही उन्होंने अपने मन्त्रीगणों को एकत्रित किया, और मंत्रियों से कहा हे मंत्रियों! तुम विद्यं ब्रह्मे राष्ट्रप्तप्रव्हे तुम राष्ट्र का पालन करो और हम कुछ महापुरुषों के दर्शन करने जा रहे है।

ऋषियों की शरण में राजा रावण

मेरे प्यारे! राजा रावण ने अपने वाहन में विद्यमान हो करके, वहाँ से प्रस्थान किया और भ्रमण करते हुए, मेरे प्यारे! वह शाण्डिल्य ऋषि के आश्रम में पहुंचे। महर्षि शाण्डिल्य मुनि मानो दोनों परस्पर, कुछ विचार विनिमय करने लगे, परन्तु रावण को शान्ति की स्थापना नहीं हुई उन्होंने वहाँ से भ्रमण किया और भ्रमण करते हुए मुनिवरों! देखो, महर्षि मुद्गल जी के द्वारा पर पहुंचे। महर्षि मुद्गल जी ने उनका स्वागत किया और कहा आईए, राजन! दोनों विराजमान हो गये। ऋषि से कुछ चर्चाएं हुई। परन्तु रावण के हृदय में शान्ति न हो सकी। मुनिवरों! वह भ्रमण करते हुए भयंकर वनों में, वह महर्षि कुक्कुट मुनि महाराज के द्वार पर पहुंचे। महात्मा कुक्कुट मुनि महाराज क्योंकि ब्रह्मवेत्ता थे, ब्रह्मनिष्ठ कहलाते थे, आत्म चिन्तन करने

वाले, जो महर्षि वायु मुनि महाराज के बेटा! साढ़े तीन हजारवें प्रपौत्र कहलाते थे। मुनिवरों! उन्होंने राजा का स्वागत किया और राजा ने ऋषि का स्वागत किया। चरणों की वन्दना की और वह विराजमान हो गये। उन्होंने कुछ मानो देखो, वनों के कन्द मूल राजा को पान कराए, पान कराने के पश्चात ऋषि ने कहा कहो राजन! तुम्हारा आगमन कैसे हुआ? राजा ने कहा हे प्रभु! मैं इसलिए आया हूँ कि कुछ आत्म चर्चा चाहता हूँ। मेरा अन्तरात्मा अशान्त हो रहा है। मुनिवरों! राजा व ऋषि की चर्चाएं प्रारम्भ होने लगी। उन्होंने कहा प्रभु! मैं आत्मा को जानना चाहता हूँ, यह आत्मा क्या है?

जागृत अवस्था

तो मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने महात्मा कुक्कुट मुनि महाराज ने कहा हे रावण! न तो यह आत्मा जाग्रत है, न सुषुप्ति और न स्वप्न है, यह एक रस रहने वाली चेतना है। हे राजन! मानो जब यह मानव जागरूक रहता है तो मानव नेत्रों से संसार को दृष्टिपात करता है और मन उन नेत्रों की आभा की ज्योति का विभाजन करता रहता है। एक मानव अपने कुटुम्ब का परिचय दे रहा है, यह मेरी माता है, यह पिता है, यह महापिता है यह पडपिता है, यह पुत्री है, यह माता है, यह महामाता है। परिचय दे रहा है, नेत्र दृष्टिपात कर रहे है और मन उनके रूपों को बेटा! विभाजन कर रहा है। मन संसार में एक ऐसा है, जो संसार का विभाजन करता है।

मेरे प्यारे! एक वैज्ञानिक है वह मानो देखो, आकाश गंगा में जा रहा है। आकाश गंगा बेटा! अन्तरिक्ष के गर्भ में बेटा! अपनी विचारधारा को ले जाता है। यह मन उसके साथ है। यह मानो देखो, गणना करता है। यह सप्तर्षि मण्डल है, यह ध्रुव है, यह स्वाति है, यह रोहिणी केतु है, यह मानो गन्धर्व है, यह सूर्य है, यह चन्द्रमा है। मुनिवरों! देखो, निर्णय देता है यह पुष्य नक्षत्र इत्यादि, यह एक सौर मण्डल बना हुआ है। तो यह कहाँ से मुनिवरों! देखो, विभाजन कर रहा है। यह मङ्गल है,

यह सम्बन्ध प्रतिभा कहलाती है। यह मन के द्वारा, मन ही इस संसार का विभाजन कर रहा है। मेरे प्यारे! जितना भी विभाजन हो रहा है, विभक्त क्रिया चल रही है, चाहे वह पृथ्वी के गर्भ में हो, चाहे वह लोक लोकान्तरों में हो, मेरे प्यारे! वह सर्वत्र मन की कहलाती है। मानो जैसे विश्वभान मन इस पृथ्वी के गर्भ में रहता है, परन्तु जितना भी रसों का स्वादन है, रसों का विभाजन है वह पृथ्वी के गर्भ में बेटा! मन ही कर रहा है।

स्वप्नावस्था

तो विचार विनिमय क्या, इन वाक्यों को मैं गम्भीर नहीं ले जाऊंगा, केवल तुम्हें परिचय करा रहा हूँ ऋषि ने कहा हे रावण! यह मन संसार का विभाजन कर रहा है। पिता और पुत्री का जो विभाजन हो रहा है, वह केवल मन के कारण है। क्योंकि मन यह मानो देखो, ज्ञान का प्रतिनिधि कहलाता है, ज्ञान का प्रतिनिधि होने से मानो देखो, यह अपनी आभा में परणित हो रहा है। तो मेरे प्यारे! वेद के आचार्य ने कहा हे राजन! न तो यह आत्मा जाग्रत है क्योंकि जो यह विभक्त क्रिया हो रही है, यह नेत्रों के साथ में, यह मन इसके पिछले विभाग में विद्यमान रहता है। नेत्रों ने दृष्टिपात किया और उस दृष्टि का विभाजन मुनिवरों! मानो देखो, यह मन एक क्षण समय नहीं लगने देता, यह विभाजन कर देता है। संसार का विभाजन कर देता है। मेरे पुत्रों! देखो, जब उन्होंने यह कहा कि यह जो मनं ब्रह्मे देखो, यह जागरूक में, मन के प्रकाश में मुनिवरों! देखो, यह आगे मन के विभक्त क्रिया से बेटा! मन विभाजन कर रहा है।

तो मेरे प्यारे! ऋषि ने कहा हे राजन! यह आत्मा स्वप्न है, मानो स्वप्न अवस्था में, इस मानो बेटा! संसार का निर्माण कर रहा है। इस मानव शरीर में नद, नदियाँ नहीं है, समुद्र नहीं है, परन्तु नद, नदियों का यह निर्माण कर रहा है। समुद्रों का निर्माण कर रहा है। पत्नी नहीं है, पत्नीयों का निर्माण कर रहा है, पति नहीं है, पतियों का निर्माण कर रहा है, राष्ट्र नहीं है, परन्तु राष्ट्रों का निर्माण कर रहा है।

यह मन बेटा! ऐसा विचित्र है मानो यह स्वप्न अवस्था में, अङ्कुर रूप से बेटा! संस्कार बनते है, उन संस्कारों को यह स्वप्न में साकार रूप बना करके भोक्ता बन जाता है। यह भोग रहा है, भोक्ता बना हुआ है। तो मुनिवरों! देखो, यह मन, यह स्वप्नं ब्रहे यह आत्मा के प्रकाश में संसार का भोक्ता बन रहा है। मानो यह संसार को दृष्टिपात कर रहा है। मेरे पुत्रों! नद, नदियों के निर्माण कर रहा है, यह आत्मा के प्रकाश को ले करके, यदि आत्मा का प्रकाश नहीं रहेगा तो यह मन विभाजन भी नहीं करेंगा। यह स्वप्न अवस्था भी नहीं रहेगी, तो मेरे पुत्रों! विचार आता रहता है, दर्शनों से, वेद के मन्त्रों का अध्ययन करने से ऐसा प्रतीत होता है कि मन बड़ा विचित्र है और यह आत्मा के प्रकाश में अपना कार्य, क्रियाकलाप कर रहा है। मेरे पुत्रों! ऋषि ने कहा हे राजन! यह आत्मा मानो स्वप्न अवस्था नहीं है और यह सुषुप्ति भी नहीं है।

सुषुप्ति

सुषुप्ति किसे कहते है? मन, बुद्धि, चित्त और अहङ्कार यह चतुष अन्तःकरण कहलाता है। मेरे प्यारे! देखो, यह मानव, जब सुषुप्ति में चला जाता है, तो मन, बुद्धि, चित्त, अहङ्कार अपनी साम्यावस्था में परणित हो जाते है और यह विश्राम करने लगता है। मेरे प्यारे! देखो, आत्मं ब्रह्मे यह आत्मा प्राण के साथ में मानो एक मन, एक सूत्र बना करके बेटा! आत्मा गति करता रहता है। मानो देखो, कौन जागता रहता है, याजागां ब्रह्मे आत्मा मेरे प्यारे! आत्मा जागरूक रहता है। यह प्राण के सूत्र में पिरोया हुआ है। तो विचार विनिमय क्या, वेद का ऋषि कहता है हे राजन! जब यह मानव मानो विश्राम यह मन, बुद्धि, चित्त और अहङ्कार मानो देखो, चतुष अन्तःकरण बन जाता है, अन्तःकरण वह कहलाता है जहाँ नाना वासनाएं, नाना नाना अङ्कुर रूपों से बेटा! विद्यमान रहती है। जैसे मन, बुद्धि चित्त यह जो चित्त है, इसमें नाना जन्मों के संस्कार विद्यमान होते है।

बेटा! मुझे स्मरण है ऋषि ने एक समय वर्णन कराया कि हमारे अंगिरस गोत्र में

एक श्वेताम अंगिरस मुनि हुए है। परन्तु वह अंगिरस मुनि महाराज भयंकर वनों में मानो पीपल और बड़ के पाङ्गाङ्ग को पान करता हुआ, अपने चित्त के संस्कारों का उद्बुद्ध करना चाहता था। और वह उद्बुद्ध करने के लिए तत्पर हो रहा था। परन्तु देखो, ऐसे ऋषि हुए है, जिन्होंने चित्त के मण्डल में अपने नाना जन्मों के संस्कारों को उन्होंने साक्षात्कार किया है।

आत्मा का स्वरूप

तो हे राजन! यह मन, बुद्धि, चित्त अहङ्कार अपनी साम्यावस्था में जाने से मानो मन का व्यापार समाप्त हो जाता है, यह प्राण गति करता रहता है और आत्मा इसके साथ में जागरूक रह करके बेटा! देखो, यह अप्रतं ब्रह्मे आत्मा मानो यह आत्मा एक रस रहने वाली चेतना है, न यह आत्मा सुषुप्ति है, न स्वप्न है, और न जागरूक है। मेरे प्यारे! इसी प्रकार विचार विनिमय करते हुए राजा रावण और ऋषि को बेटा! प्रातःकाल हो गया। रात्रि समय से प्रातः काल तक चिन्तन होता रहा। परन्तु प्रातःकालीन अपनी क्रियाओं से निवृत्त हुए और निवृत्त होने के पश्चात राजा ने यह प्रार्थना की, ऋषि से, कि भगवन! आप तो महान है। आपका मेरे राष्ट्र में पूर्व भी, गमन हुआ परन्तु मेरी इच्छा यह है कि आप मेरे राष्ट्र का भ्रमण करें और मेरी लंका को, यहाँ से गमन करें। मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने कहा हे राजन! मुझे इतना समय नहीं है मैं प्रभु के चिन्तन में रहता हूँ, मानो मुझे इतना समय नहीं, जो मैं तुम्हारे राष्ट्र का भ्रमण करूं। परन्तु राजा बुद्धिमान थे, पाण्डित्व उनके हृदय में था ऋषि से प्रार्थना की, क्योंकि ऋषियों का हृदय प्रायः उदार होता है। उन्होंने कहा उदरं ब्रव्हे कृताम् हे राजन! चलो, मैं तुम्हारी लंका में भ्रमण करूंगा।

महर्षि कुक्कुट मुनि लंका में

मेरे प्यारे! देखो, अपने वाहन में विद्यमान करके ऋषि को और प्रातःकालीन बेटा! राजा ने गमन किया और नाना ऋषियों से मिलन करते हुए, लंका में उनका प्रवेश हुआ। मुनिवरों! देखो, राजा ने ऋषि को राष्ट्रगृह में प्रवेश कराया, और महारानी

मंदोदरी से कहा हे देवी! ऋषि को नाना प्रकार के पदार्थों का पान कराओ। तो मेरे प्यारे! देखो, महारानी मंदोदरी ने नाना प्रकार के पदार्थों को पान कराया और पान कराने के पश्चात ऋषि से राजा ने कहा प्रभु! मैं मन्त्रियों से कुछ वार्ता प्रगट करने के लिए राज्यसभा जा रहा हूँ। वे मंत्रियों में पहुंचे। महारानी मंदोदरी ने नाना प्रकार के पदार्थों को पान करा करके कहा हे प्रभु! जब आप लंका से प्रस्थान करोगे, तो मेरे पति को भी कोई ऊँची शिक्षा देते जाना।

मेरे प्यारे! महारानी मंदोदरी ने जब ऐसा कहा तो ऋषि ने कहा देवी! मैं प्रयत्नशील रहूँगा। मेरे प्यारे! संसार में कोई मेरी पुत्री ऐसी नहीं है, कोई देवी ऐसी नहीं है जो अपने पति में किसी प्रकार का अवगुण चाहती हो। वह सदैव यह चाहती है मेरा पति बुद्धिमान भी हो, ब्रह्मवेत्ता भी हो, ब्रह्मनिष्ठ भी हो और मानो नाना प्रकार के पराक्रमों वाला होना चाहिए। मेरे प्यारे! देखो, इसी धारणा को ले करके, महारानी मंदोदरी ने ऋषि से प्रार्थना की, इतने में राजा रावण मंत्रियों से वार्ता प्रगट करके आ पहुंचे। उन्होंने कहाआईए, भगवन! मैं आपको लंका का भ्रमण कराने जा रहा हूँ।

लंका की वंशावली

मेरे प्यारे! देखो, ऋषि और राजा दोनों ने गमन किया, तो मुनिवरों! देखो, राजा उस स्थली पर ले गये, जिस भवन का निर्माण महाराजा कुबेर ने किया था। क्योंकि हमारे यहाँ जो लंका की वंशावली है, लंका का जो वंशलज है, वह इस प्रकार का माना जाता है कि इस लंका को राजा रावण से पूर्व, इस लंका का स्वामी महाराजा कुबेर था और महाराजा कुबेर ने यह लंका महाराजा महिदन्त से ली थी और महाराजा महिदन्त ने यह लंका महाराजा शिव से ली थी और महाराजा शिव ने यह लंका महाराजा विक्रम से ली थी और महाराजा विक्रम से पूर्व इस लंका का स्वामी रेणकेतु नामक राजा था और रेणकेतु नामक राजा से पूर्व, लंका का स्वामी कात्यानी था, कात्यानी से पूर्व लंका का स्वामी मान्धाता था मान्धाता से पूर्व लंका

का स्वामी कृतिभानु था, कृतिभानु से पूर्व लंका का स्वामी कामभुक था, कामभुक राजा से पूर्व लंका का स्वामी ऋणीत था और ऋणीत नाम के राजा से, पूर्व, लंका का स्वामी सामकृति था और सामकृति से पूर्व, लंका का स्वामी रामेणकेतु था और रामेणकेतु से पूर्व लंका का स्वामी तृतिभानु था।

बेटा! मैं लंका के वंशलजों का वर्णन करने नहीं जा रहा हूँ, परिचय केवल यह देने जा रहा हूँ कि राजा रावण ने ऋषि से कहा कि महाराज! यह जो भवन है, यह कुबेर भवन कहलाता है। मानो इसका निर्माण महाराजा कुबेर ने किया। बेटा! ऋषि का अन्तरात्मा प्रसन्न हो गया और उन्होंने कहा धन्य है प्रभु! आप मुझे मानो भव्य भवनों का दिग्दर्शन करा रहे है, राजा रावण के यहाँ बेटा! जो स्वर्ण के भवन थे, उन्होंने दृष्टिपात कराए। उन्होंने कहा कि महाराज! यह स्वर्ण के भवन है जब सर्वत्र मानो भवनों का निरीक्षण कराने के पश्चात वह मुनिवरों! देखो, जो राजा रावण के राष्ट्र में, नाना प्रकार की विज्ञानशालाएं थी, उन विज्ञानशाला में ले गये।

लंका में विज्ञानशाला

उन्होंने कहा हे प्रभु! यह मेरे राष्ट्र में, मानो देखो, यह पृथ्वी अनुसन्धान शाला है। यहाँ पृथ्वी के ऊपर अनुसन्धान हो रहा है, इस पृथ्वी के गर्भ में कितनी दूरी पर कौनसा खनिज विद्यमान है, यहाँ रत्नों के ऊपर, मानो यहाँ जितना खनिज उत्पन्न होता है उसके ऊपर प्रायः अनुसन्धान होता रहता है। ये नाना वैज्ञानिक है जो अनुसन्धान करते रहते है। मुनिवरों! देखो, वह वहाँ से भी भ्रमण कराते हुए, वह जल अनुसन्धानशाला में ले गये, उन्होंने कहा कि महाराज! यह जल अनुसन्धानशाला है, इसमें मानो देखो, विज्ञान की नाना प्रकार की आभाओं का दिग्दर्शन किया जाता है। कि जल में कितना प्राणत्व वृत्त्यं ब्रव्हे वृताम् मुनिवरों! देखो, नाना प्रकार का जो खनिजं प्रहे मानो आपो में विद्यमान रहता है, उसके ऊपर प्रायः अनुसन्धान करने वाले नाना वैज्ञानिक हुए, मुनिवरों! देखो, राजा इस अनुसन्धानशाला से भ्रमण करते हुए वह मेरे प्यारे! देखो, अग्नि अनुसन्धानशाला में

पहुंचे। उन्होंने कहा हे प्रभु! मेरे राष्ट्र में यह अग्नि अनुसन्धानशाला है, यहाँ अग्नि के ऊपर नाना प्रकार के मानो देखो, आभाओं में रमण करने वाले वैज्ञानिक है, जो अग्नि के ऊपर मानो देखो, कितने प्रकार की अग्नि है, क्या क्या यह अग्नि कर सकती है, इस अग्नि के ऊपर नाना प्रकार के परमाणु, अणु त्रिसरेणु चतुषरेणु नाना प्रकार के मानो परमाणुओं को जाना जाता है। अग्नि में कितना धाराएं है, उन धाराओं को जानने के लिए, वैज्ञानिक तत्पर है। मेरे प्यारे! देखो, वह जब अग्नि अनुसन्धानशाला में ले गएं तो उसके पश्चात, वह सूर्य अनुसन्धानशाला, कि महाराज! यहाँ वैज्ञानिक सूर्य की किरणों को अपने में आकर्षित करते रहते है, यन्त्रों में, इन किरणों को ले करके और वह सूर्य की किरण से जो शक्ति लेते है उससे देखो, वाहन गति करते रहते है।

नारायान्तक की लोक यात्रा

तो मेरे प्यारे! देखो, राजा रावण के यहाँ नाना प्रकार का विज्ञान, ऋषि बहुत प्रसन्न हुए, ऋषि ने कहा धन्य है। बेटा! भ्रमण करते हुए वह राजा रावण के पुत्र, जो नारायन्तक थे, उनके द्वार पर पहुंचे, उन्होंने कहा प्रभु! यह मेरे राष्ट्र में, यह चन्द्र अनुसन्धानशाला है यहाँ चन्द्रमा में जो यातायात बना हुआ है, उसके ऊपर मेरे पुत्र नारायन्तक अनुसन्धान करते है नाना वैज्ञानिक, उनकी विज्ञानशाला में थे। राजा रावण बेटा! जब यह दृष्टिपात कराने लगे तो ऋषि ने नारात्तक से कहा हे नारायन्तक। तुम्हारी चन्द्रमा में जाने की कितनी गति है? उन्होंने कहा हे प्रभु! मैं मानो अपने यन्त्र में जब विद्यमान होता हूँ तो जब मैं यहाँ से उड़ान उड़ता हूँ पृथ्वी से, तो मुझे एक रात्रि और एक दिवस पर्याप्त होते है और मैं चन्द्रमा में चला जाता हूँ। मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने कहा धन्य है। राजा रावण के यहाँ एक वाहन था, जिस वाहन का नाम ऋणी लोकाश्री यन्त्र कहते थे, उस यन्त्र में विद्यमान हो करके बेटा! नारायन्तक इस पृथ्वी से उड़ान उड़ करके बेटा! वह चन्द्रमा में, चन्द्रमा से उड़ान उड़ते मङ्गल में, मङ्गल से उड़ान उड़ते, वह शुक्र में, शुक्र से उड़ान उड़ते

बेटा! वह बुध में, और बुध से उड़ान उड़ते वह रेंगनी कृति लोकों में रेंगनी कृति लोकों से उड़ान उड़ते स्वाति लोकों में, स्वाति लोकों से उड़ान उड़ते बेटा! वह मानो शनि मण्डल में, शनि मण्डल से उड़ान उड़ते तो बेटा! कृति लोकों में, बेटा! वह मूल मंगला मानो वह यन्त्र बहत्तर लोकों का भ्रमण करके पुनः इस पृथ्वी मण्डल पर आ जाता था। बेटा! इस प्रकार का विज्ञान राजा के राष्ट्र में निहित था, जिस विज्ञान की तुलना नहीं की जा सकती।

आयुर्वेद

विचार विनिमय क्या, राजा रावण ने जब बेटा! यन्त्रों का दिग्दर्शन कराया, विज्ञानशालाओं में, तो ऋषि का अन्तरात्मा प्रसन्न हो गया। ऋषि ने कहा धन्य है राजन! तुम्हारा राष्ट्र मुझे बहुत प्रिय लग रहा है, मैं बहुत प्रसन्न हो रहा हूँ। मेरे पुत्रों! उन्होंने आगे भ्रमण किया और मुनिवरों! वह आयुर्वेद अनुसन्धानशाला में ले गये, यहाँ महात्मा भुञ्जु मुनि महाराज के दोनों पुत्र अश्विनी कुमार, मेरे प्यारे! आयुर्वेद के ऊपर अनुसन्धान करते थे। मुनिवरों! वह अश्विनी कुमारों के द्वारा ले गये, उन्होंने कहा कि महाराज! यह आयुर्वेद अनुसन्धानशाला है। उन्होंने कहा हे अश्विनी कुमारों! तुम्हारी आयुर्वेद में कितनी गति है? उन्होंने कहा कि महाराज! हमारी गति आयुर्वेद में इतनी है कि हम मानव के शरीर के और मानव के शरीर से हृदय को, हम दोनों को पृथक पृथक कर देते है और छह छह माह तक, औषधियों में नृत्त करके और छह माह के पश्चात दोनों का मिलान करके, पुनः शरीर में उसी प्रकार की गति आ जाती है। मेरे प्यारे! देखो, इस प्रकार का विज्ञान, राजा के राष्ट्र में, ऋषि बहुत प्रसन्न हुए, और भी नाना प्रकार के देखो, उन्होंने आयुर्वेद के तथ्यों को, ऋषि के समीप निर्णित किया।

ऋषि द्वारा लंका मूल्यांकन

मेरे प्यारे! देखो, आगे भ्रमण करते हुए, वह मार्ग शालाओं में ले गये, जहाँ सुन्दर सुन्दर मार्गशालाएं थी, मार्ग थे मानो देखो, ऋषि बहुत प्रसन्न हो गये, और राजा ने

जब सर्वत्र राष्ट्र का भ्रमण कराया, ऊँचे ऊँचे भवनों का, विज्ञानशालाओं का मानो चन्द्रमा की यातायात, नाना प्रकार के लोक लोकान्तरों की उड़ान उड़ने वाले यन्त्र, ऋषि ने जब यह सब भ्रमण कर लिया, तो राजा ने ऋषि से यह कहा कहिए, भगवन! आपको मेरा राष्ट्र कैसा प्रतीत हुआ? मेरे प्यारे! ऋषि ने एक वाक कहा हे राजन! मैंने तुम्हारी लंका में भ्रमण किया है, नाना प्रकार की विज्ञानशालाओं को दृष्टिपात किया, नाना प्रकार की तुम्हारे यहाँ स्वर्ण के गृह है, मानो ऊँचे ऊँचे भवन है, पृथ्वी अनुसन्धानशाला, जल अनुसन्धानशाला, वायु अनुसन्धानशाला, अग्नि अनुसन्धानशाला, चन्द्र और सूर्य अनुसन्धानशाला और तुम्हारे यहाँ आयुर्वेदशाला भी है। परन्तु हे रावण! मुझे ये शालाएं दृष्टिपात करके ऐसा प्रतीत हुआ है कि जैसे तुम्हारी लंका में कुछ काल में अग्नि प्रदीप्त हो जाएगी।

ऋषियों का तप

मेरे प्यारे! जब उन्होंने यह कहा तो राजा ने नत मस्तक हो करके कहा प्रभु! आप ने ऐसा क्यों कहा? उन्होंने कहा हे राजन! मैंने इसलिए कहा है कि तुम्हारे राष्ट्र में नाना प्रकार की शालाएं है, परन्तु तुम्हारे राष्ट्र में कोई चरित्रशाला नहीं है। और जिस राजा के राष्ट्र में, चरित्र नहीं होता है वह राष्ट्र आज नहीं तो कल, अवश्य नष्ट हो जाएगा। हे राजन! कोई महापुरुष तुम्हारी लंका में आ करके, अग्नि प्रदीप्त करके चला जाएगा, मानो यह विज्ञानशाला तुम्हारी नष्ट हो जाएगी, ये ऊँचे ऊँचे जो भवन हैं, यह मानो समाप्त हो जाएंगे। तो मेरे प्यारे! देखो, यह राजा को कौन कह सकता है, यह विवेकी पुरुष कह सकता है, इन वाक्यों को, विवेकी ऋषि कह सकता है। मेरे प्यारे! देखो, ऋषियों का तप महान होता है। उनमें साहस होता है, देखो, जो यथार्थ वाक उच्चारण कर सकते है और राष्ट्र की रूढ़ियों को समाप्त करने की जो प्रेरणा दे सकता है, वह तपस्वी दे सकता है।

तो मेरे प्यारे! विचार विनिमय क्या, आज का हमारा यह वाक क्या कहता है आज का वाक हमारा यह कह रहा है कि समाज को ऊँचा कैसे बनाया जाए? समाज

ऊँचा उस काल में बनता है जबकि मुनिवरों! देखो, राजा महान होता है, राजा पवित्र होता है। राजा अपने राष्ट्र में रूढ़ि नहीं रहने देता है, वह मानो देखो, एकोकी अपने में तपस्वी होता है और समाज को कर्तव्यवाद की प्रेरणा देता है और कर्तव्यवाद में उसको लगा देता है। मेरे प्यारे! देखो, ऋषि कहता है हे राजन! तुम्हें प्रतीत है कि ऐसा मैं क्यों दृष्टिपात कर रहा हूँ, क्योंकि यह तुम्हें प्रतीत होगा, जब तुम्हारा राज्याभिषेक हुआ था, यह लंका जब कुबेर से विजय कर ली थी, उस समय महात्मा पुलस्त्य की यह इच्छा थी कि राजा रावण, इस लंका का स्वामी बनें, परन्तु तुम्हारा राज्याभिषेक होना था, मुझे उस समय सभापति बनाया गया और राज्याभिषेक की मुझे प्रेरणा दी, परन्तु मैंने तुम्हारे मस्तिष्क का अध्ययन किया, शरीर का चित्रण करके, उस समय मैंने यह कहा था कि मैं इसका राज्याभिषेक नहीं करूंगा, तो महात्मा पुलस्त्य ने कहा कि क्यों? क्योंकि इसको इस राष्ट्र का अधिकार नहीं है, क्योंकि अधिकारी को यदि वह वस्तु प्राप्त हो जाए तो वह उसका सदुपयोग करेगा और जब अनधिकारी को कोई वस्तु प्राप्त हो जाती है तो वह उसका दुरूपयोग करके, वह समाज को भी मानो देखो, अपकीर्ति देगा और समाज को महान नहीं बनाएंगा। हे राजन! यदि राजा बन करके, समाज को महानता नहीं दे सकता, समाज को कर्तव्यवादी नहीं बना सकता, ऐसे राजा को मानो देखो, समाज का धिराज नहीं बनाना चाहिए।

तो मेरे प्यारे! यह वाक महात्मा कुक्कुट ने कहा था। मेरे पुत्रों! देखो, विचार विनिमय क्या, आज के हमारे इन वाक्यों का, कि हमें अपने जीवन में, अपने राष्ट्र को ऊँचा बनाने में बेटा! देखो, तपस्वी होना होगा, क्योंकि बिना तप के हम समाज को यथार्थ मार्ग नहीं दर्शा सकते।

रूढ़ियों से राष्ट्र हानि

विचार विनिमय क्या, मेरे पुत्रों! देखो, वाक यह क्या कह रहा है, कि राष्ट्र में नाना प्रकार की रूढ़ियाँ नहीं होनी चाहिए। मेरे प्यारे महानन्द जी! यह कहा करते है कि,

राजा के राष्ट्र में धर्म के नाम पर, नाना प्रकार की रूढ़ियाँ होती है, वह राष्ट्र को ऊँचा नहीं बनने देती। इसीलिए नाना रूढ़ि नहीं होनी चाहिए, धर्म मानो देखो, बहुवचन नहीं है वह एकोकी वचन कहलाता है। धर्म एक होना चाहिए धर्मं ब्रह्मे धर्म मेरे प्यारे! देखो, नेत्रों में धर्म रहता है, मानव की पांचों इन्द्रियों में, ज्ञानेन्द्रियों में धर्म रहता है, उस धर्म के ऊपर अपनी मानवीयता का निर्वाचन कर लेना चाहिए। यह है बेटा! आज का वाक्, आज के वाक उच्चारण करने का अभिप्राय हमारा क्या मुनिवरों! देखो, समाज को, महान बनाना है, तो विवेकी पुरुष होने चाहिए, यह संसार, यह राष्ट्र बेटा! विज्ञान से ऊँचा नहीं बनता, यह भवनों से ऊँचा नहीं बनता, यह जो ऊँचे ऊँचे गृह, इनसे संसार में महानता नहीं आती, महानता आती है जब मानव के द्वारा चरित्र होता है, चरित्रशालाएं होती है, राजा का राष्ट्र पवित्र बन जाता है समाज में महानता आ जाती है।

यह है बेटा! आज का वाक्, आज के वाक उच्चारण करने का अभिप्राय हमारा क्या, मुनिवरों! देखो, समाज को, मानवता को ऊँचा बनाना है तो हमें विवेकी पुरुषों की रक्षा करनी होगी, विवेकी पुरुष राजा के राष्ट्र में होने चाहिए। मुनिवरों! देखो, विवेकी पुरुषों की सेवा करना, हमारा कर्तव्य कहलाता है। यह है आज का हमारा वाक्, अब मुझे समय मिलेगा, मैं तुम्हें शेष चचाएं कल प्रगट करुंगा। आज का वाक समाप्त, अब वेदों का पठन पाठन होगा।

5.यमाचार्य व नाचिकेता संवाद-820509

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भान्ति, कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेद मन्त्रों का पठन पाठन किया। हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का, प्रसारण होता रहता है। जिस पवित्र वेदवाणी में, उस मेरे देव, परमपिता परमात्मा की प्रतिभा का वर्णन किया जाता है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा वरणीय माने जाते है। जो मानव उसका वरण कर लेता है, अथवा उसे वर लेता है, वह प्रायः उसी को प्राप्त हो जाता है। आज का हमारा वेद मन्त्र, नाना प्रकार की आभाओं का वर्णन कर रहा है। मानो वे परमपिता परमात्मा के उद्गीत अथवा उसके गुणवादन कर रहा है। जिस प्रकार यह पृथ्वी ब्रह्माण्ड की गाथा गाती रहती है, जैसे माता का पुत्र, माता की गाथा गाता रहता है, उसी प्रकार प्रत्येक वेद मन्त्र, उस ब्रह्म की गाथा गा रहा है अथवा उसके गुणों का वर्णन कर रहा है क्योंकि जितना भी यह जड़ जगत अथवा चैतन्य जगत हमें दृष्टिपात आ रहा है, उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में, वह मेरा देव दृष्टिपात आ रहा है। क्योंकि वह मूलों में दृश्यमान रहता है। जब हम उसके ऊपर विचार विनिमय करते है, तो सर्वत्र विज्ञान की आभाएं, मानव के समीप आ जाती है। क्योंकि ज्ञान और विज्ञान, यह परम्परागतों से ही, मानव के मस्तिष्कों में नृत्त करता रहा है। मुझे बेटा! बहुतसा काल स्मरण आता रहता है, जिन्होंने वेद मन्त्रों के ऊपर अनुसन्धान किया और उन्होंने अपने ज्ञान और विज्ञान को अपने दैनिक, जो मानव के क्रियाकलाप है, जितना दैनिक चलन है उसमें वह सदैव अपने में आभा में रमण करता रहा।

विज्ञान की पराकाष्ठा

आओ, बेटा! आज मैं तुम्हें कुछ ऋषियों की वार्त्ताएं, आज मैं तुम्हें उद्दालक गोत्र के ऋषि विश्वश्रवा के द्वार पर ले जाना चाहता हूँ। क्योंकि जहाँ मानव अपने मोक्ष के लिए, अपनी मानवीयता को, दर्शन आभा में रमण कराता रहा है। जिसका

विज्ञान एक महान पराकाष्ठा पर रहा है। परन्तु हमारे यहाँ यह माना गया है, कि एक मानव लोकों की यात्रा करने के लिए तत्पर हो रहा है, परन्तु उस विज्ञान का मूल, उसी काल तक रहता है जबकि मानव में आध्यात्मिकवाद की आभा रहती है। आध्यात्मिकवाद की पिपासा बनी रहती है। और यदि आध्यात्मिकवाद की पिपासा नहीं रहती, तो मानव का ज्ञान और विज्ञान एक राष्ट्रीय आभा बन करके रह जाता है।

बहुत पुरातन काल की वार्त्ताएं है, एक समय महाराजा विश्वश्रवा, उद्दालक गोत्र में जन्म लेने वाले, ऋषि विश्वश्रवा एकान्त स्थली पर विद्यमान थे। वे ज्ञान और विज्ञान की उड़ाने उड़ रहे थे और विचार कर रहे थे कि मैं अपने में मोक्ष पाना चाहता हूँ। क्योंकि ये जो संसार की नाना प्रकार की तरंगे है, मान और अपमान का यह जो विशाल जगत है, मैं इस विशाल जगत से उपराम होना चाहता हूँ। यह विचार आ रहा था, ऋषि की जिज्ञासा बन रही थी, तीव्र विवेकी बन करके, वह अपने में मानो महान बनना चाहते थे। बेटा! भयंकर मानो निर्जन वृक्षों की आभा में, रमण करता हुआ, ऋषि चिन्तन कर रहा था, इतने में उनके आश्रम में बेटा! महर्षि विभाण्डक मुनि महाराज का गमन हुआ, और विभाण्डक जी ने कहा कहो भगवन! आप क्या चिन्तन कर रहे हो? उन्होंने कहा मैं एक वेदमन्त्र के ऊपर अध्ययन कर रहा हूँ। वेदमन्त्र यह कहता है यज्ञनं ब्रह्मे कृतां देवं दधि ब्रह्मा कृत अस्सुते दिव्या, क्या भगवन! जितना मेरे द्वारा द्रव्य है, मैं उस द्रव्य का हूत करता हुआ अथवा याग करता हुआ, अपने को मैं परलोक में ले जाना चाहता हूँ। अथवा द्यौ लोक में ले जाना चाहता हूँ।

द्यौ से यज्ञ समन्वय

मेरे प्यारे! जब उन्होंने यह कहा तो विभाण्डक मुनि ने कहा हे उद्दालक! तुम्हारे इस वंश में नाना प्रकार के ऋषि हुए है, परन्तु उन ऋषियों की परम्परा, उनका चलन यह रहा है कि भौतिक विज्ञान और आध्यात्मिक विज्ञान दोनों का समन्वय

करते रहे है। तुम्हें भी दोनों प्रकार के विज्ञान का समन्वय करते हुए, तुम्हें अग्रणीय बनना है। और तुम मानो देखो, इस मार्ग को प्राप्त कर सकते हो। बेटा! उन्होंने कहा धन्य है प्रभु! यह तो मैं विचारता ही रहता हूँ।

परन्तु विभाण्डक मुनि ने एक और वाक कहा कि तुम जिन देवताओं के सम्बन्ध में याग करना चाहते हो उन देवताओं को तुम जानते हो? विश्वश्रवा ने कहा प्रभु! मैं कुछ जानता हूँ। मानो जिस याग को मैं करने जा रहा हूँ उसका देवता सूर्य कहलाता है। वह प्रकाश के देने वाला है, अदिति कहलाता है, वह प्राचीदिक कहलाता है। मानो उसका समन्वय द्यौ लोक से रहता है। क्योंकि द्यौ मण्डल में एक अग्नि, विशाल अपना प्रकाश दे रही है और द्यौ उस मानव के शरीर में समाहित हो रहा है। मानो द्यौ ही एक ऐसा है, जो हमारे शब्दों को मानो देखो, द्यौ में प्रवेश कर देती है। वही शब्द अन्तरिक्ष को ऊँचा बनाते है। मानो वही द्यौ, सूर्य को प्रकाश देती है, और सूर्य उससे प्रकाशित होता है। वही द्यौ है, जो चन्द्र लोकों को प्रकाशित करके, संसार को अमृत बहाने लगती है। परन्तु वही द्यौ है मेरे प्यारे! देखो, जो आकार बन करके, सत्य के साथ में, द्यौ लोकों को शब्द प्राप्त होता रहता है। मानो यह द्यौ है जो एक दूसरे ब्रह्माण्ड, एक दूसरे लोक को अपने में धारण कर रही है। जिस प्रकार माता के गर्भस्थल में शिशु, मानो शिशु को धारण करने वाली माता वसुन्धरा बन करके और वह उसे धारण कर ही है, इसी प्रकार जैसे यह पृथ्वी माता, नाना प्रकार के खनिजों का, निर्माण करके उनको धारण कर रही है, जिस प्रकार मानो देखो, यह वसुन्धरा द्यौ बन करके, सर्वत्र ब्रह्माण्ड को अपने में धारण कर रही है।

लोकों का सहभागिता

जैसे मुनिवरों! देखो, परमपिता परमात्मा इस सर्वत्र ब्रह्माण्ड को अपने में स्थिर किए हुए, मानो अपने में धारण किए हुए है। मेरे प्यारे! वह मेरी प्यारी माता वसुन्धरा कहलाती है। वसुन्धरा ममत्व को धारण करने वाली, वसुन्धरा! तू इस

संसार को अपने में धारण कर रही है। मानो जैसा सूत्र पिरोया हुआ है, एक मण्डल, दूसरे मण्डल की सहायता कर रहा है। एक लोक, दूसरे को प्रकाशित कर रहा है। एक मण्डल, दूसरे को धारण कर रहा है। यह कैसा बेटा! ब्रह्मचक्र चल रहा है। नाना आकाश गंगाएं उसमें पिरोई हुई है बेटा! उस आकाश गंगा में नाना सौर मण्डल पिरोएं हुए है उन सौर मण्डलों में मुनिवरों! देखो, एक एक निहारिका पिरोई हुई है। वाह रे, मेरे देव! तू कितना वैज्ञानिक है, तू कितना महान है मानो देखो, एक ही सौर मण्डल में नाना कृतियाँ कहलाती है। नाना कृतियों का एक आकाश गंगा का मण्डल बनता है। नाना आकाश गंगाओं का, मण्डल बन करके बेटा! एक गन्धर्व मण्डल बनता है। एक गन्धर्व मण्डल को, मण्डलानि नाना मण्डलों के बेटा! नाना लोकों का निर्माण होता है।

तो मेरे प्यारे! यह कैसी ममत्व को धारण करने वाली, माता वसुन्धरा है, जो इस ब्रह्माण्ड को अपने में बेटा! धारण कर ही है परन्तु क्रियाकलाप हो रहा है, मण्डल गतियाँ कर रहे हैं। मेरे प्यारे! एक सूत्र में पिरोए हुए है, जैसे माला में नाना प्रकार के मनके है और धागे से समन्वय हो करके, माला बन जाती है, उसी प्रकार की यह ब्रह्म माला है। कैसी प्रिय माला है? कैसा अनुपम बेटा! यह आनन्दमयी मानो ब्रह्मचक्र चल रहा है, जो नाना प्रकार के लोक लोकान्तर बेटा! उसमें गति कर रहे है। संसार को चला रहे है। नाना पृथ्वियाँ चल रही है, नाना सूर्य चल रहे है नाना ध्रुव गतियाँ कर रहे है, नाना सौर मण्डल बेटा! एक दूसरे में प्रतिष्ठित हो रहे है।

मोक्षार्थी महर्षि विश्वश्रवा

मेरे पुत्रों! मैं विशेष चर्चा या परमपिता परमात्मा या माता वसुन्धरा के गर्भ में जाना नहीं चाहता हूँ, परन्तु विचार क्या, मेरे प्यारे! महर्षि विभाण्डक ने कहा हे उद्दालक विश्वश्रवा! तुम्हारा जीवन धन्य है। यदि तुम इस सौर मण्डल में गति करना चाहते हो मानो तुम अपने को मुमुक्षू होना चाहते हो तो माता वसुन्धरा की गोद में, उन लोरियों को पान करना चाहते हो, जिनको पान करके मानव अमृत को प्राप्त हो

जाता है। देवता बन जाता है, देवपुरी को प्राप्त हो करके, ब्रह्म की चरी को चरने लगता है। मेरे प्यारे! देखो, जब यह वाक महर्षि विभाण्डक ने उन्हें उच्चारण किया तो ऋषि मौन हो गये। मेरे प्यारे! कहीं से भ्रमण करते हुए, शाण्डिल्य गोत्रीय, महर्षि श्वेतकेतु जी वहाँ आ पहुंचे। महाराजा श्वेतकेतु ने दोनों ऋषियों के विचारों को श्रवण करके, मग्न हो गये, उन्होंने कहा धन्य है, तुम याग करो।

तो मेरे प्यारे! देखो, महाराजा विश्वश्रवा ने मोक्ष की अभिलाषा से सर्वत्र जो द्रव्य था, उसका याग में हूत कर दिया। नाना ब्राह्मण, नाना ऋषि, उद्गान गाने वाले, उद्गीत गा रहे थे। मानो उद्गान चल रहा है, अग्नि देवताओं के सम्मुख एकत्रित हो करके बेटा! देवताओं को भोज्य प्रदान कर रही है। जैसे मेरी प्यारी माता, भोजनालय में अन्न को तपा करके मानो अपने पुत्रों! और अपने कुटुम्ब को, आहारों से परणित कर देती है, उसी प्रकार मेरे पुत्रों! देखो, अग्नि अपने में साकल्य को ले करके, इस वायुमण्डल को पवित्र बना रही है। जैसे, दर्शनों की गाथा विशुद्ध रूप से गाने वाला, वायुमण्डल को पवित्र कर देता है। मानो गृह को, मेरी प्यारी माता जब गान गाने लगती है, उद्गीत गाने लगती है, अपने प्यारे पुत्रों! को ब्रह्म की आभा, ब्रह्म की जिज्ञासा में परणित करा देती है। वह अपने गृह का निर्माण, गृह को विशुद्ध बना रही है इसी प्रकार मेरे प्यारे! देखो, ऋषि हूत कर रहा है, देवताओं का दूत जो अग्नि है, वह परमाणु ले करके प्रसारण कर रहे है वह प्रसारण करती हुई आभा में रमण करा रही है।

उद्दालक गोत्र

ऐसा मुझे स्मरण है बेटा! वह याग गति करता रहा। परन्तु कुछ समय के पश्चात जब याग समाप्त हुआ तो मुनिवरों! देखो, याग के सम्पन्न होने पर विश्वश्रवा दक्षिणा हृदय से परणित करने लगे, बहुतसी गऊएं, मानो उसमें कुछ वृद्ध थी। मानो उनका सात वर्षीय पुत्र बालक नचिकेता ने कहा हे पितर! आप जो द्रव्य अग्नि को प्रदान कर रहे हो, ब्रह्मवेत्ताओं को प्रदान कर रहे हो, परन्तु मैं आपका पुत्र हूँ, मैं भी

आपकी सम्पदा हूँ, आपका नामोकरण हूँ, आप मुझे भी प्रदान कर दीजिए। मुझे किसको दोगे? आवेश में आ करके विश्वश्रवा ने कहा हे ब्रह्मचारी! तुझे में मृत्यु को दूँगा। मृत्यु का नामोच्चारण, श्रवण करते ही बालक नचिकेता मौन हो गएं परन्तु देखो, जब विश्वश्रवा ने अपनी दक्षिणा का कार्य समाप्त किया और वह रात्रि के काल में विश्राम गृह में पहुंचे, वह विश्राम करने लगे, तो बालक नचिकेता उनके द्वार पर पहुंचा, बालक नचिकेता ने पिता के चरणों को स्पर्श किया और पिता से कहा हे पितर! हमारा जो यह वंश है, वह उद्दालक गोत्रीय वंश कहलाता है और उद्दालक गोत्र के वंश का जो निकास है, वह हरितत गोत्रों से हुआ है और हरितत गोत्रों का जो निकास है। वह अंगिरस गोत्रों से हुआ है, और अंगिरस गोत्रों का जो निकास है वह ब्रह्मा के पुत्र अथर्वा से हुआ है। परन्तु हमारा जो इतना विशाल वंशलज चल रहा है, इनमें कोई ऐसा मानव नहीं हुआ जो मिथ्यावादी हो, उनका वाक सदैव सत्य रहा है। मेरी भी इच्छा यह है कि आपने मुझे मृत्यु को कहा है, अब मुझे आज्ञा दीजिए, अब मैं मृत्यु को प्राप्त हो जाऊं। मेरे प्यारे! विश्वश्रवा ने कहा हे ब्रह्मचारी! जाओ, तुम मृत्यु को प्राप्त हो जाओ। अब बालक नचिकेता ने कोई अपराध तो किया नहीं था, पापाचार नहीं किया था, परन्तु पिता के गृह को त्याग करके, वह भ्रमण करते हुए विश्वश्रवा के कुलं पुत्राणि गच्छताम् भ्रमण करते हुए बेटा! मृत्यु आचार्य के गृह में प्रवेश किया।

यमाचार्य का गृह

मृत्यु आचार्य के द्वार पर उनकी पत्नी से बोलेहे मातेश्वरी! आचार्य कहाँ है? उन्होंने कहा हे ब्रह्मचारी! आचार्य भ्रमण करने गएं है। आओ, तुम जल, अन्न का पान करो। उन्होंने कहा मातेश्वरी! जब तक मैं अपने प्रश्नों का उत्तर प्राप्त नहीं करूंगा, तब तक मैं, अन्न, जल का पान नहीं करूंगा। मुझे अपने को मृत्यु को प्रदान करना है। मेरे प्यारे! उनकी पत्नी व्याकुल हो गई, उसने कहा कि जिस गृह में मानो देखो, ब्रह्मवेत्ता बालक, ब्रह्मचारी अन्न, जल से पीड़ित रहता है, वह गृह अशुद्ध हो जाता है। क्योंकि

वह ब्रह्मचारी अपने पापों को त्याग जाता है, और उस गृह के पुण्य ले जाता है। पत्नी व्याकुल हो रही थी, ब्रह्मचारी नचिकेता द्वार पर स्थित हो गये। तीन रात्रि, तीन दिवस हो गये, उन्होंने अन्न, जल का पान नहीं किया। परन्तु देखो, तीसरे दिवस, यमाचार्य, जिन्होंने मृत्यु को विजय कर लिया था उन्होंने गृह में प्रवेश किया, पत्नी व्याकुल हो रही थी, पत्नी ने कहा प्रभु! हमारे द्वार पर बालक नचिकेता उद्दालक विद्यमान है, उसने कोई अन्न, जल का पान नहीं किया है, तीन दिवस, तीन रात्रि हो गये।

देवपुरी

मेरे प्यारे! यमाचार्य अपनी पत्नी के वाक्यों का श्रवण करके द्वार पर आए और द्वार पर कहा बाल काण्डं ब्रह्मे व्रतां देहि असुतं ब्रीहि कृतां दिव्य गतं प्रव्हा स्वस्ति हे ब्रह्मचारी! तुम अन्न, जल से पीड़ित हो, मानो तुम्हें तीन वर देता हूँ, जो इच्छा हो, वह स्वीकार करो। बालक नचिकेता ने कहा हे पितर! हे आचार्य! प्रतिष्ठायाँ स्वस्ति ब्रह्मा मानो देखो, मेरे पिता ने जिस अभिलाषा से सर्व द्रव्य दान कर दिया है, मेरे पिता की वह अभिलाषा पूर्ण हो। मृत्यु आचार्य ने कहा तथास्तु। उन्होंने कहा कि तीसरा वचन यह कि मैं स्वर्ग में जाना चाहता हूँ, स्वर्ग किसे कहते है?

गार्हपथ्याग्नि

यमाचार्य ने कहा हे ब्रह्मचारी! जो गार्हपथ्य नाम की अग्नि की पूजा करता है, वह स्वर्ग का गामी बनता है। स्वर्ग को प्राप्त होता है, उन्होंने कहा कि तीन प्रकार की अग्नि कौनसी है? सबसे प्रथम अग्नि का नाम गार्हपथ्य, द्वितीय अग्नि का नाम गृहपथ्य, और तृतीय अग्नि का नाम आह्वनीय कहलाती है। मानो देखो, सबसे प्रथम अग्नि में ब्रह्मचारी तप रहा है, ब्रह्मचरिष्यामि बन रहा है मानो वह अग्नि में तप रहा है, तपता हुआ अपने को ब्रह्मवर्चोसि बना रहा है, विद्यालय को श्रेष्ठ बना रहा है और अपने ब्रह्मचर्य की रक्षा करता हुआ, देवपुरी को प्राप्त हो रहा है। परन्तु उत्तर देता है वर्चो ब्रह्मवर्ती देवाः वह ब्रह्मचारी ही देवपुरी का प्राप्त हो जाता है। ब्रह्म चरी

ही है, जो देव रूपों में गति करती रहती है। ब्रह्म चरिष्यामि, ब्रह्म और चरी दो ही शब्द है, ब्रह्म परमपिता परमात्मा को कहते है, चरी नाम प्रकृति को कहते है। जो दोनों के सन्निधान को जानता है दोनों की प्रति क्रियाओं को विशुद्ध रूप से अपने में धारण करता है, वह ब्रह्मचारी कहलाता है। श्वांस पर श्वांस गति कर रहा है, परन्तु वह श्वांस गति करके द्यौ लोक में प्रवेश कर रहा है। उस श्वांस और प्रश्वास के साथ में मानव का चित्र जा रहा है वह इन चित्रों का दिग्दर्शन कर रहा है।

मेरे प्यारे! देखो, वह चित्र द्यौ लोक में प्रवेश कर रहा है, वह चित्र द्यौ लोक में हो करके, अन्तरिक्ष में गति करता हुआ, वायुमण्डल में गति करता हुआ और मुनिवरों! देखो, अग्नि में प्रवेश करके उसी मानव को प्राप्त होता है जिसका वह शब्द अन्तरिक्ष में गति कर रहा है। आज मैं बेटा! तुम्हें एक ऐसी आश्चर्यमयी दर्शनों की चर्चा कर रहा हूँ जहाँ मानव मृत्यु को प्राप्त हो करके, मृत्यु से विजय होना चाहता है। जहाँ गार्हपथ्य नाम की अग्नि की पूजा करना चाहता है। मेरे प्यारे! वह प्रातःकालीन अग्नि के समीप विराजमान हो करके और उस अग्नि में प्रवेश कर जाता है जो अग्नि मुनिवरों! देखो, संसार को प्रकाशित कर रही है, जो अग्नि द्यौ मण्डल में सूर्य को प्रकाशित कर ही है जो अग्नि चन्द्रमा से अमृत बहा देती है जो मुनिवरों! देखो, ध्रुव मण्डल मानो नाना मण्डलों को प्रकाश देता है जैसे सूर्य नाना पृथ्वियों का प्रकाशक बना हुआ है। मेरे प्यारे! देखो, उसे गार्हपथ्य नाम की अग्नि कहते है उस अग्नि का जो पूजन करता है उस अग्नि को जो यथोचित्त अपने में धारण करता है बेटा! वह ब्रह्मचरिष्यामि बन जाता है, ब्रह्मो व्रतां देवाः चरिष्यामि गतप्रव्हा वनस्पतप्रव्हे।

गृहपथ्याग्नि

बेटा! वेद का आचार्य कहता है, कि द्वितीय गृहपथ्य नाम की जो अग्नि है, उसमें माता और पिता ब्रहे दम्पती दोनों तपते रहते है। मानो वह तपायमान हो करके मानो देखो, गृह को ऊँचा बना देती है। पति पत्नी गृह में वास करते है, प्रातःकालीन याग कर रहे है, प्रातःकालीन ब्रह्म याग हो रहा है, प्रातःकालीन देखो, स्वरों की

ध्वनियाँ हो रही हैं, वेद मन्त्रों की ध्वनियाँ हो रही हैं, माता पिता के उस चलन को, बाल्य, बालिका श्रवण कर रहे है बाल्य, बालिकाओं में संस्कार आ रहे है और बाल्य, बालिका बेटा! पवित्र हो करके, गृह को स्वर्ग बनाते है। माता पिता प्रसन्न होते है, क्या हमारा गृह कितना आनन्दमयी है। परन्तु देखो, जब माता पिता दोनों चलन करते है, दोनों ध्वनियों में गान गाते है प्रभु का, अपने प्रभु को अपने में स्मरण करते है बेटा! उनका अनुसरण करने वाली उनकी सन्तान होती हैं। वह मानो देखो, स्वर्ग के गामी बनते है। विचार क्या, इस गृहपथ्य नाम की अग्नि का पूजन करने वाला ही बेटा! तरंगवादी बन जाता है। तरंगों को ओत प्रोत करा देता है तरंगे मानो देखो, तरंगित हो करके मानव अपने में महान बनता रहता है।

वैश्वानराग्नि

बेटा! मैं विशेष चर्चा तुम्हें प्रगट करने नहीं आया हूँ, केवल परिचय देने आया हूँ और वह परिचय क्या है बेटा! तृतीय अग्नि का नाम वैश्नावर कहा जाता है, जो दक्षिणाय अग्नि कहलाती है, जो पितरों की अग्नि कहलाती है, जहाँ उनके विचार रहते है। मेरे प्यारे! देखो, जैसे विद्यालय में, वानप्रस्थ बन करके, माता पिता, गृह से उपराम हो करके, अपने अनुभवों को ब्रह्मचारियों को प्रवेश कराते है, उनमें उद्बुद्ध स्वाहा, अग्नि को जागरुक कर देते है। मेरे प्यारे! वह वैश्वानर नाम की अग्नि है, उससे राष्ट्र और गृह दोनों पवित्र बन जाते है। वे सब महान विचित्रता में रमण करते रहते है। तो मेरे प्यारे! इसके पश्चात सम्भविता ब्रह्मे सवर्गाः वेद का आचार्य कहता है, यमाचार्य ने कि हे नचिकेता! इन तीन प्रकार की अग्नियों का पूजा करने वाला, देवता बनता है, और स्वर्ग में प्रवेश करता है। वह स्वर्ग का अधिपति बन जाता है।

नचिकेता का तृतीय प्रश्न

मेरे प्यारे! नचिकेता ने कहा प्रभु! यह तो मैंने जान लिया, परन्तु तीसरा प्रश्न मेरा है, मैं यह जानना चाहता हूँ कि आत्मा इस शरीर को त्याग करके कहाँ जाता है?

मेरे प्यारे! यमाचार्य के वाक्यों को पान करके नचिकेता ने जब यह प्रश्न किया तो यमाचार्य ने विचारा कि यह ब्रह्मचारी प्रश्न किए जा रहा है इसको इन प्रश्नों का अधिकार है अथवा नहीं, तो यमाचार्य कहते है, हे नचिकेता! यह जो संसार का राष्ट्र है, नाना सुन्दरियाँ विद्यमान हैं, दुग्ध देने वाले पशु हैं, तू संसार के वैभव को क्यों नहीं स्वीकार करता। यह संसार का राज स्वीकार कर। ये नाना सुन्दरियाँ हैं, ये दुग्ध देने वाले पशु हैं, तू उनको प्राप्त कर। नचिकेता कहता है सम्भविता ब्रह्मणा नास्तानि गच्छतप्पव्हे विश्वां मया व्रतो मृत्यु जनिता नचिकेता कहता है हे मृत्यु आचार्य जन! जो संसार में आज वस्तु है, वह कल नहीं रहेगी, इसलिए उस वस्तु का मुझे प्रलोभन न दो। जो वस्तु आज है, और कल भी ज्यों की त्यों बनी रहेगी, प्रभु! मैं उस वस्तु को चाहता हूँ। आत्मा का ज्ञान, आत्मा का विज्ञान एक ऐसा ज्ञान, विज्ञान है मानो जो आज है और कल भी रहेगा, इस शरीर को त्यागने के पश्चात भी वह ज्ञानाग्नि मेरे शरीर में मेरी अन्तरात्मा में वास करती रहेगी।

अन्तःकरण

नचिकेता के वाक्यों को पान करने के पश्चात उसकी तीव्र इच्छा को, तीव्र विवेक को दृष्टिपात करते हुए यमाचार्य ने बेटा! उसे मन ही मन प्रमाण ब्रह्मे व्रता, उस ब्रह्मचारी को प्रणाम किया, ब्रह्मचारी को नमस्कार किया और ब्रह्मचारी को कहता है ब्रह्मचरिष्यामि गतप्रव्हादिव्य लोकाः हे ब्रह्मचारी! तू दिव्य लोकों में जाना चाहता है। अहाः मैं तुझे आत्मा का सूक्ष्म परिचय दूंगा, तू वास्तव में अधिकारी है, इस विद्या का। तो मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने अपने वाक की पूर्ति करते हुए, नचिकेता से कहा हे ब्रह्मचारी! जब यह आत्मा इस शरीर को त्यागता है, तो इस मानव के शरीर में चित्त का मण्डल बना हुआ है। जिसे मन, बुद्धि चित्त और अहङ्कार कहते है इस चतुष का नाम अन्तःकरण कहलाता है। जिस अन्तःकरण में मन, बुद्धि, चित्त और अहङ्कार कहलाते है। मानो बुद्धि की तीन प्रकार की धारा कहलाती है। बुद्धि, मेधा, ऋतम्भरा और प्रज्ञा यह तीन प्रकार की बुद्धि की धाराएं कहलाती है। परन्तु

चित्त की भी तीन प्रकार की आभा कहलाती है इन्द्रोसि, प्रतिभा और लघिमा, ये तीन प्रकार की धारा मानो देखो, चित्त की कहलाती है। मनं ब्रह्मे बुद्धां तत्त्व चिकित्सा यह जो अहङ्कार है इससे जो मानव अपने में कटिबद्ध हो रहा है, इस अहङ्कार से यह संसार रूपी माला का निर्माण हुआ है, वह अपनी आभा में, जो अहङ्कार रहता है, उससे जुड़ा हुआ है परमाणु, अपने में प्रमाणित हो रहे है।

आत्मा की गति

मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने जब यह वर्णन कराया तो नचिकेता मौन, चरण स्पर्श करने लगे यमाचार्य ने कहा हे नचिकेता! यह आत्मा जब इस शरीर को त्यागता है, तो सबसे प्रथम बुद्धि, मेधा, ऋतम्भरा प्रज्ञा और चित्त की तीनों धाराएं और अहङ्कार की पचीस प्रकार की धाराएं इसमें मन में समाहित हो जाती है और जब यह मन इस चित्त में समाहित हो करके और मन में समाहित हो जाती है तो यह चारों जो दशा है, यह मन की कहलाती है। यह मन की ही धारा है, मन की तरंगें कहलाती है। मानो जब यह एक दूसरे में समावेश होती है, चित्त का जो मण्डल है, उसमें जन्म जन्मान्तरों के संस्कार विद्यमान हैं। जैसे पृथ्वी को भी चित्त कहते है जितना पार्थिव प्राणी है, इस ब्रह्माण्ड में, जैसे पार्थिक तत्त्व इसको हम गुरुत्व कहते है। उसमें यह चित्त परमाणु विद्यमान होते है, उसी से अङ्कुर हो जाते है, उसी से वनस्पतियाँ हो जाती है, उसी को चित्त मण्डल कहते है। इसी प्रकार मानव के शरीर में चित्त नाम का जो स्थान है उसमें नाना प्रकार की तरंग उद्बुद्ध होती रहती हैं, तरंगों के उद्बुद्ध होने से वह तरंगित हो जाता है प्राणी, हे नचिकेता! यह मन, जब इन सबको अपने में समेट करके, यह आत्मा के समीप पहुंचता है आत्मा को अपने उपर सवार करा करके और यह उदान प्राण के समीप पहुंच जाता है। उदान प्राण ही मुनिवरों! चित्त के मण्डल को ले करके, आत्मा को सवार करा करके बेटा! इस शरीर को त्याग देता है और यह वायुमण्डल में चला जाता है। वायु मण्डल में इन्द्र केसरी, स्वाधि, त्रिकेतु यह तीन प्रकार की वायु कहलाती है। यह

मानो इस वायु में गति करता रहता है और वह संस्कारों की जो स्थूल धाराएं है, वह सूक्ष्म में प्रवेश कर जाती है और जैसा जब शरीर को यह त्यागता है आत्मा, जैसा इसका विचार बना रहता है अन्त मथे मथप्रव्हा वती मानो उसी प्रकार, यह किसी माता के शरीरों में प्रवेश हो जाता है। और यह मानो देखो, सूक्ष्म चित्त के मण्डल को ले करके, अब यह पुनः इस संसार में अपनी धारणा शक्ति को ले करके, पुनः आ जाता है।

मानव शरीर

तो हे नचिकेता! इस आत्मा के विचारों को ले करके, नाना ऋषि मौन हो गये, मानो आत्मा का विषय इतना गहन कहलाता है अपने में विषय इतना पूर्ण है। परन्तु देखो, इस आत्मा को जानने के लिए तुम मानो जिज्ञासु बने हो, तुम्हारी जिज्ञासा तीव्र कहलाती है। इसीलिए हे नचिकेता! मैंने तुम्हें आत्मा की कुछ सूक्ष्मसी चर्चाएं की है। परन्तु इसमें सर्वत्र ब्रह्माण्ड समाहित रहता है, ब्रह्माण्ड समा रहा है। परन्तु देखो, इस ब्रह्माण्ड की आभा में यह आत्मा नृत्त कर रहा है। उदान प्राण को ले करके, क्योंकि मानव का जो यह शरीर है, यह चौबीस खम्बों वाला कहलाता है। इसमें दस इन्द्रियां है, दस प्राण है, मन बुद्धि चित्त और अहङ्कार कहलाता है। यह चतुष अन्तःकरण और दस प्राण है, दस इन्द्रियां है, यह चौबीस खम्बों वाला बेटा! यह मानव शरीर कहलाता है। इस मानव शरीर को जानता हुआ, अनुसन्धान करता हुआ मानव अपने को व्यष्टि को, समष्टि में प्रवेश करा देता है।

मैं व्यष्टि, समष्टि की चर्चा तो बेटा! कल ही प्रगट करूंगा, आज के वाक उच्चारण करने का अभिप्राय क्या, नचिकेता आत्मा के प्रसंग को ले करके प्रसन्न हो गया। सात वर्षीय ब्रह्मचारी आत्मा की तीव्र इच्छा में लगा हुआ है। मेरे प्यारे! पिता अपने मोक्ष की पिपासा के लिए, सर्वत्र आहुति दे रहा है। मेरे पुत्रों! देखो, ऋषिवर नाना प्रकार के प्रश्न करके उसको अधिकारी बना रहे है। तो मेरे पुत्रों! यह जो आध्यात्मिकवाद है, यह कैसा गहन विषय है, बिना भौतिक विज्ञान के जाने बिना

आध्यात्मिकवाद में मानव प्रवेश नहीं कर सकता। इसीलिए आचार्यों ने कहा कि दोनों विज्ञान को, **आध्यात्मिक और भौतिकवाद दोनों का समन्वय कर दो और दोनों का समन्वय जब तक नहीं करोंगे तब तक भौतिक विज्ञान मृत्यु का कारण बनता रहेगा और बिना आध्यात्मिकवाद के मुनिवरों! देखो, मानव अपंग बना रहेगा और राष्ट की सम्पदा समाप्त हो जाएगी।**

यह है बेटा! आज का वाक्, आज के वाक उच्चारण करने का अभिप्राय क्या कि हम भौतिकवाद, आध्यात्मिकवाद दोनों को एक दूसरे में कटिबद्ध, दृष्टिपात करते हुए, इस सागर में पार हो जाए, यह है बेटा! आज का हमारा वाक्, मुझे समय मिलेगा, शेष चर्चाएं मैं कल प्रगट करूंगा। आज के वाक उच्चारण करने का अभिप्राय क्या, कि हम परमपिता परमात्मा की प्रतिभा को जानते हुए, परमपिता परमात्मा को अपना वरणीय बनाते चले जाए, क्योंकि जो मानव, उस माता वसुन्धरा को, जिसके गर्भ में यह ब्रह्माण्ड समाया हुआ है, समाहित हो रहा है, गति कर रहा है, गतिशील हो रहा है, मानो देखो, उस माता वसुन्धरा को जब तक वरोगे नहीं, उसकी ज्ञान रूपी लोरियों का पान नहीं करोगे, जब तक उसमें अपने को समर्पित नहीं करोगे, तब तक मेरे पुत्रों! देखो, हम भौतिकवाद, आध्यात्मिकवाद दोनों में प्रवेश न करके बेटा! अपने में अपंग बने रहेंगे। परन्तु यदि हम अपने में अपंग होना नहीं चाहते, तो उसमें हम समर्पित हो जाए। बेटा! उसको अपना वरणीय बनाते चले जाए, जैसे बालक को पिपासा लग रही है, क्षुधा लग रही है, वह ममत्व उसे अपने में धारण कर लेती है, जब मानव को ब्रह्म पिपासा और तीव्र इच्छा के सहित उसे क्षुधा लगती है तो बेटा! प्रभु उसे अपनी गोद में अपना लेते है। यह है मुनिवरों! आज का हमारा वाक्, अब मुझे समय मिलेगा, मैं तुम्हें शेष चर्चाएं कल प्रगट करूंगा, आज का वाक समाप्त, अब वेदों का पठन पाठन होगा। ओ३म् यमा...।

6.महर्षि याज्ञवल्क्य का चिन्तन-820728

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भान्ति, कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेद मन्त्रों का पठन पाठन किया। हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस महामना, मेरे देव की महिमा का गुणगान गाया जाता है, क्योंकि वे परमपिता परमात्मा महिमावादी है और जितना भी यह जड़ जगत अथवा चैतन्य जगत हमें दृष्टिपात आ रहा है, उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में, प्रायः वह मेरा देव दृष्टिपात आ रहा है, क्योंकि वे परमपिता परमात्मा अनन्तमयी है, मानो उसकी अनन्तता एक एक परमाणु में दृष्टिपात आती रहती है जहाँ मानवीय गाथा में रमण करने लगते है, तो मानो उस परमपिता परमात्मा की अनन्तता और उसकी महानता का प्रायः हमें भान होने लगता है। हम जानते रहते है कि वे परमपिता परमात्मा जो महान सूक्ष्म है और वे अनन्तमयी माना गया है, एक एक परमाणु में जो ब्रह्माण्ड की रचना करने वाला है, उस परमपिता परमात्मा की महती के ऊपर मानव को विचार विनिमय करना है। क्योंकि प्रत्येक मानव, इस विचार में, जब वे परमपिता परमात्मा की आनन्दमयी सृष्टि का उद्घोष करने लगता है तो मानो उसी समय उसकी महानता का विचार विनिमय प्रारम्भ करने लगता है।

विज्ञान के दो प्रकार

तो आओ, मेरे पुत्रों! आज मैं तुम्हें विशेष, विवेचना तो देने नहीं आया हूँ, परन्तु विचार यह है कि हम अपने देव की महिमा का गुणगान गाते चले जाए, जिसके ऊपर मानव सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके और वर्तमान की प्रतिभा तक, विचार विनिमय करता रहा है। आज के हमारे वेद के पठन पाठन में मानो गो मेध याग का वर्णन आ रहा था। गौमेधां ब्रह्मा लोकां व्रत्यं जिह्वयं ब्रह्मा हमारे यहाँ गो मेध याग की चर्चाए आती रहती है और नाना प्रकार की आभाओं में, मानो गो घृत

इत्यादियों का वर्णन भी आता रहा है। परन्तु जहाँ मानव, गो के सम्बन्ध में विचारता रहा है, वहाँ मानव और भी बेटा! नाना प्रकार के ज्ञान और विज्ञानमयी चर्चाओं में बेटा! प्रायः गमन करता रहता है। हमारे यहाँ दो प्रकार का विज्ञान परम्परागतों से ही, बेटा! अनूठे रूप से दृष्टिपात किया गया है। एक हमारे यहाँ आध्यात्मिक विज्ञान है और दूसरा हमारे यहाँ भौतिक विज्ञान कहा जाता है। प्रत्येक मानव, जिस भी काल में, आध्यात्मिकवाद की उसने उड़ाने उड़ी है। तो मुनिवरों! वह भौतिक विज्ञान के मार्ग से हो करके, आध्यात्मिकवाद में उसने प्रवेश किया है। क्योंकि आध्यात्मिकवाद हमारे यहाँ एक अनूठा विज्ञान है, आध्यात्मिकवाद की उड़ान उड़ने वाला मानव, बेटा! अपने में महानता का प्रायः दर्शन करता रहता है।

गुरुदेव की स्मृति

मुझे वह काल स्मरण आता रहता है, जिस काल में बेटा! माता मल्दालसा की चर्चाएं, हमारे समीप आती रही है। मैंने कई काल में बेटा! माता मल्दालसा का वर्णन किया, नाना प्रकार की गाथाओं में जाने के पश्चात हम उस साहित्य में बेटा! प्रवेश कर जाते है, जिस साहित्य में माता अपने में मानो एक अनूठा अनुसन्धान करती रही है।

मेरे पुत्रों! मुझे वह काल स्मरण आता रहता है, जिस काल में रेवक मुनि महाराज के आश्रम में, मेरे पुत्रों! देखो, चाक्राणी ने कुछ प्रश्न किए और वह प्रश्न बड़े अनूठे थे, बड़े महत्त्वपूर्ण माता अङ्ग कृतियों में मेरे पुत्रों! आचार्य गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज जिनको एक सौ पांच वर्ष तक गाड़ी के नीचे ही तपस्या करते हो गएं थे। उनका जीवन मानो महानता में सदैव तत्पर रहा है।

वैज्ञानिक निष्कर्ष

मुझे बेटा! वह भी काल स्मरण आता रहता है, जब उद्दालक गोत्र में बेटा! शिकामकेतु मुनि महाराज, मेरे पुत्रों! देखो, याग में परणित होते, एक समय उनकी पत्नी रम्भेश्वरी श्वेणकेतु ने कहा हे प्रभु! मैं आपसे यह जानना चाहती हूँ कि हमारे

जो शब्द है, ये कहाँ जाते हैं? तो शिकामकेतु उद्दालक ने बेटा! एक वेदमन्त्र उच्चारण किया और वह वेदमन्त्र यह कहने लगा सम्भवं अन्तरिक्षं दिव्यां अग्नं रुद्रं भवितां ब्रह्मवाचो सम्भवाः वेद का आचार्य कहता है, अपनी पत्नी से देवी! यह जो हमारा शब्द है यह मानो देखो, अग्नि की तरंगों पर विद्यमान हो करके, यह द्यौ लोक में प्रवेश कर जाता है अथवा यह द्यौ लोक में चला जाता है। जब बेटा! देखो, शिकामकेतु मुनि महाराज का यह निर्णय स्वीकार किया तो देवी ने श्वेतकेतु ने कहा हे देवत्तम! मैं यह और जानना चाहती हूँ कि यह जो अन्तरिक्ष में मानो देखो, द्यौ और अन्तरिक्ष दोनों प्रतिभा में रत्त रहता है यह एक आपों की किरण है। मेरे पुत्रों! देखो, उस समय महर्षि शिकामकेतु उद्दालक ने कहा कि हे देवी! यह मानो देखो, द्यौ और पृथ्वी दोनों के मध्य में ही कृतियाँ और द्यौ विद्यमान रहती है। जिससे बेटा! इस संसार का निर्माण होता है। संसार श्वासों की प्रतिभा का मानो उसे अधिकार प्राप्त हो जाता है, तो देवी शान्त हो गई।

मानव का उद्देश्य

परन्तु देखो, बेटा! मैं इस आभा में आना नहीं चाहता हूँ। विचार विनिमय बेटा! यह उच्चारण कर रहे थे, कि दो प्रकार का विज्ञान, हमारे समीप रहता है एक भौतिक विज्ञान है और एक मुनिवरों! देखो, आध्यात्मिक विज्ञान कहलाता है, प्रत्येक मानव जितने भी अनुष्ठान करता रहता है, जितने भी क्रियाकलापों में मानव लगा रहता है और जितने क्रियाकलाप है उनका कोई न कोई उद्देश्य रहता है। एक मानव प्रातःकालीन, अपने आसन को त्याग करके, प्रभु के चिन्तन में लग जाता है, एक मानव प्रातःकालीन अपने आसन को त्याग करके मेरे पुत्रों! देखो, लोक लोकान्तरों की गणना करने लगता है, एक मानव प्रातःकालीन संसार के व्यापार में लग जाता है, एक मानव प्रातःकालीन बेटा! देखो, ब्रह्मयाग में परणित हो जाता है, तो मानो देखो, हमारे यहाँ दार्शनिकों का जब यह प्रसंग आया, कि इस प्रकार मानव का क्रियाकलाप क्यों रहता है? तो मेरे पुत्रों! देखो, नाना दार्शनिकों का एक ही मत

रहा है इस सम्बन्ध में, उन्होंने कहा है प्रत्येक मानव की आकांक्षा रहती है कि मेरी मृत्यु नहीं होनी चाहिए, प्रत्येक मानव का एक ही उद्देश्य है नाना प्रकार के क्रियाकलापों में परणित होने के पश्चात उसकी एक ही प्रतिभा रहती है कि मेरी मृत्यु नहीं होनी चाहिए, वह मृत्युञ्जय बनना चाहता है।

मेरी प्यारी माता से जब, मैं यह प्रश्न करता रहता हूँ, तो माता मानो देखो, अपने में व्याकुल हो रही है, अब मैं माता से यह प्रश्न करता हूँ। हे माता! तू व्याकुल क्यों हो रही है? दार्शनिक रूपों से जब यह प्रश्न किया जाता है तो माता कहती है, मेरा एक पुत्र था, अब वह मेरे समीप नहीं रहा। परन्तु मैं व्याकुल हो रही हूँ, मेरा पुत्र न रहने के कारण मुझे व्याकुलता है। तो दार्शनिक कहता है हे माता! क्या यह शरीर तेरा पुत्र है, या यह मानो आत्मा तेरा पुत्र है। तो माता बेटा! निरूतर हो जाती है। माता कहती है, कि यदि वह माता शरीर को अपना पुत्र कहती है, तो शव ज्यों का त्यों निहित रहता है। परन्तु यदि आत्मा को पुत्र कहती है तो मुनिवरों! देखो, उस आत्मा को तो माता जानती नहीं, कितना विशाल है, मानो कितना विशाल आत्मा का, कितना विराट रूप है, इसको मेरी प्यारी माता नहीं जानती। परन्तु देखो, इसका उत्तर यह बना क्या मम ब्रह्मे पुत्रों! वरूण ब्रहा लोकां वाचन्नमं ब्रहो मेरे प्यारे! देखो, माता यह चाहती है कि मेरा जीवन भी दार्शनिक हो जाए, जिससे मैं दर्शनों पर यह घटित, अपने में यह निर्णय कर सकूं, कि संसार में कौनसी वस्तु है जिसके लिए मैं नाना प्रकार की क्रियाकलापों में लगी रहती हूँ अथवा क्रियाकलापों में मेरा जीवन तत्पर रहता है।

सङ्कल्प से पुत्र

तो मेरे पुत्रों! देखो, माता को जब यह ज्ञान हो जाता है कि न आत्मा तेरा पुत्र है, न शरीर ही तेरा पुत्र है, परन्तु वह पुत्र कौनसी वस्तु है? मम ब्रह्मे वेद का एक मन्त्र आता है क्या, वासं ब्रह्मे सङ्कल्प वृत्ति दिव्यं ब्रह्मा वेद का वाक कहता है कि यह जो माता पिता का सङ्कल्प है, यही पुत्र कहलाता है। तो मेरे पुत्रों! देखो, सङ्कल्प

में यह सर्वत्र जगत विद्यमान रहता है। जब मुनिवरों! देखो, यह सङ्कल्पमयी पुत्र है, सङ्कल्प में पुत्रियाँ है मानो देखो, पिता और माता सर्वत्र एक सङ्कल्प मात्र माने गएं है। इसलिए मानव को अपने जीवन में सङ्कल्पवादी बनना है आत्मतत्त्ववादी बनना है जिससे आत्मा को हमें जानना है। तो आत्मा हमारे शरीर में विद्यमान है मानो जिसके रहने से यह शरीर चेतनित बना रहता है और जिसके न रहने से यह मानो देखो, शून्य गति को प्राप्त हो जाता है तो मानो उस चेतना को हमें जानना है, उस चेतना के ऊपर हमें बल देना है यदि उस चेतना में ही मानव तत्पर हो जाता है तो बेटा! वह चेतनित हो करके, अपनी प्रतिभा में एक महान बन जाता है।

दार्शनिक चर्चाएं

आओ, मेरे प्यारे! देखो, इस संसार के सम्बन्ध में, मैंने बहुत पुरातन काल में तुम्हें निर्णय देते हुए कहा था। बेटा! आज मैं दार्शनिकों के उसी समाज में जाना चाहता हूँ, जिन दार्शनिकों के समाज ने बेटा! देखो, दर्शनों की विचारधाराएँ, दर्शनों की चर्चाएं अथवा यह कल्पना करते रहते थे कि यह संसार क्या है, यह जो परमात्मा का अनूठासा जगत, हमें दृष्टिपात आ रहा है यह वास्तव में क्या है? तो मेरे पुत्रों! देखो, जब यह मानव, दार्शनिक, अपने में विचारने लगता है, वह कहता है कि यह संसार मानो एक व्यापारशाला है यहाँ प्रत्येक मानव मानो देखो, किसी का उसे देना है तो उसे वह देने के लिए आया है। किसी से लेना है, तो लेने के लिए आया है। तो बेटा! यह संसार दार्शनिकों ने एक व्यापारशाला के रूप में दृष्टिपात किया। परन्तु द्वितीय, तृतीय दार्शनिक कहता है कि नहीं, यह संसार तो एक प्रकार की विज्ञानशाला है। यहाँ प्रत्येक मानव वैज्ञानिक बनने के लिए आया है, प्रत्येक मानव विज्ञान में रत्त होना चाहता है प्रत्येक मानव के हृदय में यह कल्पना रहती है कि मैं तारामण्डलों की प्रतिभा में मानो देखो, अपने को रत्त करा दूं और यह विचारता रहता है कि मैं इस संसार को मानो देखो, अंगों और उपांगों से जान करके और नाना प्रकार के विज्ञान के वांगमय में प्रवेश हो करके और एक वैज्ञानिक बन जाऊं,

जिससे परमात्मा के ब्रह्माण्ड को मापने लगूँ।

तो मेरे प्यारे! वह कही लोक लोकान्तरों की यात्रा में प्रवेश कर जाता है, एक माला बना लेता है, वह जो एक माला बनाता है, जिस माला को धारण करके बेटा! देखो, कोई योगेश्वर बन रहा है, कोई वैज्ञानिक बन रहा है कोई मानो देखो, उन्हीं मालाओं को धारण करके बेटा! अन्तरिक्ष की यात्रा कर रहा है। अरे, वाह रे, मेरे प्यारे! प्रभु तेरा कितना अनूठा जगत है, कि मानव विचारता ही रहता है तेरे सम्बन्ध में, मेरे पुत्रों! देखो, वैज्ञानिकों ने जब यह निर्णय लिया कि यह संसार तो एक प्रकार की व्यापारशाला है, यह विज्ञानशाला है तो बेटा! देखो, विज्ञान के सम्बन्ध में इस प्रकार की उड़ान उड़ने वाले अपने में मानो देखो, अपनेपन का भान करते रहते है, विचारते रहते है कि मैं लोक लोकान्तरों की उड़ान उड़ना चाहता हूँ। मुनिवरों! देखो, मुझे वह काल स्मरण आता रहता है, जिस काल में बेटा! उद्दालक मानो देखो, उस काल में महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज के आश्रम में क्या, महर्षि भारद्वाज मुनि के आश्रम में बेटा! विचार विनिमय होता रहा है। महर्षि भारद्वाज मुनि के आश्रम में ब्रह्मचारी सुकेता ने एक समय यह कहा था कि हे प्रभु! मैं मानो देखो, इसे ब्रह्माण्ड के उन तथ्यों को जानना चाहता हूँ, जिन तथ्यों से मानो देखो, मानवीयता का निर्माण होता है। एक बिन्दु का निर्माण, बिन्दु में ही सर्वत्र ब्रह्माण्ड विद्यमान रहता है। मेरे प्यारे! देखो, उस समय महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज मौन हो गएं और मौन हो करके कहा कि यह तो दार्शनिकों का विषय है।

विज्ञानशाला रूपी संसार

तो बेटा! देखो, विचार आता रहता है मानो देखो, आगे दार्शनिक कहता है कि यह संसार विज्ञानशाला तो है, परन्तु यह संसार तो एक प्रकार की यज्ञशाला भी है। यहाँ मानो देखो, यह ब्रह्माण्ड सर्वत्र एक यज्ञशाला के सदृश्य कहलाता है। जैसे यज्ञशाला में मानो देखो, होतागण, यज्ञमान विद्यमान हो करके याग करते रहते हैं इसी प्रकार मेरी प्यारी माता अपने में याज्ञिक बनी हुई है। मेरे पितर मानो याज्ञिक

बनें हुए हैं। मुनिवरों! देखो, यह संसार, एक प्रकार की यज्ञशाला है, मुनिवरों! देखो, मुझे वह काल, स्मरण आता रहता है, जिस काल में ऋषि मुनि एक स्थली पर विद्यमान हो करके बेटा! याग के ऊपर चिन्तन करते रहे है और याग के ऊपर विचारने लगे क्या, यह जो ब्रह्माण्ड है यह कैसे एक प्रकार की यज्ञशाला है? मेरे प्यारे! देखो, इसमें ब्रह्मा, जो परमपिता परमात्मा है वह उसका नियमन कर रहा है मानो वह ब्रह्मा बन रहा है, आत्मा यज्ञमान है पञ्च महाभौतिक मुनिवरों! देखो, पञ्च महाभूत इस यज्ञशाला के बेटा! होता बने हुए है, वे होता आहुति दे रहे हैं। मेरे पुत्रों! देखो, पृथ्वी गुरुत्व की आहुति दे रही है, और जल आपोमयी ज्योति बेटा! मानो देखो, वह तरल पदार्थों का तरलत्व में मानो देखो, आहुति प्रदान हो रही है। अग्नि तेजोमयी बन रही है मानो देखो, वह तेज की उष्णता बना रही है, तेज प्रदान कर रही है। इसी प्रकार वायु बेटा! प्राण दे रहा है मानो देखो, प्राणत्व दे करके बेटा! अन्तरिक्ष में वह समाहित हो जाते है। वाह रे, मेरे प्रभु कैसा शून्य बिन्दु है और कैसे शून्य बिन्दु में सब समाहित हो रहे है।

मानो देखो, इस प्रकार का, प्रभु का, यज्ञशाला के रूप में बेटा! देखो, यह ब्रह्माण्ड हमें दृष्टिपात आ रहा है, उसके नाना प्रकार के अवयव जैसे यज्ञशाला में बेटा! यज्ञमान याग करता है और उसका साकल्य सूक्ष्म बन करके, शब्द के साथ में साकल्य बेटा! अन्तरिक्ष में प्रवेश होता है। परन्तु वह भी एक दूसरे में समाहित हो रहा है। एक दूसरे में मानो देखो, मिला हुआ सा दृष्टिपात आ रहा है। मेरे पुत्रों! देखो, जब इस ब्रह्माण्ड के ऊपर, हम कल्पना करना प्रारम्भ करते है तो मुनिवरों! एक दूसरे से गुथा हुआ जगत दृष्टिपात आता है। कैसा है, मेरे प्यारे! एक दूसरे में समाहित हो रहा है। जब मैं विचारता हूँ कि गुरुत्व, तरलत्व में समाहित हो रहा है और तरलत्व मुनिवरों! तेजोमयी में समाहित हो रहा है और तेजोमयी मुनिवरों! देखो, प्राणत्व, गति में प्रवेश कर जाता है और वह गति मुनिवरों! देखो, अन्तरिक्ष में रमण कर ही है।

आओ, मेरे प्यारे! जब मुझे इन दार्शनिकों के विचार स्मरण आते है तो बेटा! कैसा ऊर्ध्वा में दार्शनिक विचार, जब हमारे समीप आता है तो मुझे ऐसा दृष्टिपात आता है कि यह प्रभु का कैसा अनूठा जगत है, कैसा अनुपम मेरे प्यारे! प्रभु की यह महती मानी गई है जिसके ऊपर मानव बेटा! सृष्टि के प्रारम्भ से विचार विनिमय करता चला आया है। आओ, मेरे प्यारे! देखो, मानव जब सङ्कल्प में प्रवेश कर जाता है तो कितनी ऊर्ध्वा में मानव प्रार्थना करता है। मेरे पुत्रों! देखो, मुझे स्मरण आता रहता है मुझे ऐसा लेखनी बद्ध कहीं प्राप्त होता रहता है कि मानव प्रार्थना में, ऐसा रसमय हो जाता है क्या, मुनिवरों! देखो, हिंसक प्राणी भी, अहिंसा परमोधर्मी बन जाता है। मेरे पुत्रों! देखो, वह कितना अनूठा विचार है, कितना अनूठा उसका मनोनीत चिन्तन है, जिस चिन्तन में प्रवेश करके बेटा! मानव अपने में ही नहीं मानो देखो, इस संसार की प्रतिभा को अपने में दृष्टिपात करने लगता है।

यज्ञशाला रूपी संसार

आओ, मेरे प्यारे! मैं विशेष चर्चा न देता हुआ, आज मैं बेटा! तुम्हें विशेष बिखरे हुए पुष्पों को एकत्रित करने चला आया हूँ और वह क्या बेटा! परमपिता परमात्मा का जो यह ब्रह्माण्ड है, यह एक प्रकार की यज्ञशाला है, इसी यज्ञशाला के रूप में बेटा! देखो, परमपिता परमात्मा ने इस मानो शरीर रूपी यज्ञशाला का निर्माण किया है। क्या मानो बेटा! एक दूसरा प्राणी, एक दूसरे प्राणी में समाहित हो रहा है। एक दूसरा प्राणी, एक दूसरे प्राणी के कार्यों में रत्त हो रहा है। एक एक परमाणु, एक एक परमाणु में सुगठित हो करके इस ब्रह्माण्ड की रचना हो रही है। मेरे पुत्रों! देखो, यह कैसा अभ्योदय हो रहा है, जिसके ऊपर बेटा! हमने यह अपना विचार प्रगट किया, विचार आता रहता है। बेटा! जब दार्शनिक ने यह कहा कि यह संसार एक प्रकार की यज्ञशाला है तो बेटा! मुझे वह काल स्मरण आता रहता है, जिस काल में मेरे पुत्रों! देखो, नाना ऋषिवर, नाना आचार्यजन बेटा! याग में परणित

रहते थे, कहीं बेटा! विचारों का याग हो रहा है, कहीं मानो देखो, कार्यरत्त होने का याग हो रहा है, कहीं देवपूजा हो रही है, कही मानो देखो, ब्रह्मयाग हो रहा है, कहीं मुनिवरों! देखो, अतिथि याग हो रहा है, कहीं मेरे प्यारे! बलिवैश्व याग हो रहा है यहाँ नाना प्रकार के यागों में मानव परणित हो रहा है।

महर्षि याज्ञवल्क्य का तप

तो आओ, मेरे प्यारे! मैं विशेष विवेचना न देता हुआ, आज का हमारा वेदमन्त्र क्या कह रहा था, वेदमन्त्र यही कह रहा था कि हमारे यहाँ दो प्रकार का विज्ञान परम्परागतों से बेटा! कार्यरत्त रहा है। एक विज्ञान वह कहलाता है जिसे हम भौतिकवाद कहते है, द्वितीय आध्यात्मिक विज्ञान कहलाता है मेरे पुत्रों! दोनों विज्ञान को हम अपने में रत्त करते चले जाए, तो हमारा जीवन बेटा! महानता में रत्त हो सकता है। विचार क्या मुनिवरों! देखो, आगे हमारा विचार यह प्रारम्भ हो रहा है कि हम अपने में अपनेपन को ही दृष्टिपात करते रहे, यही विचार आता है कि हम अपनी प्रतिभा को, अपने में, जब अपनेपन में दृष्टिपात करते रहेंगे तो बेटा! हम संसार में एक महानता का दर्शन कर सकेंगे।

आओ, आज मैं बेटा! तुम्हें एक विद्यालय में ले जाना चाहता हूँ और विद्यालय के मानो कुछ अवयवों को प्रगट करने आया हूँ। बेटा! तुम्हें प्रतीत होगा, कई काल में तुम्हें वर्णन भी किया है कि महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज, जब बेटा! तपस्या करने के पश्चात उन्होंने शतपथ ब्राह्मण नाम की पोथी का निर्माण कर लिया, निर्माण करने के पश्चात मानो तपस्या करने के पश्चात बेटा! जब वह भयंकर वनों से, जब वह तपस्या करके एक अमृती, बारह वर्षों का तप करने के पश्चात जब मुनिवरों! देखो, वह याज्ञं ब्रह्म लोकां गृह वर्णनं ब्रहे उन्होंने सबसे प्रथम अपने गृह में प्रवेश किया, उनकी दो पत्नीयाँ थी, एक का नाम कात्यायनी था और द्वितीय का नाम मैत्रेयी था। मेरे पुत्रों! जब मैत्रयी ने अपने स्वामी को मानो ऋषि को आते हुए दृष्टिपात किया तो उन्होंने बेटा! चरणों की वन्दना की और उन्होंने कहाकहिए,

भगवन! आप तो बड़े तपस्वी प्रतीत होते है, क्योंकि आपके मस्तिष्क के मानो देखो, परमाणुओं की मुझे छठा दृष्टिपात आ रही है, वह बड़ी एक अनूठी है वह मुझे बड़ी दृष्टिपात आ रही है।

मेरे पुत्रों! देखो, उन्हें आसन दिया, आसन पर विराजमान हो गये, उन्होंने कहाकहो, मैत्रेयी! तुम्हारा जीवन कैसा रहा? उन्होंने कहा प्रभु! मैं तो गायत्री छन्दां की गोद में चली गई थी, मुझे यह प्रतीत नहीं रहा कि मैं कहाँ चली गई हूँ? मानो देखो, मैं सदैव तपस्या में मानो तत्पर रही। क्योंकि तपस्या करना ही, मेरा कर्तव्य रह गया, जब स्वामीत्व मानो देखो, तपश्चर में प्रवेश कर गये, तो पत्नी का भी वही कर्तव्य रह जाता है कि वह भी तपस्या में परणित हो जाए। मेरे प्यारे! जब ऋषि ने कात्यायनी से प्रश्न किया कि हे देवी! तुम मानो देखो, जीवनं ब्रहे उन्होंने कहा हे प्रभु! अब्रव्ह ब्रह्मा तपं ब्रहे कृतं लोकाम् यह आख्यिका देवी ने जब प्रगट की तो ऋषि आश्चर्य में परणित हो गये। उन्होंने कहादेवी! यह आख्यिका तुमने जो प्रगट की है मानो यह तो बड़ी विचित्र है तुम वास्तव में तपस्या में लीन रही हो, एक आत्मा में मानो तुम्हारी आत्मा में तप रमण कर गई है। तो मेरा जीवन तो सफल हो गया।

मेरे प्यारे! देखो, उन दोनों के विचारों को ले करके, उन्होंने विद्यालय के लिए गमन किया। जब विद्यालय में प्रवेश हुए तो नाना ब्रह्मचारी बेटा! उनके मानो चरणों की वन्दना करते हुए, मेरे पुत्रों! देखो, वह विराजमान हो गये। और विराजमान हो जाने के पश्चात ब्रह्मचारियों ने कहाकहो भगवान! आपका तपश्चर कैसा रहा है? उन्होंने कहातपं ब्रह्मा तपं लोकां तपं वंचतं ब्रह्मे यनं ब्रह्म गानं ब्रह्मे व्रतं देवाः तपं जञ्नं ब्रहे लोकां वाचन्नमं प्रथ्वां ब्रह्मे वाचन्नमं ब्रह्मे आत्मां लोकां वृत्या देवाः मेरे प्यारे! देखो, वेद मन्त्रों का उद्गीत गाते हुए, आचार्य ने, ब्रह्मचारियों को सन्तुष्ट किया और ब्रह्मचारियों से कहा हे ब्रह्मचारियों! मैं तप करने के लिए मानो मुझे आज भी ऐसा दृष्टिपात आ रहा है क्या जैसे यह पृथ्वी तप रही है जैसे यह ब्रह्मचारिणी तप रही

है, ब्रह्मचारी तप रहा है। जैसे सूर्य तप रहा है, चन्द्रमा तप रहा है, रात्रि तप रही है मानो यह संसार मुझे तपो में दृष्टिपात आ रहा है। हे ब्रह्मचारियों! जैसे तुम अपने में ब्रह्मचर्य व्रत से तप रहे हो, ऐसे ही मुझे तप ही तप दृष्टिपात आ रहा है। मेरा अन्तर्हृदय मानो देखो, तपों में रत्त हो रहा है।

राजा से राष्ट्र की पवित्रता

मेरे पुत्रों! देखो, जब ऋषि ने यह वाक प्रगट किया, तो ब्रह्मचारी बड़े प्रसन्न हुए, ब्रह्मचारियों ने कहा कि हमारा विद्यालय सफल है। विद्यालय में जब आचार्य तपे हुए होते है, तो विद्यालय वास्तव में पवित्र होता है। राजा के राष्ट्र में, जब राजा तपा हुआ होता है तो राष्ट्र वास्तव में पवित्र होता है। माता पिता जब गृहआश्रम में तपे हुए होते है तो मानो देखो, गृहाश्रम भी पवित्र, स्वर्ग कहलाता है। तो मेरे प्यारे! देखो, तपों की विवेचना करते हुए ऋषि ने वर्णन किया कि यह संसार मानो तपोमय कहलाता है। बिना तप के न तो वृष्टि होती है, बिना तप के मानो न यह संसार वृत्तियों में रत्त होता है। हे ब्रह्मचारियों! तपना उसे कहते है जहाँ प्रत्येक श्वांस को ब्रह्म में रत्त करा दे, ब्रह्म में चरी बना करके मानो उसमें हूत कर दे।

महाराजा कुम्भकरण के प्रश्न

मेरे प्यारे! देखो, यह वाक उच्चारण करते हुए, ऋषि मौन हो गएं जब ऋषि मौन हो गये, तो बेटा! ब्रह्मचारी जन अपने में उपस्थित, उनमें से एक यज्ञदत्त नाम के ब्रह्मचारी ने कहा प्रभु! आपके आश्रम में मानो देखो, अभी कुछ समय हुए, आपके पश्चात मानो देखो, राजा रावण के विधाता मानो कुम्भकरण का आगमन हुआ था। और कुम्भकरण कुछ वैज्ञानिक तथ्यों को ले करके आप से कुछ वार्ता करना चाहते थे। तो उन्होंने देखो, हमसे कुछ वार्ता प्रगट की है। हमने उनसे प्रश्न किया कि तुम हमारे पूज्यपाद से क्या प्रश्न करना चाहते हो? उन्होंने कहा मेरा प्रश्न उन्हीं से होगा। हमने कहा प्रभु! हमें उच्चारण कीजिए। उन्होंने कहा है कि मैं यह जानना चाहता हूँ, क्या, यह जो संसार है मानो देखो, वेद की भाषा में या वेद के मन्त्रों में मानो देखो,

परमाणुवाद का अपना, क्या क्या महत्त्व माना गया है? एक तो उन्होंने यह प्रश्न किया। और द्वितीय प्रश्न उन्होंने यह किया है कि मैं मानो चन्द्रमा की यात्रा करना चाहता हूँ और चन्द्रमा की यात्रा से मानो देखो, उससे ऊर्ध्वा से बुध मण्डल कहलाता है। तो बुद्ध मण्डल में, कैसा वातावरण है और वहाँ कैसे प्राणी रहते है। एक तृतीय प्रश्न उन्होंने ओर किया, कि यह मङ्गल मण्डल है, मङ्गल मण्डल से ऊर्ध्वा में मानो देखो, वशिष्ठ और अरूणधति मण्डल दोनों कहलाते है। अरूणधति मण्डल में कौनसा प्राणी रहता है और कौनसा तत्त्व प्रधान है?

तो मेरे प्यारे! देखो, ये तीन प्रश्न मानो देखो, महाराजा कुम्भकरण हमसे उच्चारण कर गएं है, उनका नामोकरण तो मानो देखो, बाल्यं ब्रह्मा उनको श्वेतकेतु कहते है परन्तु देखो, यह वाक वह उच्चारण कर गएं है। मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने कहा महर्षि भारद्वाज के आश्रम में क्यों नहीं, आपने संकेत किया, महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज से कहा प्रभु! वह मानो देखो, उनके तो वह शिष्य कहलाते है मानो देखो, महर्षि भारद्वाज मुनि के यहाँ तो उनका सर्वत्र, रावण का जितना वंशलज है वह सब मानो देखो, विज्ञान की शिक्षा वहीं से प्राप्त हुई है। उनको हम वहाँ संकेत क्यों कर देते?

तो मेरे प्यारे! देखो, यह उच्चारण करते हुए ब्रह्मचारी तो मौन हो गये। परन्तु देखो, आचार्य ने प्रश्न का उत्तर देना प्रारम्भ किया, उन्होंने कहा कि मंगलं ब्रव्हे व्रतं देवाः इस मानो देखो, चन्द्रमा से ऊर्ध्वा गति में बुध कहलाता है। बुध में मानो देखो, पार्थिव तत्त्व प्रधान वाले प्राणी रहते है वहाँ मानो देखो, तत्त्व वृत्तियों में रत्त रहने वाले, वहाँ राज्य है मानो राष्ट्रीय व्यवस्था है, वहाँ विज्ञानशालाएं है, यज्ञशालाएं है, भिन्न भिन्न प्रकार के प्राणी वहाँ अपने में वास करते है। मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने कहा कि हे प्रभु! मङ्गल से ऊर्ध्वा गति में गति करने वाला, जो मानो अरूणधति मण्डल और वशिष्ठ कहलाता है उसमें कौनसा तत्त्व प्रधान कहलाया जाता है? मेरे प्यारे! उन्होंने वर्णन करते हुए कहा कि उसमें मानो देखो, तरलत्व कहलाता है।

तरलत्व ही प्राणी रहते है, वहाँ जलाशयों की प्रधानता मानी गई है। मानो देखो, अरूणधति मण्डल और वशिष्ठ दोनों मण्डलों में यह विशेषता कहलाती है। मेरे पुत्रों! मैं विज्ञान के क्षेत्र में तो तुम्हें ले जाना नहीं चाहता हूँ, परन्तु महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने यह कहा हे ब्रह्मचारियों! तुम अपनी चर्चा करो, मानो तुम विज्ञान के वांगमय में जाने का प्रयास न करो। जब विज्ञानवेत्ता आयेंगे, कुम्भकरण जी आयेंगे तो मैं उनसे स्वतः वार्ता प्रगट कर सकता हूँ। उनके प्रश्नों में मानो तुम अपने में क्यों इन प्रश्नों की युक्तियाँ बना रहे हो।

विष्णु विवेचना

मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने कहा, तो भगवन! बहुत प्रियतम, हम यह जानना चाहते है कि भगवन! यह विष्णु क्या है? उन्होंने कहा कि विष्णु विवेचना कई काल में मैंने तुम्हें प्रगट की है। मानो विष्णु नाम परमपिता परमात्मा का है, जो पालन करने वाला है, विष्णु मानो देखो, एक ही शब्द में, सर्वत्र विष्णु के पर्यायवाची शब्द आ जाते है। क्या जो भी पालन करने वाला है, वही विष्णु कहलाता है, वह विष्णुत्व कहलाता है मानो देखो, पालन करने वालों में, चाहे सूर्य हो, चाहे प्रभु! हो, चाहे माता हो, चाहे मानो कोई भी वाची शब्द हो, वहीं विष्णु कहलाता है। चाहे राजा हो, चाहे आत्मा! हो, यह सर्वत्र मानो देखो, विष्णु के पर्यायवाची शब्द है।

पर्यायवाची शब्द

तो मेरे पुत्रों! देखो, ब्रह्मचारी यज्ञदत्त ने नमस्कार करके एक प्रश्न और किया कि भगवन! क्या वैदिक वांगमय में क्या शब्दों की सूक्ष्मता है, जो विष्णु के पर्यायवाची शब्द इतने वर्णन किए गए। तो मेरे पुत्रों! देखो, याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा तपम् एक वेद का मन्त्र उच्चारण करके उन्होंने कहा कि विष्णु ब्रव्हे व्रतं देवाः ममत्वां ब्रह्मा लोकां वाचन्नम तो मेरे पुत्रों! यह वाक उच्चारण करते हुए, ऋषि याज्ञवल्क्य ने वर्णन किया, ब्रह्मचारियों से कहा हे ब्रह्मचारियों! देखो, शब्द में, देखो, वैदिक वांगमय में शब्द की सूक्ष्मता नहीं है। परन्तु यह चिन्तन करने का इतना विशाल

मण्डल है, क्या मानो देखो, उस मण्डल में, विचार विनिमय करने का इतना विशाल यह ब्रह्माण्ड है, जिस ब्रह्माण्ड में जाने के पश्चात मानो एक वाक पर विचार करने लगूँ तो वही दृष्टिपात आने लगेगा। मानो इसीलिए उसके पर्यायवाची बन जाते हैं। जैसे गौतम का पर्यायवाची है, जो गो की रक्षा करने वाला है उसको भी गौतम कहते है। इन्द्रियों पर संयम करने वाले का नाम भी गौतम है मानो गो नाम चन्द्रमा की कान्ति उसको भी गौतम कहते है।

परमपिता परमात्मा

तो यहाँ देखो, बुद्धिमानो की देखो, दार्शनिकों का ऐसा चिन्तन रहा है कि जिस वाक को तुम चिन्तन में लाने लगोगे, तो वहीं तुम्हें सर्वशः सृष्टि, तुम्हें उसी रूप में दृष्टिपात आने लगेगी। मानो जैसे माता है, माता शब्द को ले लीजिए, देखो, एक एक परमाणु, तुम्हें माता के रूप में दृष्टिपात आने लगेगा। माता के लिए पुत्र मानो देखो, एक एक परमाणु, पुत्र रूप में दृष्टिपात आने लगेगा। तो ऐसा ही ब्रह्माण्ड है, यहां जब तुम विष्णु के ऊपर चिन्तन करने लगोंगे तो यह सर्वत्र जगत मानो देखो, विष्णु के रूप में दृष्टिपात आने लगेगा। जैसे परमपिता परमात्मा है मानो देखो, परमपिता परमात्मा तो परमपिता कहते है परमात्मा को, मेरे प्यारे! क्यों कहते हैं? क्योंकि वह परमानन्द है, परमानन्द होने से उसको परमपिता परमात्मा कहा जाता है। तो मेरे प्यारे! देखो, जब भी तुम दृष्टिपात करोगे, वहां परमानन्द ही परमानन्द दृष्टिपात आने लगेगा, उसकी प्रतिभा उसमें निहित ही निहित होती रहेगी।

शब्द में ब्रह्माण्ड

तो इसीलिए मेरे पुत्रों! देखो, विचार आता है, क्या, प्रत्येक मानव देखो, शब्द को ले करके, उस शब्द में सर्वत्र ब्रह्माण्ड निहित रहता है। चिन्तन करने का जो माध्यम है, वह बड़ा विचित्र रहता है। मेरे पुत्रों! मुझे स्मरण आता रहता है, एक समय उद्दालक गोत्र में क्या बेटा! वायु गोत्र में एक ऋषि हुए है, जिनका नाम मृति सुनीति नाम के ऋषि थे, तो सुनीति नाम के ऋषि मानो अपने आश्रम में विद्यमान थे, एक

समय वह इस वाक पर चिन्तन करने लगे, कि यह प्रकृति क्या है? यह ब्रह्माण्ड मानो अपने में क्या है, तो उसको चिन्तन करते करते मानो एक सौ पांच वर्ष हो गएं थे, इसी वाक पर चिन्तन करते करते कि यह ब्रह्माण्ड क्या है? प्रकृति क्या है? तो मानो अन्त में उन्होंने यह निर्णय दिया, क्या, एक दूसरे से गुथा हुआ मानो गुथा हुआ सा दोनों का एक मानो देखो, नृत्त होता दृष्टिपात आता है। जैसे नृत्त होता रहता है।

व्याकरण की उत्पत्ति

एक समय बेटा! देखो, नृत्त करते करते, इसी वाक पर बेटा! देखो, शिव और पार्वती के ऊपर आ गए। मेरे प्यारे! जहाँ प्रकृति दृष्टिपात आने वाले जगत को कहते है वहाँ मुनिवरों! देखो, सृष्टि पार्वती बन गई और शिव नाम मानो देखो, नृत्त होने लगा। जब ताण्डव नृत्त होने लगा तो मेरे पुत्रों! उसी को नृत्त होते होते मुनिवरों! देखो, ऋषि कहा चला गया, वही नृत्त बेटा! उसके मस्तिष्क में होता हुआ, उसे बेटा! अनहद शब्द का मानो शब्दों को ग्रहण करते हुए, मेरे पुत्रों! देखो, उससे उसके शब्दों में व्याकरण की तरंगों का जन्म होने लगा।

तो मेरे पुत्रों! देखो, विचार आता है क्या, यह ताण्डव मानो सौ सौ वर्ष हो जाते है, एक एक वस्तु के चिन्तन में वह सर्वत्र मानो देखो, उसी में सर्वत्र ब्रह्माण्ड को पिरो देता है। मुनिवरों! जैसे माता के गर्भ स्थल में एक शिशु का जब प्रवेश हो जाता है सर्वत्र ब्रह्माण्ड पिरोया जाता है एक एक परमाणु को वैज्ञानिक जन जब विभाजन करते है तो बेटा! सर्वत्र ब्रह्माण्ड उसमें दृष्टिपात आने लगता है।

तो इसी प्रकार मेरे पुत्रों! देखो, ऋषि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने ब्रह्मचारियों के मध्य में कहा हे ब्रह्मचारियों! मानो देखो, यह जो शब्द है, यह ऐसा है, जिसके ऊपर तुम अनुसन्धान करने लगो, तो वही दृष्टिपात आने लगेगा। जैसे विष्णु शब्द की तुमने विवेचना की, क्या देखो, इसके पर्यायवाची क्या है? शब्दों की सूक्ष्मता नहीं है। परन्तु जिस समय मस्तिष्क इसके ऊपर चिन्तन करता करता, गम्भीर मुद्रा

में मुद्रित हो जाता है तो बेटा! देखो, पालन करने वाली माता विष्णु है, वह मानो देखो, तीनों गुणों को माता में ही पिरो देता है। वही मानो देखो, तीनों गुणों को प्रभु में पिरो देता है। वही मानो देखो, तीनों गुणों को विष्णु के रूप में स्वीकार कर लेता है। मेरे पुत्रों! देखो, गुणाधान होता हुआ, विचार आता है बेटा! देखो, विष्णु की कल्पना करते करते, यज्ञोमयी विष्णु मेरे प्यारे! वह परमाणुओं की उत्पत्ति, करने वाला है, इसी प्रकार परमपिता परमात्मा जो विष्णु पालक है, मानो चैतन्य है, चेतना प्रदान कर रहा है। मेरे पुत्रों! देखो, उसको विष्णु शब्द उच्चारण करते हुए, शब्दों की सूक्ष्मता नहीं है परन्तु जब चिन्तन करने लगता है तो मेरे पुत्रों! देखो, एकोकीकरण हो करके सर्वत्र ब्रह्माण्ड, उसी में समाहित होता हुआ, दृष्टिपात आने लगता है।

जगत

तो मेरे पुत्रों! मैं विशेष चर्चा तो तुम्हें देने नहीं आया हूँ, मैं कोई व्याख्याता नहीं हूँ अथवा मैं तो सूक्ष्मसा, कुछ परिचय देने चला आता हूँ, वह परिचय यह चल रहा था क्या मुनिवरों! देखो, चिन्तन करते करते मानव कहाँ चला जाता है, एकोकीकरण कर लेता है इस ब्रह्माण्ड को, मेरे पुत्रों! देखो, पार्वती को वह प्रकृति स्वीकार करके देखो, वह ब्रह्मणा ब्रव्हे ताण्डवत जब नृत्त होने लगता है तो देखो, शिव का जब नृत्त हो करके मेरे पुत्रों! देखो, यह सर्वत्र परमपिता परमात्मा को शिव स्वीकार करके, उसका ताण्डव हो रहा है, नृत्त हो रहा है पार्वती मानो देखो, अपने में नृत्त करती हुई मुनिवरों! देखो, इस ब्रह्माण्ड की रचना में सहायक बन जाती है। एक रचना ही रचना दृष्टिपात आती है, मेरे पुत्रों! देखो, रचना आती है, प्रलय, रचना और रचना का विकृत्त कर देना यही मानो जगत कहलाता है। दार्शनिक कहाँ चला जाता है बेटा! मेरे पुत्रों! विचार आता है कि जैसे निर्माण हुआ, निर्माण हो करके मानो देखो, वह निर्माण समाप्त हो गया। उसी प्रकार का निर्माण पुनः प्रारम्भ करने लगता है, सर्वत्र भावनाओं को मानो अपनी अन्तरात्माओं की तरंगों को एक चित्र में पिरो

देता है, वह चित्र उसी प्रकार का दृष्टिपात आने लगता है।

आओ, मेरे प्यारे! मैं विशेष चर्चा तुम्हें प्रगट करने नही आया हूँ, आज मैं बेटा! तुम्हें यह परिचय देने के लिए आया हूँ कि यह संसार कैसा अनूठा है मानो देखो, यह दो प्रकार की आभाओं में निहित रहने वाला है। तो बेटा! देखो, दार्शनिकों ने इस संसार को, अपनी अपनी कल्पना करते हुए भिन्न भिन्न रूपों में बेटा! इस ब्रह्माण्ड को स्वीकार किया है। आज का वाक अब यह समाप्त होने जा रहा है। आज के वाक उच्चारण करने का अभिप्राय यह कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, देव की महिमा का गुणगान गाते हुए, हम बेटा! इस संसार सागर से पार हो जाए, मेरे प्यारे! हमारा उद्देश्य केवल यही है, कि हम मृत्युञ्जय बन जाए, हम मृत्यु को विजय कर ले, हमारे जीवन में अन्धकार न रहे, प्रकाश हो जाए, प्रकाश का नाम जीवन है और अज्ञान का नाम मृत्यु मानी गई है। बेटा! अज्ञान को जाने और मृत्यु को मानो अपने से दूरी करें प्रकाश में, जीवन में आ जाए यह है बेटा! आज का वाक्, अब मुझे समय मिलेगा, मैं तुम्हें शेष चर्चाएं कल प्रगट करूंगा, आज का वाक समाप्त, अब वेदों का पठन पाठन होगा। ओ३म् देवं रथाः आभ्यां गतं ऋषि वाचन्नमा ओ३म् यज्ञनं ब्रीहि वरुणा आप्यां लोकं सर्वा विशश्चमां आ भा रथं।

7.आत्म ज्ञान का प्रकाश-821020

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भान्ति, कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेद मन्त्रों का पठन पाठन किया। हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस मेरे देव परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वह एक सूत्र के तुल्य, सूत्रवत कहलाता है। जिसको यह मानव धारण करता हुआ, अपनेपन को जानता रहता है। परम्परागतों से नाना विचारक हुए है, नाना वैज्ञानिक हुए, परन्तु कोई वैज्ञानिक ऐसा नहीं हुआ, जो परमपिता परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान को सीमा बद्ध कर सके, क्योंकि उस परमपिता परमात्मा का ज्ञान और विज्ञान नितान्त माना गया है कोई वैज्ञानिक, सृष्टि के प्रारम्भ से, ऐसा नहीं हुआ, जो उस परमपिता परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान में और सर्वत्रता में पूर्ण रूपेण बन गया हो, कोई भी ऐसा ज्ञानी नहीं हुआ, परन्तु हमारे ऋषि मुनियों ने परम्परागतों से ही, बहुत अनुसन्धान किया और उन अनुसन्धानवेत्ताओं में, नाना ऋषि हुए है।

परन्तु उन ऋषि मुनियों में, एक महर्षि बटुक मुनि हुए, जिनके जीवन की धाराएं मानो देखो, मैंने तुम्हें कई काल में प्रगट कराई है। आज मैं तुम्हें ऋषि के क्षेत्र में तो नहीं ले जाऊंगा, परन्तु विचार केवल यह है कि उड़ान उड़ने वाला मानो परम्परागतों से ही उड़ान उड़ता रहा है, एक एक वेदमन्त्र के ऊपर जब अध्ययन किया गया, तो एक एक वेदमन्त्र में बेटा! परमपिता परमात्मा की प्रतिभा अथवा उसका ज्ञान और विज्ञान, एक एक वेदमन्त्र में निहित होता रहा है और उस वेदमन्त्र को जब वैज्ञानिकों ने अपनी शालाओं में, मानो उसका विभाजन किया, उसकी मीमांसा की उसके ऊपर गम्भीर चिन्तन किया गया मानो और भी उसके ऊपर अध्ययन किया गया तो बेटा! उस एक ही वेदमन्त्र में बेटा! देखो, ब्रह्माण्ड का जो विज्ञान है, वह बेटा! उसमें निहित होता हुआ, ऋषि मुनियों को दृष्टिपात हुआ,

परन्तु जब ऋषि समाधि में प्रवेश करके, समाधिष्ट हो करके बेटा! प्रभु की सृष्टि को जानना चाहता है, प्रभु की महिमा को जानना चाहता है। परन्तु कोई याज्ञिक बन करके, याग के परमाणुओं को एक अनुसन्धान का विषय बना रहा है और वह विषय बना करके, विज्ञान की तरंगों में उड़ान उड़ने लगता है। परन्तु वह वेद का मन्त्र है जिसमें से नाना प्रकार की धाराएं उद्बुद्ध हो जाती है। मानो वे धाराएं, तरंगों के रूप में परणित हो जाती है, वही मानो देखो, वही परमाणुओं के रूप में परणित हो जाती है, वही परमाणु मानो देखो, नाना रूपों में परिवर्तित होते हुए, इस सृष्टि का निर्माण करते रहते है।

मन्त्र की त्रिधारा

तो मेरे प्यारे! आओ मैं आज तुम्हें विशेष चर्चाएं प्रगट करने नहीं जा रहा हूँ, आज का हमारा वेदमन्त्र क्या कह रहा है, आज के वेद मन्त्रों में मानो जहाँ ब्रह्म सूत्र की चर्चाएं आ रही थी, वहाँ सु की चर्चाएं मानो उसके ऊपर हम नाना प्रकार की धाराएं और उसके विज्ञान की प्रतिभा, हमारे समीप आती चली जा रही थी। मेरे पुत्रों! देखो, हमारा एक एक वेदमन्त्र तीन धाराओं में हमें रमण कराता रहता है। एक व्यावहारिक धारा है, एक वैज्ञानिक धारा है और एक यौगिक धारा कहलाती है। परन्तु देखो, यही धाराएं सतोगुण, रजोगुण, तमोगुण रूप में परणित हो जाती है। प्रत्येक मानव यह कहता रहता है परम्परागतों से ही, बेटा! हम भी यह घोषणा करते रहे है कि मानव को काम और क्रोधी नहीं बनना चाहिए। काम, क्रोध, लोभ, मोह, अभिमान के क्षेत्र में नहीं जाना चाहिए। क्योंकि ये मानव का असृत कहलाते है ये मानव के सुकृत का हनन करा देते है परन्तु वेद का मन्त्र यह कहता है कि सामान्य रूप से, जब यह अपनी आभा में गति करते रहते है इन्हीं के द्वारा बेटा! संसार का निर्माण होता हुआसा हमें दृष्टिपात होता है। परन्तु यदि रजोगुण नहीं होगा, तो तमोगुण का कोई महत्त्व नहीं है और रजोगुण तमोगुण नहीं है तो सतोगुण का कोई महत्त्व नहीं है संसार में, परन्तु यह रहने चाहिए सामान्य, जब इनमें अति

आ जाती है, उसी काल में मानव रसातल को जाना प्रारम्भ हो जाता है। परन्तु जब यह सामान्यत्व गति में होते रहते है, योगीजन बेटा! तमोगुण को रजोगुण में प्रवेश कर देते है रजोगुण, तमोगुण को सतोगुण में प्रवेश कर देते है और इन तीनों गुणों को मेरे प्यारे! देखो, अक्षरा तीत बीज जो प्रभु है, जो चेतना है, एक रस रहने वाली चेतना मानो उसमें रत्त हो करके इन तीनों गुणों से मुनिवरों! योगी उपराम हो जाता है। परिणाम क्या मुनिवरों! मैं तुम्हें योग के क्षेत्र में, आज ले जाना नहीं चाहता हूँ विचार विनिमय क्या चल रहा है। बेटा! आज का हमारा वेद मन्त्र, हमें नाना प्रकार की प्रेरणा दे रहा है, नाना प्रकार की आभाओं में ले जा रहा है।

सतोगुणी शब्द

जैसा मुनिवरों! पुरातन काल में हमने तुम्हें बहुतसी वार्त्ताएं प्रगट करते हुए कहा था, आज भी मेरे प्यारे! मैं सतोगुण के क्षेत्र में तुम्हें ले जाना चाहता हूँ क्या सतोगुणी जो शब्द होते है, यह मानव को कहीं के कहीं ले जाते है बेटा! मैंने तुम्हें कई काल में यह वाक्, इन वाक्यों की पुनरूक्ति करता रहता हूँ आज भी बेटा! मैं इन वाक्यों की पुनरूक्तियाँ कर रहा हूँ। क्योंकि यह वाक मुझे बहुत प्रियतम लगा करते है, और इसके ऊपर कोई न कोई नवीन वाक मुझे स्मरण आते रहते है। मुझे स्मरण है बेटा! महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज का जीवन, याज्ञवल्क्य मुनि महाराज अपने में मानो देखो, महान और पूर्णत्व कहलाते थे। परन्तु देखो, इन्ही के समकालीन महर्षि भारद्वाज हुए, भारद्वाज मुनि महाराज, अपने में पूर्णत्व को प्राप्त होते रहे है, बेटा! हमने कई काल में तुम्हें इन वाक्यों की रचनाएं और उन वाक्यों की पुनरूक्तियों में तुम्हें ले गये, आज भी मैं तुम्हें ले जाना चाहता हूँ। मेरे पुत्रों! देखो, आज मैं तुम्हें एक ऐसे क्षेत्र में ले जाना चाहता हूँ, जहाँ बेटा! मानव अपने में देखो, एक चेतना की उपासना करता है एक चैतन्यवत बनने के लिए प्रेरित होता है। मेरे प्यारे! आओ, मैं ऋषियों की वार्त्ताओं में ले जाना भी नहीं चाहता हूँ, आज मैं तुम्हें आत्मा के क्षेत्र में ले जा रहा हूँ।

मेरे प्यारे! देखो, मुझे वह काल स्मरण आता रहता है जब हमारे यहाँ नाना राजा हुए है, जिन राजाओं के यहाँ आध्यात्मिक याग, भौतिक याग, देव याग, ब्रह्मयाग नाना प्रकार के यागों का चयन होता रहा है। हमारे यहाँ बेटा! एक राजा जनक हुए, राजा जनक के यहाँ नाना प्रकार के यागों का चयन होता रहता था। वह जहाँ अश्वमेध याग करते थे, वहाँ गो मेध और अग्निष्टोम याग भी किया करते थे, वाजपेयी याग और रुद्र याग भी करते रहे है। मेरे प्यारे! जहाँ अजामेध और ब्रह्ममेध याग होते रहे है। मेरे प्यारे! जिस राजा के यहाँ देव याग, ब्रह्मयाग, वहाँ मुनिवरों! देखो, ब्रह्मवादियों का सम्मेलन होता रहता था। आओ, मेरे प्यारे! उनके सम्मेलन की, जो प्रतिभा उनके मस्तिष्कों में सदैव परणित होती रही है। मैं आज तुम्हें उन वाक्यों की पुनरुक्ति कर रहा हूँ।

मेरे प्यारे! राजा जनक और उनकी पत्नी मानो वह सदैव ब्रह्म के चिन्तन में रमण करते रहते थे। मेरे पुत्रों! देखो, एक समय सायंकाल के समय महर्षि बटुक मुनि महाराज उनके द्वार पर आए और बटुक मुनि महाराज और उनकी पत्नी स्नेहलता मानो दोनों का विचार विनिमय हो रहा था और ब्रह्म की चर्चा होते हुए मानो देखो, बटुक मुनि तो अपने आश्रम चले गये, अपने कक्ष में और राजा जनकपत्नी मानो देखो, अपने कक्ष में, निंद्रा की गोद में चले गये। यही चिन्तन होता रहा। वेद का मन्त्र स्मरण आता रहा, परन्तु इसी चिन्तन में वह निंदा की गोद में चले गये। निंदा की गोद में जाने के पश्चात मध्यरात्रि का काल जब समाप्त हुआ तो मेरे प्यारे! देवी जागरूक हो गई, और देवी के समीप नाना मन्त्र स्मरण आने लगे, वेदमन्त्र कह रहा था प्रकाशां ब्रह्मे वर्णा प्रव्हा वसनजन ब्रीही अस्तों वेद का वाक कह रहा था कि हम किसके प्रकाश से प्रकाशित होते है? तो वेद के मन्त्र में यह विशेषता है, वही प्रश्न कर रहा है वही उत्तर दे रहा है। मेरे प्यारे! द्वितीय मन्त्र कहता है सूर्याणि गच्छं चन्द्रो ब्रह्म प्रविष्टो वाचन्नमा अग्ने व्रताणि मानो देखो, वेद की आख्यिका जब यह कहने लगी, क्या जब मंगले, प्रश्न किया गया तो उत्तर में कह रहा है कि सूर्य,

चन्द्रमा प्रकाशां अग्नं ब्रह्मे मानो नाना प्रकार की आभाओं में वह रत्त कराता है।

प्रकाशक

मेरे प्यारे! चिन्तन करने लगी, मानो राजा जनक के कक्ष में पहुंची, उन्होंने उन्हें जागरूक किया और यह कहा कि प्रभु! यह वेदमन्त्र क्या कह रहा है? मैं इस वेदमन्त्र का अपने में निमटारा नहीं कर पा रही हूँ आप इसका निमटारा कर दीजिए। मेरे प्यारे! राजा जनक भी उस आभा में, उच्चारण में लग गये, परन्तु वह ब्रह्मयाग होने लगा, ब्रह्म चिन्तन करते रहे, परन्तु अपने में उनका कोई निमटारा नहीं कर सके। विचार आता रहता है तुम्हें मध्य रात्रि से, प्रातःकालीन हो गया, प्रातःकाल होते ही मेरे प्यारे! देखो, अपने आसन को त्याग दिया, अपनी क्रियाओं से निवृत्त हो करके, राजा जनक के यहाँ, जहाँ ब्रह्मयाग होता रहता, मेरे प्यारे! उनके यहाँ, देव पूजा भी होती रहती थी। वह मुनिवरों! देखो, राजा जनक के यहाँ एक यज्ञशाला, उस यज्ञशाला में एक प्रतिभा, ऋषि मुनियों का आसन विद्यमान है। परन्तु राजा जनक और उनकी पत्नी अपनी यज्ञशाला में पहुंचे, उस यज्ञशाला में एक आसन, पुरोहित का विद्यमान है, एक आसन ब्रह्मवेत्ता का है, मुनिवरों! देखो, कुछ ब्रह्मचारियों के आसन लगे हुए है। सब अपने अपने आसनों पर आ करके विद्यमान हो गये, महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज, अपने विशाल ब्रह्मवेत्ता के आसन पर विद्यमान थे। मेरे प्यारे! देखो, राजा जनक, उनकी पत्नी ने प्रातःकालीन अग्नि का चयन किया, अग्निहोत्र किया और देव पूजा करने के पश्चात मेरे प्यारे! अग्नि का आह्वान और उसमें साकल्य प्रदान करके, वायु मण्डल को पवित्रता में अपनी वाणी को पवित्र बनाते, परन्तु वह मौन हो गये। राजा ने यह सङ्कल्प कर लिया पत्नी सहित की हम, आज आचार्य ब्रह्मवेत्ता से कोई प्रश्न नहीं करेंगे। परन्तु जैसे वह याग करके मौन हुए, महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि बोलेहे यज्ञमान! तुम मेरे से कोई प्रश्न कर सकते हो। राजा जनक के हर्ष की कोई सीमा न रही, पति पत्नी नत मस्तक हो करके ऋषि से कहते है कि महाराज! हम प्रातःकालीन वेद का अध्ययन कर रहे थे, वेद

का मन्त्र कह रहा था कि हम किसके प्रकाश से प्रकाशित होते है? कौन हमारा प्रकाशक है, कौन प्रकाश के देने वाला है? तो भगवन! हम उस प्रकाश को जानना चाहते है।

नेत्रों का प्रकाशक सूर्य

मेरे प्यारे! राजा जनक के इन वाक्यों को पान करके, महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज, ब्रह्मवेत्ता, ब्रह्मनिष्ठ कहते है हे राजन! इसको प्रत्येक मानव जानता है, प्रत्येक बालिका जानती है, कि हमारे जो नेत्र है, वे सूर्य के प्रकाश से प्रकाशमान होते है। सूर्य हमारे नेत्रों का देवता है, वह प्रकाश के देने वाला है, प्रातःकाल उदय होता है, प्रकाश देता रहता है। वह आदित्य कहलाता है। मानो आदित्य बन करके, वह अपना प्रकाश देता है। उसे हमारे यहाँ उदयन नाम से पुकारा जाता है, वह उदयन है जो उदय होता है। जो उदय हो करके हमें प्रकाश देता है मानो देखो, उसको हमारे यहाँ देखो, अप्रतां व्रव्हे अस्ति व्रख कहते है मानो जो प्रकाश दे करके, उस प्रकाश को अपने में धारण कर लेता है। वेद का आचार्य कहता हैहे राजन! यह जो सूर्य हमारे नेत्रों का देवता है यह जो सूर्य का प्रकाश है यह हमारे जीवन को उद्बुद्ध करता है। नाना प्रकार की वनस्पतियों में प्रकाश दे करके, उनका जन जीवन बनाता है, नाना प्रकार की मानो वनस्पतियाँ परिपक्व बनती है। यहाँ तक नहीं, मानो देखो, वही वनस्पतियाँ पशु इत्यादि पान करते है, वह पय उत्पन्न कर रहे है। मानो देखो, वह स्वञ्जलि बन करके, गो नाम के पशु के रीढ़ के विभाग में एक सूर्य केतु नाम की नाड़ी होती है, उस नाड़ी का प्रातःकाल सूर्य उदय होते ही, नाड़ी का ऊर्ध्वा मुख बन जाता है। परन्तु जैसे सूर्य की किरण आई वह नाड़ी उन किरणों को अपने में ग्रहण करती है, जिन किरणों से स्वर्ण की मात्रा की उत्पत्ति होती है। मानो वह स्वर्ण को लेती रहती है।

मेरे प्यारे! देखो, वहीं गो नाम के मानो शरीर में जो यन्त्रालय लगे हुए है, उनमें वह जो सूर्य की किरण मानो प्रभावित होती है उन्हीं मानो यन्त्रालयों में यह नाना

रसों का अस्वेत बन करके बेटा! देखो, दूध देती रहती है। मानो वह गो नाम का पशु, जब दुग्ध देता है उसके दुग्ध में, पीत वर्ण होता है उस दुग्ध में मानो देखो, स्वर्ण की मात्रा विशेष होती है, उसके घृत्त में मानो स्वर्ण होता है, वह सूर्य की किरण उसमें आभाहित हो रही है। मेरे प्यारे! वह जो मेरा प्यारा प्रभु, कितना वैज्ञानिक है, उसके विज्ञान को कोई सीमा बद्ध नहीं कर सकता है। गो नाम के पशु में बेटा! वही पशु मानो उसी किरण को प्राप्त कर रहा है। वाह रे, मेरे प्यारे! प्रभु, सृष्टि के पिता ने बेटा! एक पौधे पर दो प्रकार के अन्न की रचना की है, एक पशु पान करता है तो एक मानव पान कर रहा है तो ओज की उत्पति कर रहा है और गो पान कर रही है तो वह दुग्ध और औषधियाँ दे रही है।

मेरे प्यारे! वह विज्ञान है, वह महानता में रमण करने वाला विज्ञान है। इसके ऊपर मानव बेटा! परम्परागतों से अनुसन्धान करता रहता है। वही सूर्य की किरण बेटा! गो के शरीर में अमृत को उत्पन्न कर रही है वही मानो बेटा! पृथ्वी के गर्भ में बेटा! स्वर्ण की धातु का निर्माण कर रही है। द्वितीय किरण आती है जल को शक्तिशाली बना रही है। पृथ्वी के गर्भ में बेटा! खनिजों का निर्माण हो रहा है। मेरे प्यारे! वह नाना प्रकार की किरणों मानो सूर्य की मानो इस समाज को, जन जीवन दे रही है। उसी से वनस्पतियाँ तप रही है, उसी से मानो शैलखण्डा नामक औषधियों का निर्माण हो रहा है, उसी से अष्टवर्गों का निर्माण हो रहा है, उसी से सोमकेतु धातुओं का निर्माण हो रहा है कैसा मेरे प्यारे! प्रभु का विधान है, कैसा यह विज्ञान है, जिसके ऊपर मानव बेटा! देखो, परम्परागतों से अनुसन्धानवेत्ता, अनुसन्धान करता रहा है, विचारता रहा है। योगी समाधिष्ट हो करके, पृथ्वी के गर्भ में प्रवेश कर जाता है। मेरे प्यारे! मैं इस क्षेत्र में, विशेषकर तुम्हें ले जाना नहीं चाहता हूँ विचार विनिमय, वेद का आचार्य कहता है हे राजन! वह जो उदयन है जो उदय हो करके, प्रकाश दे रहा है, जो आदित्य, बन करके समुद्रों को तपाता रहता है बड़वानल नाम की अग्नि, जो समुद्रों में रहती है उससे मिलान करता हुआ मेघों की उत्पत्ति कर

देता है। उससे बेटा! मेघ बनते है धीमीधीमी वृष्टि हो जाती है। वह आदित्य नाम का जो मानो सूर्य है। वह जलों का उत्थान करता है। बड़वानल नाम की अग्नि, जो समुद्रों में रहती है उससे वह मिलान करता है। धीमी वृष्टि हो करके बेटा! मानव का जन जीवन बन जाता है। अन्नाद की उत्पत्ति हो जाती है। मानव का जन जीवन चल जाता है बेटा! मेरे प्यारे! विचार क्या, वेद का ऋषि याज्ञवल्क्य मुनि कहते है हे राजन! मानो यह सूर्य हमारे नेत्रों का प्रकाशक है, नेत्रों में ज्योति दे रहा है प्राणीमात्र इससे ज्योतिवान बन रहा है।

चन्द्रमा से अमृत

मेरे प्यारे! देखो, जब ऋषि ने यह कहा तो देवत्वं अमृतां कहते है, हे राजन! हे ऋषिवर! मैं सूर्य की मीमांसा विशेष नहीं चाहता हूँ, मैं यह जानना चाहता हूँ जब यह सूर्य नहीं होता, तब हमारा प्रकाशक कौन है? कौन प्रकाश देता है? याज्ञवल्क्य मुनि कहते है हे राजन! जब यह सूर्य नहीं होता, तो हम चन्द्रमा के प्रकाश में अपना व्यापार प्रारम्भ कर देते हैं। चन्द्रमा हमारे नेत्रों का देवता, यही सोम की वृष्टि करता है। यह सोम देता रहता है यह रात्रि का स्वामी है, अहिल्या का पति है मानो देखो, यहाँ रात्रि नाम अहिल्या को कहते है चन्द्रमा मानो देखो, प्रकाश सोम की वृष्टि बनाता हुआ बेटा! अहिल्या को अपने में धारण कर लेता है। मानो देखो, वह अपने में रात्रि, अन्धकार को ग्रहण कर लेता है। परन्तु देखो, यही चन्द्रमा है, माता की रसना के निचरले विभाग में, एक चन्द्रकेतु नाम की नाड़ी होती है, पुत्रों! परन्तु वह जो चन्द्रकेतु नाम की नाड़ी है वह मुनिवरों! देखो, चन्द्रमा से अमृत को सींचती रहती है, ग्रहण करती रहती है। परन्तु वही नाड़ी मानो उस नाड़ी का सम्बन्ध, माता की पुरातत नाम की नाड़ी से होता है। पुरातत नाम की नाड़ी का सम्बन्ध, माता की लोरियों से होता है और वह जो बालक माता के गर्भस्थल में, हम जैसा शिशु विद्यमान है परन्तु देखो, माता की उन नाड़ियों का सम्बन्ध, बालक की नाभि के द्वारा बेटा! चन्द्रमा से अमृत प्रदान किया जा रहा है। बालक पनप रहा है, अमृत

को पान कर रहा है। मेरे प्यारे! अमृत वाहिनी जो नाड़ियाँ है वह अमृत दे रही है, माता को कोई प्रतीत नहीं है, कौनसी नाड़ी चन्द्रकेतु है परन्तु देखो, जब चिन्तन में यह वाक आते है तो माता की रसना के निचरले विभाग में, वह अमृत को सींचती रहती है, पुरातत नाम की नाड़ी का समन्वय होता है। पञ्चम नाड़ी लोरियों से चलती है और माता की नाभि से समन्वय हो करके बालक की नाभि से नाड़ियों का सम्बन्ध होता है।

कृषि में रसों का भरण चन्द्रमा के द्वारा

मेरे प्यारे! देखो, बालक पनप रहा है, अमृत को पान कर रहा है, माता उन्हें अपने में भरण कृति करा रही है, जन जीवन प्राप्त हो रहा है। वहीं चन्द्रमा, जब कृषक पृथ्वी के गर्भ में जब बीज की स्थापना कर देता है, वही चन्द्रमा है जो अपनी सोममयी किरणों के द्वारा, सोम की वृष्टि कर देता है, कान्ति के द्वारा, मेरे प्यारे! देखो, वह कृषक प्रसन्न हो रहा है। मेरी कृषि बहुत सुन्दर उपज रही है, सुन्दर हो ही है क्योंकि उसमें चन्द्रमा है, जो अमृत दे रहा है, वह अमृत को बहा रहा है। मेरे प्यारे! वही चन्द्रमा है जिसको सोम कहते है, समुद्रों को भी सोम कहते है पूर्णिमा का जब दिवस आता है तो चन्द्रमा अपनी सम्पन्न कलाओं से बेटा! चन्द्रमा से मानो समुद्रों से यह चन्द्रमा सोम को अपने में ग्रहण कर लेता है। ग्रहण करके मानो अमावस्या से ले करके प्रतिपदा, द्विपदा मानो यह देखो, शुक्ल पक्ष में बेटा! प्रकाश में मानव देखो, अमृत को बिखेरता रहता है, पूर्णिमा के दिवस चन्द्रमा सम्पूर्ण कलाओं से युक्त होता है। परन्तु यह समुद्रों से तेजोमयी अमृत को अपने में ग्रहण कर लेता है और वृष्टि के रूप में उसको वितरित कर देता है। मेरे प्यारे! प्रभु का विज्ञान मानो कितना नितान्त है, इससे तुम्हें यह प्रतीत हो गया होगा।

मण्डलों की माला

मेरे प्यारे! देखो, वेद के ऋषि ने जब यह मीमांसा की तो राजा ने कहा प्रभु! मैं यह जानना चाहता हूँ जब यह चन्द्रमा नहीं होता, तब हम किसके प्रकाश से प्रकाश

मान होते है? उन्होंने कहा हे राजन! धीमा धीमा प्रकाश आ रहा है, मानो तारामण्डलों के प्रकाश से हम अपने पथ को ग्रहण कर लेते हैं, हम उस मार्ग के पथिक बन जाते है, जिस मार्ग से हमारा विच्छेद हो गया है। परन्तु धीमा धीमा प्रकाश आ रहा है, प्रकाश को ग्रहण कर रहे है, अपने में प्रकाशित हो करके अपनी पगडण्डियों को ग्रहण कर रहे है मानो देखो, नाना मण्डलों का प्रकाश आ रहा है। हे राजन! तुम्हें प्रतीत होगा, यह ब्रह्माण्ड मैंने कई समय, तुम्हारे समक्ष स्पष्ट किया, आज भी किए देता हूँ। मानो देखो, जैसा यह हमारा पृथ्वी मण्डल है, ऐसे ऐसे तीस लाख पृथ्वियाँ है जो सूर्य की परिक्रमा कर रही है मानो सूर्य से प्रकाश आ रहा है। मेरे पुत्रों! देखो, वेद का आचार्य कहता है, याज्ञवल्क्य हे राजन! जैसा हमारा यह सूर्य मण्डल है, ऐसे ऐसे एक सहस्र सूर्य है, जो बृहस्पति की परिक्रमा कर रहे है। मानो देखो, जैसा यह बृहस्पति है ऐसे एक सहस्र बृहस्पति है जो आरुणि मण्डल की परिक्रमा कर रहे है। एक सहस्र आरुणि है जो मानो देखो, ध्रुव मण्डल की परिक्रमा कर रहे है, एक सहस्र ध्रुव जो मुनिवरों! देखो, पुष्य नक्षत्रों की परिक्रमा कर रहे है एक सहस्र पुष्य नक्षत्र है जो मेरे प्यारे! देखो, मूल नक्षत्रों की परिक्रमा कर रहे है। एक सहस्र मूल नक्षत्र है, जो मेरे प्यारे! देखो, अचंग मण्डलों की परिक्रमा कर रहे हैं। एक सहस्र अचंग मण्डल है जो मेरे प्यारे! देखो, रोहिणीकेतु मण्डलों की परिक्रमा कर रहे है। मेरे प्यारे! यह विशाल प्रभु का जगत है, यह विशाल प्रभु का ब्रह्माण्ड है मानो इसमें नाना निहारिका, लोक लोकान्तर है, जो बेटा! एक दूसरे में पिरोएं हुए है, एक दूसरे की माला बनी हुई है, परन्तु देखो, यह कितनी विचित्र रचना है प्रभु की।

आज मैं बेटा! रचना में नहीं जा रहा हूँ तुम्हें केवल परिचय कराने के लिए आया हूँ और वह परिचय यह है कि मानो यह लोक लोकान्तरों का जगत है, यह नाना नक्षत्रों का जगत है यह नाना मानो सूर्य मण्डलों का जगत है, जब यह धीमा धीमा प्रकाश तारा मण्डलों का आता है, हम उसके प्रकाश से, संसार का व्यापार करने

लगते है। नेत्रों का प्रकाश आ करके मानो हम पगडण्डियों को ग्रहण कर लेते हैं। मेरे प्यारे! देखो, वेद के आचार्य ने, एक मीमांसा की, परन्तु और ब्रह्माण्ड में, मैं भी जाना नहीं चाहता हूँ, तुम्हें परिचय दे रहा हूँ।

मेरे प्यारे! याज्ञवल्क्य मुनि महाराज से राजा और उनकी पत्नी ने नत मस्तिष्क हो करके कहा हे प्रभु! हम जानना चाहते है कि जब मानो यह तारामण्डल भी नहीं होता, तब हम किसके प्रकाश से प्रकाशमान होते है, उन्होंने कहा हे राजन! जब यह मानो तारा मण्डल भी नहीं होता, तो हम अग्नि के प्रकाश से प्रकाशमान होते है। यह अग्नि हमारा प्रकाशक है, यह अग्नि काष्ठों में रहने वाली है, यह अग्नि गृह में प्रदीप्त होने वाली है, यही अग्नि माता के गर्भ स्थल में, शिशु को तपाती रहती है, यही अग्नि है जो मानो समुद्रों की बड़वानल नाम की अग्नि बन करके रहती है, यही अग्नि है जो द्यौ लोक में, तरंगों में भासती रहती है यही अग्नि है बेटा! देखो, द्यौ लोकों का सूत्र बनी है। मेरे पुत्रों! ऋषि कहता है, राजन! मानो अन्धकार छाया हुआ है, मेरी प्यारी माता मानो इस अग्नि के प्रकाश से, गृह को प्रकाशित कर देती है। गृह प्रकाशित हो जाता है। प्रकाश भासने लगता है, प्रकाश में हम रमण करने लगते है, यह अग्नि बेटा! कितनी विचित्र है, आयुर्वेदाचार्यों के द्वारा जब इस अग्नि विषय का चिन्तन गया तो उन्होंने चौरासी प्रकार की अग्नियों की गणना की। परन्तु जब इसी अग्नि का विज्ञान, वैज्ञानिकों के समीप पहुंचा उन्होंने बेटा! पिचासीवी जो तरंग थी, जब उसका विभाजन किया तो मानो उसमें से अरबों खरबों प्रकार की तरंगों का जन्म हुआ। अरबों खरबवीं जो तरंग थी जब उसका विभाजन किया तो उसमें से बेटा! किरणों का जन्म हुआ, परिणाम क्या मुनिवरों! नाना तरंगों का जन्म हो गया, वह तरंगित मानो देखो, उस ब्रह्माण्ड को चला रही है, वह अग्नि की धारा है, जो मानो इस मानो देखो, ब्रह्माण्ड का सूत्र बनी हुई है। एक दूसरे में पिरोने से बेटा! अग्नि मानो अपने में प्रकाश देती है, वही द्यौ लोक में, विद्युत बन करके रहती है मानो वही अग्नि जलों का उत्थान करके मानो देखो, वृष्टि के मूल

में जाती है। वही अग्नि है जिस मानव का शरीर बेटा! देखो, उस अग्नि में प्रवेश हो करके मानव का शरीर उससे संचालित हो रहा है।

विचार विनिमय क्या, वेद के ऋषि ने कहा राजन! यह अग्नि मानो देखो, विशाल प्रकाशमान है, यह अग्नि काष्ठों में रहने वाली है, यह अग्नि तरंगों में रहने वाली है, यही अग्नि है, जो शब्द को अपनी धारा पर मानो वह अपने में धारण करके मानो सबको व्यापक बना देती है, या अन्तरिक्ष में स्थिर बना देती है। मानो देखो, वहाँ शब्द के साथ में चित्र भी होता है मानो उसका क्रियाकलाप भी विद्यमान होता है वायुमण्डल में प्रकाश बेटा! तरंगों के रूप में गति करता है। अन्तरिक्ष में बेटा! वह स्थित हो जाती है। विचार विनिमय क्या, यही अग्नि है जो मानो देखो, ब्रह्मणा अस्सुते यह अग्नि, मेरे प्यारे! आभा में, जल को अपने में धारण कर लेती है। वायु की तरंगों में, जो अग्नि प्रवेश करती है, तो मानो वायु उत्पन्न हो जाती है। जल की तरंगें इसमें प्रवेश करती है तो शीतल बन जाती है मेरे पुत्रों! देखो, आभा में गति करने वाला, यह विज्ञान है, जिसके ऊपर बहुत परम्परागतों से अनुसन्धान होता रहा।

शब्द का प्रकाश

परन्तु जब ऋषि ने इस प्रकार की वार्ता प्रगट की, तो मुनिवरों! राजा जनक ने कहा हे प्रभु! मैं जानना चाहता हूँ, जब यह अग्नि नहीं होती तब हम किसके प्रकाश से प्रकाशमान होते है। उन्होंने कहा हे राजन! जब यह अग्नि नहीं होती, तो हम मानो देखो, शब्द के प्रकाश से प्रकाशमान होते है? यह शब्द अन्तरिक्ष में लय हो जाता है। यह शब्द ही है जो मानव को महान बनाता है। यह शब्द है जो राष्ट्र को ऊँचा बनाता है, यह शब्द है मेरे प्यारे! जो पाण्डित्व की दृष्टि से, दृष्टिपात होने लगता है, ऋषित्व बन जाता है, इस शब्द के ऊपर मानव को चिन्तन करना चाहिए। बेटा! शब्द का प्रकाश, एक ऐसा प्रकाश है, मेरे प्यारे! शब्द यदि महान ज्ञान से युक्त है, सतोगुण से युक्त है मेरे प्यारे! वही शब्द मानव के जनजीवन को ऊँचा

बना देता है। प्रकाश में अज्ञान छाया हुआ है, प्रकाश वाले शब्दों को, ज्ञानियों के शब्दों को ग्रहण करके मानव ज्ञानवान बन जाता है, प्रकाश में रमण करने लगता है मानो देखो, यह सुकाम शब्द है, यह शब्द है जो राष्ट्र के राष्ट्रों को अग्नि के मुखारविन्द में पहुंचा देता है, यही शब्द है मेरे प्यारे! शब्द की गति को, ध्वनि को जान करके वैज्ञानिक जन बेटा! सूर्य की किरणों से सूर्य लोक में चले जाते है। मेरे प्यारे! देखो, वायु की तरंगों में, वायु को, ध्वनि को जान करके, वायु को जान लेते है। मेरे प्यारे! देखो, यही शब्द है जो मानव को ऊँचा बनाता है, प्रकाश के देने वाला है।

विवेकी पुरुषों से समाज

जैसे एक मानव मार्ग में चला जा रहा है वह मार्ग से कुमार्ग पर चल देता है। परन्तु कुमार्ग में जा करके जब अन्धकार छाया हुआ है वह कह रहा है अरे, मैं अन्धकार में आ गया हूँ, भयंकर वन में, कोई है मार्ग चेताने वाला, जो मानव मार्ग में स्थित है, वह कह रहा है आ जाओ, मैं मार्ग में स्थित हूँ। वह मार्ग का पथिक बन जाता है। उस मार्ग को वह ग्रहण कर लेता है, वह मानो कुमार्ग से दूरी चला गया है, यह बेटा! सब शब्द है, यह शब्द की ज्योति है, जो मानव के हृदय को विदीर्ण कर देती है एक मानव देखो, महान अज्ञानी है वह अपने आसन पर विद्यमान है परन्तु पाण्डित्व का विचार विनिमय चल रहा है, आत्मा को चेताओं, आत्मा को जानो, शब्द को जानो, ज्ञानवान बनो, परन्तु देखो, जो अज्ञानी है वह विचारता है, ज्ञान कैसा होता है? प्रश्न कर रहा है पाण्डित्व से, वह अपनी वाणी से, उसकी वाणी का समन्वय कर देता है तो बेटा! देखो, वह अज्ञानी, ज्ञानवान बन जाता है। वो शब्द का प्रकाश है, शब्द के प्रकाश से मेरे प्यारे! देखो, राष्ट्र में जब सत्यवादी पुरुष, विवेकी पुरुष होते है तो राजा का राष्ट्र पवित्र बन जाता है। विवेकी पुरुषों से, यह समाज ऊँचा बनता है ज्ञानियों से, समाज ज्ञानवान बनता है, ज्ञानियों से राष्ट्र ऊँचा बनता है, विवेकी पुरुषों से राष्ट्र का निर्माण ऊँचा होता है। मेरे प्यारे!

देखो, विवेकी जब ब्राह्मणत्व वाणी के उद्गार गाने वाले होते है, उस समय राष्ट्र को, राजा, पुरोहित बन करके वह राष्ट्र को ऊँची दशा में ले जाते है।

विचार विनिमय क्या मेरे प्यारे! देखो, वाणी का उद्गम है, यह वाणी का उद्गार है जब वाणी विवेकमयी होती है तो वाणी गृह को पवित्र बना देती है, यह वाणी मानो देखो, जब विवेक से रहित होती है, जब अश्लीलता से परिपक्व होती है तो गृह को नरक बना देती है। मेरे प्यारे! गृह भी पवित्र वाणियों से, पवित्र बनते है, मानो राष्ट्र भी पवित्रता से ऊँचा बनता है, समाज और विद्यालय सब महानता से ऊँचे बनते है। तो विचार विनिमय क्या, वेद का ऋषि कहता है हे राजन! इस शब्द की पूजा करो, इस शब्द को जानने का प्रयास करो, यह शब्द ही हमारा प्रकाशक है, यह शब्द ही हमारा जीवन है, यह शब्द ही मानो देखो, हमें ऊँचा बनाता है, इस शब्द के कारण ही, मानव व्याकरणिक भी बन जाता है, इस शब्द के कारण शब्दों की झड़ी लगा देता है, एक दूसरे शब्द को मानो उसी स्थली पर ला करके, उसको हम शब्द में, जहाँ यह भौतिक विज्ञान मानो देखो, शब्द तक, ध्वनि तक रहता है यह जितना विज्ञान है, वह ध्वनि तक रहता है। परन्तु आत्मा का जो विषय है वह अनुभव का विषय रह जाता है। उसे आध्यात्मिकवाद कहते है।

प्रकाश से संसार शुद्धि

तो आओ, मेरे प्यारे! आज का हमारा यह विचार क्या कह रहा है, हम बेटा! अपने विचारों को प्रगट करते करते, बहुत गम्भीर क्षेत्र में ले गएं है, आत्मा को जानने के लिए, हम तुम्हें बाध्य कर रहे है, उच्चारण कर रहे है तुम आत्मा को जानो, आत्मा को जानने वाला मानव, इस संसार में महान, प्रकाश को प्राप्त होता है। प्रकाशक बन जाता है वही प्रकाश मेरे प्यारे! देखो, संसार को शुद्ध करता है, वही प्रकाश मानो प्रत्येक प्राणी को प्रेरित कर रहा है।

यह है बेटा! आज का वाक्, आज के वाक उच्चारण करने का अभिप्राय यह कि हम परमपिता परमात्मा की प्रतिभा को जानते हुए, उसके ज्ञान विज्ञान को जान

करके, अपनी आत्मा को जानने का प्रयास करें, आत्मवत बन करके, मानव इस संसार से पार हो सकता है यह है बेटा! आज का वाक्, आज के वाक उच्चारण करने का अभिप्राय यह कि राजा जनक को याज्ञवल्क्य मुनि ने आत्मा तक पहुंचा दिया, आत्मा तक जाने के पश्चात देखो, राजा ने उनके चरणों को नतमस्तिष्क किया और यह कहा कि धन्य है प्रभु! आपने हमारे अज्ञान को, अन्धकार को दूरी किया है आपको धन्यवाद है, इस वाक के लिए, मैं आपको सर्वत्र राष्ट्र भी तुम्हें प्रदान कर दूं तो वह भी मानो सूक्ष्म है, आपने तो हमें ऐसे साम्राज्य में पहुंचा दिया, ऐसे प्रभु के राष्ट्र में पहुंचा दिया, जहाँ मानो देखो, राष्ट्र की सीमा ही समाप्त हो गई। मेरे प्यारे! देखो, राजा मौन हो गये। ऋषिवर ने यह उपदेश दे करके वह मानो देखो, अन्तर्मुखी हो गये।

आज का वाक बेटा! क्या कह रहा है, कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए और अपने प्रकाश को जानते हुए, यह आत्मा का हमारा प्रकाश है आत्मा स्वतः अपने में प्रकाशित है आत्मा मानो चेतना है, सन्निधान मात्र से ही क्रिया हो रही है, उस क्रियावान को जानना है, यह है बेटा! आज का वाक्, समय मिलेगा, तो मैं शेष चर्चाएं तुम्हें कल प्रगट करूंगा। ओ३म् देवं रथाः ग्राहणां त्वां रेवं आभ्यां रुद्राः यं सर्वाः। ओ३म् गायन्त्वा मां ऋषि आभ्यां रुद्राः। ओ३म् ब्रह्मणाः देवं मया सर्वं भद्राः। अच्छा भगवन! आनन्द मङ्गलम्।

8.महाराजा रावण के अश्वमेध की चर्चा-830101

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भान्ति, कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, जिन वेद मन्त्रों का पठन पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस महामना देव की महिमा का गुणगान गाया जाता है, जो परमपिता परमात्मा इस ब्रह्माण्ड को स्थिर कर रहा है, अथवा अपने में धारण कर रहा है उसको वेद धारयामि कहता है क्योंकि वह धारण कर रहा है। हे परमपिता परमात्मन! मानो आपकी महिमा विचित्र अनुपम मानी गई है जब हम विज्ञानमयी और आनन्दमयी ब्रह्माण्ड के ऊपर मनन करने लगते है तो उसमें आप ही दृष्टिपात, इस सर्वत्र ब्रह्माण्ड में एक आप ही हमें दृष्टिपात होते हैं। किसी भी लोक लोकान्तरों में रहने वाले प्राणी हो, परन्तु प्राणी मात्र आपकी महिमा का गुणगान गा रहा है। मानो तेरे ज्ञान और विज्ञान को एक एक, कण कण में वह प्रायः दृष्टिपात कर रहा है। हे परमात्मन! मानो तेरी कोई स्थली ऐसी नहीं है, जहाँ तेरा वास नहीं है। तो प्रभु! हम कहाँ जाए, किस स्थली में पहुंचे। जहाँ तेरे से ओझल हो करके, मानो अपने में कुछ दूषित कर्म कर ले। परन्तु विचार आता है कि कोई भी स्थली तो ऐसी नहीं है।

आत्मा का आयतन

तो हे मानव! तू कौनसी स्थली पर जा रहा है, तू पाप कर्म करने के लिए जा रहा है, परन्तु कौनसा ऐसा निर्जन मानो वन है जहाँ वह परमात्मा नहीं है। जहाँ प्रभु! आपकी छठा, आपकी प्रतिभा नहीं है। परन्तु कोई भी स्थली ऐसी नहीं, तो हे मानव! तू पाप कर्म करने के लिए कहाँ तत्पर हो सकता है। मानो वेद का मन्त्र तो यह कहता है कि वायु की तरंग भी ऐसी नहीं है जो उसके बिना तरंगित हो रही हो, तो यह उसका सर्वत्र ब्रह्माण्ड एक आयतन के रूप में है जैसे मानव का शरीर है। परन्तु आत्मा का आयतन माना गया है, हृदय प्रदेश में चले जाओ, इन्द्रियों के

प्रदेश में चले जाओ, परन्तु जहाँ भी तुम जाना चाहते हो, वहीं पहुँचों परन्तु कोई स्थली ऐसी नहीं है जहाँ वह चेतना न हो। जिस चेतना से बेटा! यह ब्रह्माण्ड चेतनित हो रहा है। तो मेरे प्यारे! हम उस महान अग्निमयी स्वरूप, जिसे वेद बेटा! ब्रह्माग्नि कहता है हे ब्रह्म! तू अग्नि है, हे ब्रह्मा! तू क्रिया है, हे ब्रह्मा! तेरी ही ज्ञानता है, और तू ज्ञान और विज्ञान का स्वरूप है। जितना भी ब्रह्मज्ञान है, यदि हम सर्वत्र एक एक कण कण को दृष्टिपात करने लगते है तो मानो वह सर्वत्र एक ज्ञान और विज्ञानमयी वर्णन करने वाली एक आभा है और वह आभा क्या, वह प्रभु आप हो। जो मानो देखो, इस ब्रह्माण्ड को क्रियाशील बना रहे है। नाना लोक लोकान्तर, एक एक लोक, ऐसा विचित्र है, जिसके ऊपर मानव बेटा! अनुसन्धान करता ही रहता है। परन्तु इसके कण कण में कौन विद्यमान है, कौन, कण कण में विद्यमान हो करके क्रिया दे रहा है और उसको क्रियाशील बना रहा है। मेरे प्यारे! उस क्रियामयी, आभामयी आनन्द के ऊपर हमें सदैव विचार विनिमय करना चाहिए।

बेटा! राष्ट्रीय स्थलियों में, विद्यमान हो करके राजाओं ने, उस ब्रह्म को अश्व के रूप में दृष्टिपात किया है। हे अश्व! तू महान है, सर्वत्रता को अपने ऊपर धारण करके मानो तू गति कर रहा है जैसे अश्व नाम मानो पशु को माना गया है, उस पशु के ऊपर मानव विद्यमान हो करके मानो अपने को क्षत्रिय का स्वरूप धारण कर लेता है और वह क्षत्रिय बन करके, अश्व के ऊपर मानो वह संग्राम में विजयी बनता रहता है। इसी प्रकार वैदिक साहित्य में अश्व के नाना बेटा! यहाँ पर्यायवाची माने गएं है। जैसे अश्व नाम पशु का है, अश्व नाम सूर्य का है, जो नाना पृथ्वियों की धारण करने वाला है। मानो अश्व नाम राजा का है जो प्रजा के सुख के लिए, आनन्द के लिए मानो राजा अपने में संलग्न रहता है तो राजा का नाम अश्व माना गया है। अश्वमेध नाम के याग भी होते रहे है। परन्तु अश्वमेध याग करने वाला बेटा! अश्वमेध यागी बन रहा है। यागां ब्रह्मा वश्वन्धनं ब्रह्मे मेरे प्यारे! अश्वमेध याग करने वाला राजा बेटा! देखो, प्रजा के सुखद के लिए, प्रजा के मानो पशुओं के

लिए अपने राष्ट्र में सुख की स्थापना करने के लिए वह बेटा! अश्वमेध याग करता है। संसार का विजेता मानो कुछ राष्ट्रों की चुनौती दे करके वह मानो देखो, अश्वमेध याग कर रहा है। और कह रहा है हे राजाओं! आओ, हे प्रजाओ! आओ, हम अपने राष्ट्र में सुख के लिए, अश्वमेध याग करें। मेरे प्यारे! वह अश्वमेध याग करने के लिए तत्पर हो रहा है। प्रजा को एकत्रित कर रहा है, वह कहता है प्रारम्भ में, जब वेद का मन्त्र उच्चारण करता है हमारा सर्वत्र अङ्गमयी मानो यागमय हो जाएं। मेरे प्यारे! मानो प्रत्येक अङ्ग प्रत्यंग हमारा यागमयी बन जाए, याग में परणित हो जाए, यागां स्वङ्गनं देवाः वेद की आख्यिका कहती है कि हम मानो देखो, याज्ञिक बने। हमारा पशु भी याज्ञिक हो। तो मेरे प्यारे! उस भाव को ले करके वह एक अश्व नाम का मेरे प्यारे! देखो, एक अश्वा गिद्ध एक समय बेटा! देखो, इसी सन्दर्भ में मुझे एक वार्ता स्मरण आ गई है।

रावण राष्ट्र में सभा

मेरे प्यारे! देखो, महाराजा लंकेश पति रावण के हृदय में बेटा! यह आशङ्का उत्पन्न हुई क्या मुझे अपने राष्ट्र को ऊँचा बनाना है। अपने राष्ट्र को ऊँचा बना करके, मुझे एक अश्वमेध याग करना है उन्होंने बेटा! अपने विश्वविद्यालय में नाना बुद्धिमानो को, जो राष्ट्र में विवेकी पुरुष थे उनको एकत्रित किया, एकत्रित करके बेटा! मानो सभा में महाराजा कागभुषुण्ड जी को भी उन्होंने निमन्त्रित किया। क्योंकि कागभुषुण्ड जी उस काल के मानो देखो, एक विशिष्ठ व्यक्ति कहलाते थे मानो वह महान योगेश्वर कहलाते थे, उनके अङ्ग संग रहने वाले महर्षि लोमश ऋषि, उन्हीं के निकटतम रहते थे। देखो, दोनों ऋषियों को निमन्त्रित किया और वे उस सभा में आ पहुंचे। परन्तु उन्होंने महाराजा शिव और महाराजा गणेश जी दोनों को निमन्त्रित करके मानो देखो, सभा की सफलता के लिए उन्होंने निमन्त्रित किया और निमन्त्रित करने के पश्चात मानो देखो, उस समय महाराजा शिव और ऋषि मुनि और उनके राष्ट्र में जितने वैज्ञानिक और सब कर्मकाण्डी मानो बुद्धिमान थे, महात्मा भुञ्जु अरे

अश्विनी कुमार इत्यादि ऋषि मुनियों की एक सभा हुई। परन्तु उस सभा में जब सर्वत्र विद्यमान हो गएं तो उस समय राजा रावण से यह कहा गया हे रावण! तुमने मानो इस सभा का आयोजन क्यों किया है?

अश्वमेध याग

महाराजा रावण ने कहा महाराजा! शिव से, क्या महाराजा! मेरी एक ही इच्छा है कि मैं अपने राष्ट्र में, राष्ट्र के सुखद के लिए, मैं एक अश्वमेध याग करना चाहता हूँ। मेरे प्यारे! उन्होंने कहा बहुत प्रिय, परन्तु अश्वमेध याग के तो कुछ नियम होते हैं। उनका क्रियाकलाप भिन्न होता है तो उन्होंने कहा प्रभु! उस क्रियाकलाप को मुझे वर्णन कराईए। मानो वह कौनसा क्रियाकलाप है। उन्होंने कहा कि तुम्हारे राष्ट्र में मानो देखो, एक अश्व होना चाहिए देखो, राष्ट्र का, अश्वमेध याग करने वाला राजा मानो वह होता है जो स्वर्ण में गुथा हुआ, एक अश्वः नाम का पशु सर्वत्र राष्ट्रों में देखो, भ्रमण करके आ जाए और उसको कोई ग्रहण करने वाला न हो, अथवा कोई राजा उसे ग्रहण करने वाला न हो, ऐसा अश्व जब तुम्हारे राष्ट्र में आ जाए, तुम्हारे समीप आ जाए, उस समय तुम्हें यह निश्चय हो जाना चाहिए कि हमारा कोई शत्रु नहीं है, मानो हम अश्वमेध याग कर सकते है।

मेरे प्यारे! जब यह वाक उन्होंने प्रगट किया, तो राजा रावण ने यह वाक स्वीकार कर लिया। परन्तु उन्होंने कहा कि हे प्रभु! मेरी एक ही इच्छा है कि मेरा याग यदि बनने लगा, अश्वमेध याग होने लगा तो उसमें कौन कौन उद्गाता बनेंगे कौन अध्वर्यु बनेगा मानो कौन उसमें हमारी प्रतिष्ठा का प्रतीक होगा। मेरे प्यारे! देखो, उस समय महाराजा शिव ने यह कहा तुम्हारे राष्ट्र का यदि अश्वमेध याग बनता है तो यहाँ देखो, कागभुषुण्ड जी विद्यमान है यह अपना निर्णय दे सकते है। महर्षि लोमश है यह भी अपना निर्णय दे सकेंगे। तो मानो देखो, कागभुषुण्ड जी को उन्होंने संकेत किया, कि महाराज! आप उससे क्या सहायता प्रदान कर सकते हो? तो उस समय कागभुषुण्ड जी ने कहा कि महाराज! मानो देखो, मेरी तो एक ही कामना रहती है

कि जब तुम याग का आयोजन करोगे, अश्वमेध याग करोगे, तो मुझे भी निमन्त्रित कर देना, जिसका तुम मुझे अधिकार दोगे, उसको मैं अपनाने के लिए तत्पर रहूँगा। मेरे प्यारे! यह वाक रावण ने स्वीकार कर लिया। महर्षि लोमश मुनि को संकेत किया कि महाराज! आप इस याग में क्या सहायता प्रदान कर सकते है? महर्षि लोमश ने कहा कि जो तुम्हारी इच्छा हो, परन्तु निमन्त्रण करके जो भी मुझे स्थली प्रदान करोगे, मैं उसका दायित्व अपने ऊपर धारयामि करता हुआ मानो उसको पूर्ण रूपेण करूंगा। मानो बेटा! यह वाक स्वीकार कर लिया, परन्तु महाराजा शिव से कहा हे प्रभु! आप हमारे राष्ट्रीय पूज्यपाद गुरुदेव है परन्तु हमारी ऐसी इच्छा है कि देखो, जो अश्वमेध याग होगा, वह आपके संरक्षण में होगा। परन्तु यह वाक महाराजा शिव इत्यादियों ने भी स्वीकार कर लिया।

मेरे प्यारे! देखो, यह निर्णय होने के पश्चात मानो देखो, ज्ञान और विज्ञान की धारा में जाने वाले महाराजा कुम्भकरण ने कहा हे राजन! आप जो यह याग कर रहे है आपका मानो देखो, तात्पर्य क्या है, क्या मन्तव्य है आपके याग करने का? महाराजा रावण ने कहा हे भो अस्सुता! मेरी मानो एक ही कामना रहती है कि हमारा राष्ट्र मानो देखो, प्रियतम बनें। हमारे राष्ट्र में महानता हो, विज्ञान की धाराएं ऊँची बनती रहे, जिन विज्ञान की धाराओं को अपना करके अपना जीवन एक महानता की वेदी पर परणित हो जाए। परन्तु देखो, हमारी यह भी कामना रहती है कि हमारा यह राष्ट्र परम्परा से चला आ रहा है प्रजा में सब प्रकार का आनन्द है, ब्रह्मज्ञान भी है हमारे यहाँ विज्ञान भी पराकाष्ठा पर रहा है परन्तु विज्ञान की धाराओं में अपने याग का क्या महत्त्व माना गया है।

विज्ञान की धाराओं में याग

महाराजा कुम्भकरण ने जब रावण से शब्दार्थ प्राप्त किए तो उन्होंने प्रश्न किया, रावण ने कहा हे कुम्भकरण! विज्ञान में अश्वमेध याग का क्या महत्त्व है? इसका मानो देखो, पूर्व मुख है मुनिवरों! देखो, उस समय महाराजा कुम्भकरण ने यह

कहा कि हे भगवन! यह विज्ञान की धारा है, विज्ञान यह कहता है, विज्ञान में याग का बड़ा महत्त्व माना गया है। मानो जिस भी काल में, वैज्ञानिक अपनी स्थलियों पर विद्यमान हो करके, जिस भी काल में वह चिन्तन करते है क्या वायुमण्डल का दूषित आरोपण हो रहा है इस दूषितता को कैसे समाप्त किया जाए? तो उस समय मानो देखो, प्रत्येक गृह में, मेरी प्यारी पुत्रियाँ प्रातःकालीन मानो देखो, याग में परणित हो जाती है, उस समय सुगन्ध आती है, प्रत्येक गृह में जब याग की प्रतिभा वेद मन्त्रों की ध्वनियाँ आने लगती है तो मानो देखो, वह साकल्य की सुगन्धि है और विचारों की पुट लग करके उसमें मानो देखो, एक सुन्दर विचारधारा, एक याग की प्रतिभा बन जाती है और वायुमण्डल के शोधन करने से दूषित परमाणु को समाप्त करने में मानो वह बड़ा सहकारित्व होता है। और बड़ा एक महान देखो, उसमें महत्त्वत्व होता है।

रावण राष्ट्र में रुग्ण

उन्होंने कहा कि हमने भी विज्ञान की धाराओं में, यह प्राप्त किया है। तुम्हें यह प्रतीत है हे रावण! हे विधाता! एक समय का आपको प्रतीत होगा क्या मानो देखो, भारद्वाज ब्रह्मवान देखो, ऋषि हमारे यहाँ आए थे, और उस समय हमारे राष्ट्र में, एक देवी प्रकोप हुआ था और वह देवी प्रकोप ऐसा था क्या मानो देखो, रूग्ण आ गया था। राष्ट्र में जब रुग्ण आ गया और वह रुग्ण कैसा आया मानो देखो, नेत्रों से और नासिका से जलों की धाराएं आने लगी और देखो, उस समय जब प्राणी समाप्त होने लगे, मानो देखो, श्रोत्रों में भी सूक्ष्मता आ गई और वाणी के शब्दों को पूर्ण रूपेण नहीं उच्चारण कर सकते थे। जब इस प्रकार का रुग्ण आया तो मानो देखो, उस समय यह कहा गया वैज्ञानिकों से, कि हे वैज्ञानिकों! तुम विज्ञान की धाराओं से मानो देखो, ऐसा साकल्य एकत्रित करो, मानो जो अग्नि में, प्रवेश करते हुए यह जो दोषारोपण आ रहा है मानो देखो, प्रकृति का एक प्रकोप आ रहा है यह समाप्त होना चाहिए। तो उस समय जब ऐसा निश्चय किया गया तो भगवन!

मानो आपने तो यह आज्ञा दी ही थी उस समय हमारे यहाँ वह साकल्य एकत्रित किया गया। तो कुछ मानो देखो, हमने समिधा एकत्रित की, उसमें चन्द्रणी और देखो, पीपल और आम्र श्वेतकेतु एक वृक्ष होता है, आम्रवाणी वृक्ष होता है परन्तु उन वृक्षों की समिधा ले करके और मानो देखो, मिष्ठान और गो घृत को ले करके, गो दुग्ध को ले करके और देखो, कुछ ध्वनियाँ उच्चारण हुई, परन्तु उन वेद मन्त्रों की ध्वनियाँ महर्षि श्वेतकेतु ने मानो देखो, महात्मा भृगु ने, उस वेदज्ञ ध्वनि को स्वर ध्वनि में जब उच्चारण किया गया तो मानो देखो, दस दिवस के याग करने मात्र से मानो देखो, वह रुग्ण राष्ट्र से दूरी हो गया। देखो, उसका इतना प्रभाव हुआ, प्रत्येक गृह में उसी प्रकार का साकल्य बना, उसी प्रकार का मानो देखो, हमारे यहाँ याग विज्ञान की तरंगों में, विज्ञान में, ज्ञान वृत्तियों में मानो देखो, याग का बड़ा महत्त्व माना गया है।

राष्ट्र का अपराध

विचार क्या है, जब अश्वमेध होता है तो अश्वमेध याग का जो कर्मकाण्ड होता है, यज्ञमान की जो पवित्र भावना होती है मानो देखो, उसका राष्ट्र के ऊपर अस्तित्व रहता है, राष्ट्र उन वाक्यों को स्वीकार करता है और वह याग भव्य बन करके, राष्ट्र को ऊँचा बनाता है। तो मानो देखो, पशु की आयु और मानव की आयु मानो विचित्र बनती है देखो, आज तुम्हें यह प्रतीत है, हमारे विज्ञान के युग में, विज्ञान की धाराओं में मानो देखो, पशु को हनन करना, हमारे राष्ट्रीय स्थलों पर एक अपराध है। मानो जैसे हमारे यहाँ दुग्ध देने वाला जो पशु है, उसको नष्ट करना, दूध देने वाला जो पशु है उसको अपनी रसना का स्वादन बना लेना, यह राष्ट्रीय मानो देखो, एक प्रकार का अपराध माना गया है। मानव कृतियों में एक पाप का मूलक बन करके रहता है। संसार में राजा के राष्ट्र में मानो यह विज्ञान ने सिद्ध किया, पुरातन काल में, राजा कुम्भकरण जैसे वैज्ञानिकों ने, क्या किसी भी राष्ट्र में जब मानो देखो, पशुओं की मानो देखो, किसी भी प्राणी को मानव का भोजन बनाया जाता

है, भोज्य बनाया जाता है और स्वार्थ और राष्ट्र में जब व्यवसाय आता, उस व्यवसाय के आने पर मानो देखो, पशुओं को बलि बनाया जाता है स्वार्थ परता के कारण, रसना के कारण तो मानो देखो, उसका राष्ट्र भी दोषी होता है। राष्ट्र उसके ऊपर मानो देखो, दोषी होता है वह दूषित वायु मण्डल को जाता है। क्योंकि मानव पान करता है हिंसक आभा को, तो उसका मनोबल समाप्त हो जाता है, उसके मन की अच्छाईयाँ समाप्त हो जाती हैं, उससे दुराचार की तरंगे आ जाती है, परन्तु देखो, राजा जब व्यवसायी बन जाता है, तो प्रजा के वैभव को संग्रह करने वाला बनता तो वैभव को जब संग्रह करता है तो मानो देखो, राजा के राष्ट्र में, राजा के विचारों में मानो देखो, एक दूसरे के संग्रह करने की, द्रव्य एकत्रित करने की प्रवृत्ति राजा के राष्ट्र में आ जाना ही मानो यह राष्ट्र के लिए अपराध है मानो इस प्रकार का प्रजा में द्रव्य होना चाहिए, राष्ट्र में द्रव्य होना चाहिए, परन्तु राजा को व्यवसायी स्वतः नहीं बनना चाहिए, क्योंकि राजा जब व्यवसायी बन जाता है तो प्रजा में मानो देखो, अशान्ति आ जाती है। अशान्ति आ जाने के कारण मानो देखो, उदर की पूर्ति भी हो रही है सर्वत्र हो रहा है परन्तु देखो, अशान्ति उनकी स्थलियों में देखो, उसके शरीर में उसके मनों में स्थली बना लेती है। जब वह आश्रित हो जाता है, उस आसन के स्थिर होने पर देखो, रक्त भरी, आभा में क्रान्ति का सन्देह बना रहता है। तो इस प्रकार की धाराएं, राजा के राष्ट्र में नहीं होनी चाहिए।

वायुमण्डल के शोधन के लिए याग

महाराजा कुम्भकरण ने कहा कि विज्ञान यह सिद्ध करता है कि तरंगों का जगत है। एक मानव मानव को हनन कर रहा है, उसकी तरंगे वायुमण्डल को दूषित कर रही है, जिस गृह में मानो देखो, उसका हनन होता है, उसी गृह में देखो, दूषित वायुमण्डल हो रहा है, उसको शान्त करने के लिए, प्रत्येक गृह में हमारे ऋषि मुनियों ने याग का चलन किया है। विज्ञान भी इस वाक को सिद्ध कर रहा है। क्योंकि विज्ञान अपनी स्थलियों में मानो देखो, प्रत्येक वस्तु का निर्णय करता रहता

है, निर्णयात्मक जीवन को पाने के पश्चात मानो देखो, राष्ट्रीयता की प्रतिभा एक विचित्र बन करके और समाज की बन जाती है। परन्तु रहा यह वाक कि मानो देखो, सम्भवा देवत्याम महाराजा कुम्भकरण ने जब यह निर्णय दिया तो राजा रावण की अन्तरात्मा पवित्र होने लगा, अन्तरात्मा प्रसन्न युक्त हो करके, उन्होंने कहा धन्य है। मेरे प्यारे! देखो, हमारे यहाँ ऐसा माना गया है क्या अश्वमेध याग कर्म करने के लिए, राजा रावण तत्पर हो गये।

अश्व का भ्रमण

तो मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने सम्भवा कृताः अपने विधाता विभीषण को निमन्त्रित किया और विभीषण को उस सभा में लाया गया और उन्होंने कहा कि इस अश्व को स्वर्ण से लधा जाए और मथा जाए और मथ करके मानो उसको पृथ्वी पर त्यागा जाए, मानो उसके चयन करने पर, उससे संग्राम भी करेंगे। मेरे प्यारे! स्वर्ण के, आभूषणों से युक्त करते हुए, अश्वमेध याग के लिए, एक अश्व को मानो देखो, मेध के लिए अश्वमेध के लिए, अश्व को त्याग दिया गया। अश्व देखो, वह भ्रमण करने लगा मानो देखो, जब भ्रमण करने लगा, तो उनका पुत्र अक्षय कुमार मानो देखो, अश्व के पिछले विभाग में विद्यमान था। मुनिवरों! देखो, जिस राष्ट्र में जाता है उस राष्ट्र में उस अश्व का मान होता है। अश्व का आदर होता है, आदर युक्त उसे मानो उसका जो पोषक तत्त्व है उसे प्रदान किया जा रहा था। बेटा! कोई पृथ्वी पर ऐसा राष्ट्र नहीं रहा। जहाँ मानो देखो, अश्व न गया हो और अश्व का आदर न हुआ हो। मानो अश्व का स्वागत न हुआ हो। उसका स्वागत होता रहा, उसे आदरणीय बन्धु के नामों से उसको सम्बोधित किया गया।

तो मुनिवरों! देखो, एक समय सुत्ताम केतु महाराज के एक शिष्य मानो उसका नाम धुम्रकेतु था। धुम्रकेतु महाराज ने, उस अश्व को मानो देखो, उसको अपने में ग्रहण करने की चेष्टा प्रगट की, परन्तु उसी काल में, उनके गुरु ने यह कहा कि नहीं, यह रावण का अश्व है, वह अश्वमेध याग करना चाह रहा है। अश्वमेध याग करना

चाहिए। मानो देखो, इसको किसी से मोह नहीं होना चाहिए। तो उन्होंने कहा कि प्रभु! मेरी एक ही इच्छा है कि मैं इस अश्व को अपना वाहन बनाना चाहता हूँ। उन्होंने कहानहीं, यह हमारा कर्तव्य नहीं है। यह हमारा कार्य नहीं है। हम राजा से संग्राम नहीं कर सकते। उन्होंने कहा जैसी इच्छा हो, तो मानो देखो, अश्व में अप्रत किया गया। तो मेरे प्यारे! अक्षय कुमार ने यह वाक मानो देखो, यन्त्र में स्थिर कर लिए और मानो देखो, सर्वत्र पृथ्वी पर वह अश्व भ्रमण करके, मेरे प्यारे! हिमालय की कन्दराओं में पहुंचा, हिमालय की कन्दराओं में जा करके मानो देखो, शिकामकेतु ऋषि महाराज अपने आश्रम पर बेटा! उद्दालक गोत्रीय मानो वह अपने में याग कर रहे थे। जब वह याग कर रहे थे तो वहाँ अश्वमेध याग का एक शब्द उद्धृत हो रहा। जब उद्धृत हो रहा था तो मानो देखो, शब्द को श्रवण करके, शिकामकेतु ऋषि महाराज ने अपनी पत्नी से कहादेवी! देखो, यह अश्व कितना महान, भव्य है। उन्होंने कहा कि महाराज! आपको प्रतीत नहीं है, राजा रावण अश्वमेध याग कर रहा है। पुलस्त्य ऋषि महाराज का वह पोत्र है, वह बलिष्ठ है मानो ब्रह्म जिज्ञासा में उसकी पिपासा जागरूक हो रही है। मानो देखो, यह वाक जब उन्होंने श्रवण किया तो वहाँ ऋषि कहता हैदेवी! अश्व तो बहुत ही प्रिय है। उन्होंने कहा कि अश्व को हम ग्रहण नहीं कर सकते। अपने में ला नहीं सकते। क्योंकि बहुत से अश्व हमारे समीप है, मेरे प्यारे! देखो, यह वाक्, महाराज ने स्वीकार कर लिया। परन्तु देखो, अश्व सर्वत्र भूमण्डल पर भ्रमण करने के पश्चात, उस लंका में प्रवेश हो गया।

लंका में प्रवेश होने के पश्चात मुनिवरों! देखो, उन्होंने वहीं एक सभा प्रदान की। जिस सभा में मुनिवरों! देखो, महर्षि भारद्वाज, ब्रह्मचारी कवन्धी और मुनिवरों! देखो, महर्षि वैशम्पायन और मुनिवरों! देखो, कागभुषुण्ड जी, महर्षि लोमश और महाराजा शिव, महाराजा सम्पातुक ऋषि महाराज बेटा! देखा उन्होंने अपने विद्यालय में मुनिवरों! देखो, सभा हुई। इन वैज्ञानिकों में रावण के पुत्र नारायन्तक, अहिरावण, सुकेतवम और मुनिवरों! देखो, आयुर्वेद के महापण्डिता नारायन्तक, सुधन्वा, अश्विनी

कुमार और मुनिवरों! देखो, महात्मा दधीचि को भी निमन्त्रित किया। मानो जो सभा लंका में हुई, उस सभा में यह पुनः प्रश्न किया गया कि महाराज! हम एक अश्वमेध याग कर रहे है, इस अश्वमेध याग के लिए हमें क्या क्या करना होगा?

साकल्य पर विचार

मेरे प्यारे! देखो, उस समय आयुर्वेद के आचार्यों ने मानो सुधन्वा ने और अश्विनी कुमारों ने एक पोथी आयुर्वेद की निर्माण थी, आयुर्वेदाचार्यों ने बेटा! उन पोथियों का एक नृत्त किया गया, एकत्रित की गई। उन्होंने कहा इस साकल्य के द्वारा याग होना चाहिए। मेरे प्यारे! इसमें मानो गो घृत, गो दुग्ध, गो गृहणिका और मुनिवरों! देखो, कान्तिका नाना उन औषधियों को एकत्रित किया, जिससे उन्होंने सोमकेतु एक औषध होती है मानो उसका क्वाथ श्वानकेतु उसके बीज इत्यादियों को, समिधाएं मानो उनको नियुक्त किया गया और उन्होंने ओर भी नाना प्रकार की औषधियों को, महात्मा दधीचि जी जो औषधियों के विशेषज्ञ थे, अश्विनी कुमार के गुरु थे, जिसको सोमभानु कहते थे। सोमभानु ऋषि महाराज जो अंगिरस गोत्रीय थे उनको निमन्त्रित किया गया वह मानो प्रत्येक औषधियों के गुणों को जानते थे। परन्तु देखो, उन्होंने कुछ औषधियों को नियुक्त किया, क्या इनके द्वारा याग होना चाहिए। उन्होंने उन औषधियों को एकत्रित करने के पश्चात मेरे प्यारे! उनका साकल्य, भयंकर वनों में से एकत्रित होने लगा।

मुझे स्मरण आता रहता है मानो देखो, वह जो सभा हुई, कागभुषुण्ड जी से कहा गया कि महाराज! अश्वमेध याग, को, क्योंकि आप कर्मकाण्डी है अश्वमेध याग का कोई कर्मकाण्डी बुद्धिमान ऋषि हो तो उसका निर्णय कराईए, उन्होंने कहा कि मैं लोमश जी को चाहता हूँ। यह मानो देखो, अश्वमेध याग के मर्म को जानते है। मानो इनके जो पूज्यपाद गुरुदेव है वह नाना प्रकार के यागों के विशेषज्ञ रहे है। इसी प्रकार इन्होंने जिन गुरुओं के चरणों में विद्यमान हो करके, इन्होंने देखो, अश्वमेध याग के कर्मकाण्ड को जाना है। वह कर्मकाण्ड मानो देखो, यह अपने में

मङ्गलमयी कहलाते है, जिसके द्वारा यह याग होना चाहिए।

मेरे प्यारे! उन्होंने वह वाक स्वीकार कर लिया और महर्षि लोमश इत्यादि और कागभुषुण्ड जी को, उस याग के लिए नियुक्त किया गया। तो बेटा! मुझे कुछ ऐसा स्मरण है मानो बहुत समय के पश्चात यह वार्ता मुझे पुनः से स्मरण आ रही है, परन्तु देखो, उस याग में नाना ऋषियों को नियुक्त किया और मुनिवरों! देखो, उस सभा में आकृतियों में देखो, उस सभा में यह निर्णय हुआ कि हमारे यहाँ अश्वमेध याग होना है। परन्तु वैज्ञानिकों के द्वारा वैज्ञानिक एकत्रित करके देखो, महाराजा नारायन्तक, महाराजा श्वेनकेतु और देखो, महाराजा कुम्भकरण और विभीषण मानो देखो, सबको एकत्रित करके जो वैज्ञानिक थे। उन वैज्ञानिकों को एकत्रित करके उन्होंने यह कहा कि भई! साकल्य के ऊपर अपना निर्णय दो। तो नारायन्तक ने बहुतसी औषधियों को एकत्रित किया, क्योंकि नारायन्तक चन्द्रमा के विज्ञान के विशेषज्ञ थे और चन्द्रमा की कान्ति से ही औषधियों में रस आता है, औषधियों में तेज आता है। मानो देखो, उन औषधियों को एकत्रित किया, जो चन्द्रमा की कान्ति से, वह रसोमयी कहलाते थे। परन्तु देखो, आदि के वह मानो सूर्य विज्ञान के विशेषज्ञों को, सूर्य की किरण, कौन कौन से माह पर कौन कौनसी औषधियों के ऊपर, कौन कौनसा प्रभाव और उसका खरल बनाने के पश्चात अग्नि में तपा करके उनकी क्या क्या प्रतिभा और कैसी तरंगों का प्रादुर्भाव होता है ऐसी मानो औषधियों को उन्होंने एकत्रित किया और औषधियों को एकत्रित करने के पश्चात उसमें नाना प्रकार के विचारधाराओं की पवित्रता की योगियों की मानो उसमें विचारधारा परणित हुई, तो उस समय बेटा! देखो, उन्होंने साकल्य के लिए निर्णय दिया और उस सभा में नाना प्रकार के वैज्ञानिक और देखो, उसमें जो वैद्यराज थे आयुर्वेदां ब्रहे मानो देखो, जो अश्विनी कुमार प्रीव्हीताम् मेरे पुत्रों! देखो, उसमें वैज्ञानिक आयुर्वेदाचार्य और मुनिवरों! देखो, उसमें ओर भी नाना जैसे दार्शनिक और विवेकी पुरुष मानो देखो, उस सभा में, अपनाअपना निर्णय, अपनी अपनी प्रतिभा प्रगट

करने लगे।

कर्तव्य

तो मेरे प्यारे! देखो, हमारे यहाँ ऐसा बेटा! अश्वमेध का, कल तुम्हें कर्म काण्ड इससे पूर्व काल में तुम्हें प्रगट करेंगे। आज का विचार तो हमारा इतना ही क्योंकि उनकी सभाओं में यह निर्णय हुआ। तो हमारे यहाँ अश्वमेध जो याग है, यह परम्परागतों से ही, विचित्र माना गया है। मैं अश्वमेध याग के ऊपर कल अपने अपने विचार, अब इससे पूर्व काल में प्रगट करेंगे, क्योंकि अश्वमेध याग मानो कितना महत्त्वदायक होता है। अश्वमेध याग राजा क्यों करता है, यह सब बेटा! इसके ऊपर विवचना प्रगट करेंगे। आज का हमारा यह वाक क्या कह रहा है, अश्वमेध याग के ऊपर बेटा! हमारा विचार चल रहा था। अश्व नाम परमात्मा का है, जो अश्व, परमात्मा बन करके हमारा कल्याण कर रहा है, हमारा जो कल्याणकारी है। परमात्मा को अश्व कहते है, वह मेध की विद्या का, क्योंकि वह वेद, उसका ज्ञान है मानो देखो, वेद प्रकाश है, वह प्रकाश में सदैव रहने वाला है, वह जो प्रकाशक अश्व है, वह हमारे कल्याण के लिए, क्योंकि अश्व नाम सूर्य का है सूर्य उससे प्रकाश ले करके, वह प्रकाश देता रहता है। मानो जब भी हम कुछ प्राप्त करते रहते है, मानो जन जीवन की धाराओं में परणित होते रहते है परन्तु देखो, अश्व नाम जहाँ सूर्य का है, वहाँ परमात्मा का नाम भी अश्व है, जो संसार को चेतना दे रहा है, लोक लोकान्तरों को माला बना करके धारण कर रहा है, प्रत्येक प्राणी मानो उसके सूत्र का वह मनका बना हुआ है, वह सूत्र के सदृश्य है हम सब उस परमपिता परमात्मा की उपासना करने वाले बनें। क्योंकि उसकी उपासना करना ही हमारी अन्तरात्मा को उज्ज्वल बनाना है, आत्मबल को पाना है, वह आत्मा के बल को देने वाला है। मुनिवरों! देखो, उस परमपिता परमात्मा की प्रतिभा में सदैव रत्त रहना ही हमारा कर्तव्य है।

यह है बेटा! आज का वाक अब मुझे समय मिलेगा, मैं तुम्हें शेष चर्चाएं कल प्रगट

करूँगा। आज के वाक उच्चारण करने का अभिप्राय क्या, हम अश्वमेध याग के सम्बन्ध में बेटा! अपनी विवेचना प्रगट कर रहे थे अश्वमेध याग का चलना, कर्मकाण्ड की चर्चा, तो हम कल ही प्रगट करेंगे इससे पूर्व शब्दों में, आज का विचार तो हमारा, क्योंकि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, देव की महिमा का गुणगान गाते हुए, मानो उस परमात्मा को अश्व स्वीकार करते हुए, हम सब उसी के ऊपर अश्वस्त हो रहे है, वह हमें धारण कर रहा है। बेटा! जैसे हम पृथ्वी को, अश्व नाम का पशु मानो धारण करता हुआ और वह अश्व को संग्राम में विजय होता है इसी प्रकार अश्व नाम बेटा! विद्या को भी कहते है, परन्तु यहाँ अश्व नाम परमपिता परमात्मा की उपासना करना है। यह है बेटा! आज का वाक्, अब समय मिलेगा, मैं शेष चर्चाएं तुम्हें कल प्रगट करूँगा, आज का वाक समाप्त, अब वेदों का पठन पाठन होगा। ओ३म् देवाः यं शना रथं ब्रह्मणा या ता गतं गताः मां ऋषि वरुणां प्रहा गतं आ पां मनो। ओ३म् प्रातः रथ यञ्चना मा नां त्वाः रेवं आ भा रथं ब्रह्मणा। ओ३म् जनि गता मनो अश्वश्चमां रेवं आ पां मनो ब्रह्मणा। ओ३म् श्वञ्चन प्राता आत्मा रताः वरूणा यञ्चम। ओ३म् ब्रह्मणा देवं मया रथं भद्राः।

9.हिंसा का मूल, अभिमान-830104

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भान्ति, कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेद मन्त्रों का पठन पाठन किया, हमारे यहां परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस महामना, जो देव भी है मानो जो देवताओं का भी महादेव है, उसे हमारे आचार्यों ने देवत्तव कहा है। मानो देवी सम्पदा वालों ने, परम्परागतों से ही, उसके ऊपर सदैव चिन्तन और मनन किया और यह कहा गया है कि वह जो देवत्तव है जो मानव का हृदय है मानो जो माता के, पितर के रूप में ही विद्यमान है, कहीं मानव उसे माता कहते हैं। तो कहीं पितर कहते है। मानो कही ममत्व ही रह जाता है।

मार्कण्डेय शाखा

तो वेद का कुछ ऐसा मन्त्रार्थ होता रहता है, क्या यदि हम उसकी विवेचना में लग जाए, क्योंकि हमारे ऋषि मुनियों ने, वेद के, एक एक, वेद की धारा को ले करके, कुछ सूक्तों को ले करके, उन्होंने मानो उसी के ऊपर, एक शाखा रूप में, एक पोथी का निर्माण किया, मानो उस पोथी में, आज हम, बहुत काल के पश्चात एक पोथी का आज मानो वह पोथी सम्पन्न हुई है। उस पोथी का नाम मार्कण्डेय शाखा कहलाती है आज उसका समापन हुआ। उसमें बहुत से शब्द इस प्रकार के है समापन के समय में, जो मार्कण्डेय ऋषि महाराज ने तपस्याओं के द्वारा, एक एक वेदमन्त्र का निरूपण किया है और एक एक वेदमन्त्र के ऊपर बहुत चिन्तन किया। क्योंकि मार्कण्डेय ऋषि महाराज, अपने काल में बहुत ऊर्ध्वा में और आध्यात्मिक विज्ञान में रत्त रहते थे। महर्षि मार्कण्डेय मुनि महाराज की माता मानो जिस माता का नामोकरण हमारे यहाँ साहित्य में आता है। परन्तु माता का नाम शकुन्तला था और पिता का नाम जेठकेतु ऋषि था। परन्तु दोनों के हृदय में जब यह कामना उत्पन्न हुई कि हमारे गृह को सुशोभित करने के लिए, क्योंकि माता के हृदय में

भिन्न भिन्न प्रकार की कामनाओं की उद्बुद्धता होती रहती है।

महर्षि मार्कण्डेय का जीवन

तो मार्कण्डेय ऋषि महाराज की माता शकुन्तला से उनका जन्म हुआ। परन्तु मार्कण्डेय ऋषि महाराज का, जो उस काल में प्रमाणं स्वस्तं देवाः उस काल का जो आधुनिक काल था मानो मार्कण्डेय ऋषि महाराज का काल विचित्र रहा है। उस विचित्र काल में वह समुद्र के तट पर रहते थे और समुद्र को निहारते रहते थे और जैसे जैसे तरंगे आती रहती थी समुद्रों की, उसी प्रकार मानो वह ज्ञान और विज्ञान की धाराओं में रत्त हो जाते थे, तो ऐसा कहीं, उनके जीवन में मुझे प्राप्त हुआ है कि सबसे प्रथम मानो देखो, उनसे पूर्व भी वैज्ञानिक हुए उस काल में, मार्कण्डेय ऋषि महाराज ने एक आसन, वैज्ञानिक तथ्यों से, जो चन्द्रमा और पृथ्वी के कक्ष वाला मानो एक यन्त्र, एक स्थान पर निर्माण किया और अपने यन्त्रों को मानो देखो, वह जहां अनुसन्धान, एक शाला के रूप में अनुसन्धान करते रहे। परन्तु देखो, आज वह शाखा जिन्होंने मानो एक वैज्ञानिक और बह्मसूक्त को ले करके मानो उन्होंने अपनी एक पोथी की रचना की, तो उस पोथी का आज समापन हुआ। परन्तु उस पोथी में जहां, ज्ञान और विज्ञान की वार्त्ताएं लोकों की गणणाएं, परन्तु वहां यागों का बड़ा चयन और वर्णन रहा है। उन्होंने अश्वमेध याग के ऊपर मानो उस पोथी में बहुत कुछ वर्णन किया है। जो मैंने राजा रावण के यहां, जो महर्षि लोमश मुनि ने मानो देखो, अश्वमेध याग, कागभुषुण्ड इत्यादियों ने किया वह उसी पोथी की एक पवित्र देन थी। परन्तु उसका कर्म काण्ड और वेदमन्त्र क्योंकि वे इसमें निहित है। तो इस प्रकार मानो देखो, कर्मकाण्ड में भी महर्षि मार्कण्डेय मुनि महाराज अपने में मानो एकोकी थे। उस काल के, मानो देखो, अपने में पूर्णत्तव की आभा में रमण करते रहते, परन्तु आज उस पोथी का समापन हुआ है। उस समापन के समय में सम्भविता ब्रह्मे कृता अश्व मानो मेरे प्यारे महानन्द जी! मुझे कई काल से प्रेरणा देते चले जाते है। नाना प्रकार की प्रेरणा मानो प्राप्त होती रहती

थी। मैं यह कहा करता हूँ कि जिस साहित्य की प्रतिभा मानो राष्ट्र और प्रजा समाज से मानो देखो, ओझल हो जाती है, उस साहित्य का उद्बुद्ध होना, मानव को सार्थिकता में नहीं रहता। क्योंकि मैंने बहुत पुरातन काल में, अपने पुत्र से यह वर्णन किया। परन्तु उनकी प्रेरणा बारम्बार गतियाँ करती रहती है। अङ्ग संग हृदय में प्रवेश करती रहती है। क्योंकि संसार में यह जो हृदय है यह मानो देखो, ब्रह्माण्ड का द्यौतक कहलाया गया है। हृदय ही संसार की प्रतिभा कहलाती है। मानो हृदय में ही सर्वत्र परमाणु आते है, और आ करके उस स्थली पर विद्यमान होते है। वही परमाणु मानो, शिशु के रूप में, मानो देखो, वही पुत्र के रूप में परणित हो जाते है, वही परमाणु है जो विज्ञान के रूप में, यन्त्रों के रूप में, परणित हो जाते है। वही परमाणु अन्तरिक्ष में मानो देखो, स्थिर रहते है, वायु उन परमाणुओं को प्रायः गति देती रहती है।

आनन्द का अनुभव

विचार विनिमय क्या, मैं इस विज्ञान में, पुत्रों! तुम्हें ले जाना नहीं चाहता हूँ विचार केवल यह है कि इस साहित्यिक चर्चाओं में, वेद की आभा में रमण करना, यह मानवीयत्व की मानो देखो, एक असुत कहलाई जाती है। मैंने बहुत पुरातन काल में कहा ममत्वां ब्रह्मे, आज के वेदमन्त्र में भी माता का वर्णन आ रहा था, वहां रात्रि और काल प्रतिभा का वर्णन भी आता रहता है। माता को कही काल के रूप में, मानो देखो, वैदिक साहित्य में कोई शब्द आता रहता है और वह यह कहता है, वेद का मन्त्र कहता है कि कालां ब्रह्मे शुम्भवर दत्तवे रात्राणि गच्छतां ब्रह्मे व्रतो यह जो कालिमा का जो स्वरूप मानो एक बना रहता है, वह रात्रि के रूप में रहता है और रात्रि बन करके मानो देखो, अन्धकार की द्यौतक बनी रहती है वही मानो देखो, काल हमारे यहां कालिमा ममत्वां ब्रह्मे देवाः क्योंकि जब मानव संसार के व्यापार से, संसार की प्रतिभा से मानो देखो, यह जो ज्ञान का आवरण है, इस ज्ञान के ऊपर जो स्वर्ण का आवरण आ रहा है, इस स्वर्ण की मानो देखो, नाना

प्रकार की चामत्कारिक वस्तुओं में मानव चकित हो जाता है। चकित हो जाने के पश्चात यह काल के द्वार पर जाता है। काल के द्वार पर जा करके कहता है कि मैं पाप को त्याग रहा हूँ। वह मानव, पाप को त्याग देता है और वह निंद्रा, रात्रि की गोद में चला जाता है। कालं ब्रह्मे असुतो और जब वहां से वह आता है संसार में, पुनः आता है, तो मुनिवरों! देखो, आनन्द का अनुभव करता चला आता है।

स्वर्ण का आवरण

मुनिवरों! देखो, वह जो आनन्द है, उसको, जब अनुभव करता चला आता है कि आज ऐसी निंद्रा में तल्लीन हो गया हूँ मानो देखो, मुझे संसार का कोई भान नहीं रहा। तो वह मानो देखो, आनन्द का अनुभव हो रहा है। परन्तु देखो, जब यहां से निन्द्रा की गोद में जाता है तो पाप को त्याग देता है, वह पाप को वहीं त्याग करके देखो, वह आभा में और कालिमा की गोद में चला जाता है। परिणाम क्या है मानो देखो, उसके स्वरूप को न जान करके मानो देखो, जैसा मुझे मेरे प्यारे महानन्द जी! बारम्बार प्रगट कराते रहते है परन्तु ममत्वां ब्रह्म लोकां स्वस्ति देवाः यह जो स्वर्ण का आवरण छाया हुआ है, मानो देखो, ज्ञान के ऊपर, मुनिवरों! देखो, उस आवरण को शान्त करना है, उस आवरण को दूरी करना है, उसी आवरण की आभा में, मेरे पुत्रों! क्या क्या नहीं होता संसार में, यह मैं कई काल से तुम्हें, रावण की गाथाओं में, रावण के चरित्र में, मैं तुम्हें प्रगट करा रहा हूँ।

परन्तु देखो, अश्वमेध याग की प्रतिभा के पश्चात राजा रावण की जब गाथाएं अथवा उसका वर्णन आता रहता है तो वह मानो बड़ा आश्चर्य चकित है जहां राजा रावण का जीवन मानो देखो, भव्यता में परणित रहा है, भव्यता की आभा में रहा है, चरित्र की एक इकाई बन करके रहा है परन्तु देखो, जब मानव के सम्भवा ब्रह्मे कृतां देवाः मानो देखो, यह स्वर्ण का एक आवरण है। स्वर्ण का आवरण क्या है? क्या जब मानव सामाजिक कर्म करता है, समाज में उसकी प्रतिभा मानो उसको जो लोकैषणा आती है। लोकैषणा, पुत्रैषणा, वित्तैषणा यह तीन ऐषणाएं कहलाती

है। परन्तु एक दूसरे में, एक दूसरे से यह कटिबद्ध है मानो जो लोकैषणा है वही मानो देखो, वित्तैषणा है और जो वित्तैषणा है वही पुत्रैषणा है। मानो देखो, ये ऐषणाएं सब एक दूसरे से कटिबद्ध हो रही हैं जबकि यही स्वर्ण का एक मानो देखो, आवरण है, इन्हीं के मध्य में मानो देखो, एक आवरण कहलाता है। परन्तु देखो, जब इसके ऊपर हम गम्भीरता से और भी चिन्तन करना प्रारम्भ करते हैं, तो विचार आता है, परन्तु जब साहित्य, उस काल की सभा स्मरण आती है तो मानो देखो, उस समय कुछ और ही प्रतीत होता है।

धृष्टता से शरीर में विष

तो बेटा! राजा रावण के जीवन में मानो देखो, एक आवरण छा गया, आवरण छा जाने के पश्चात मानो देखो, सबसे प्रथम उन्होंने देखो, कपट की वार्त्ताएं, जो ऐषणा मानो अभिमान के एक वाक देखो, वैद्यराज से प्रगट की। मुनिवरों! देखो, वैद्यराज से प्रगट करने से वह कोई, क्योंकि वैद्यराज जो होते हैं इनका बड़ा अध्ययन होता है, इनकी बड़ी विचित्र धाराएं होती हैं। अध्ययन करने की, परन्तु औषधियों के ऊपर इनका अधिपथ्य होता है औषधि ही मानो देखो, जब अभिमान छा जाता है तो रूग्ण भी अवश्य आता है। जब रूग्ण आता है तो उसी प्रकार की औषध वैद्यराज के द्वार पर होती है। परन्तु देखो, जब मानव घृष्टता में परणित होता है, घृष्टता के पश्चात मानव के शरीर में विष उत्पन्न ही जाता है, विष के उत्पन्न होने के पश्चात वैद्य के ही द्वारा एक औषध होती है, उस औषध को वह जब अपने में पान करता रहता है परन्तु वही मानो देखो, रूग्ण समाप्त हो जाता है।

राजा रावण को लोकैषणा का रुग्ण

परिणाम क्या है मानो देखो, यह रूग्ण राजा रावण के अन्तर्हृदय में समाहित हो गया और यह रूग्ण क्या था, मानो देखो, लोकैषणा का, मुनिवरों! देखो, एकान्त स्थली पर राजा रावण जब अपने में मानो शान्त मुद्रा में होते, तो उस काल में वह यह विचारते कि मेरा राष्ट्र मानो देखो, इतना भव्य, इतना शक्तिशाली बन गया

है कि कोई भी मानो मुझे स्पर्श करने वाला राजा नही रहा, कोई मानो देखो, स्पर्श करने वाला नहीं रहा है। तो मुनिवरों! देखो, उस काल में, जो प्रभु की प्रतिभा है, प्रभु की जो छठा है मानो देखो, इसके ऊपर यह मानव, समाज, यह संसार आधारित रहता है। मानो जो परमात्मा, शुभ और अशुभ प्रेरणा देता है वह हृदय में प्रेरणा आती है, उन्हीं प्रेरणाओं का द्यौतक मानो स्वतः कहलाता है, वाणी कहलाती है, विचार कहलाते है। परन्तु उन्हें वह अपने से दूरी कर देता है। अथवा ओझल कर देता है।

राजा रावण ने मानो अपने से वह कार्य ओझल कर दिया। ओझल करने के पश्चात एक समय मानो देखो, उन्होंने एक सभा का मानो नृत्त किया, उस सभा में अपने मानो सर्वत्र पुत्र और देखो, कुम्भकरण इत्यादि सर्वत्रों को एकत्रित करने के पश्चात मानो उन्होंने सेनापति, अपने सेनापति खरदूषण को उन्होंने अपने समीप नियुक्त किया और यह कहा कि समुद्र के तट की दूरी पर राजा सम्पाति रहते है, उस राजा सम्पाति को विजय किया जाए। मेरे पुत्रों! देखो, मुझे ऐसा स्मरण है मानो देखो, विजय करने का, जब राजा रावण ने घोष किया, तो उस समय महाराजा, विभीषण ने यह कहा कि हे भगवन! आप हमारे मानो जेठे विधाता है परन्तु देखो, किसी को विजय करने की जो प्रवृत्ति है यह राष्ट्र की हीनता है, यह राष्ट्र की मानो देखो, एक कृति अस्तात कहलाता है।

क्योंकि महाराजा! सम्पाति का जो राष्ट्र है, वह इतना विशाल नहीं है, जो हम उससे संग्राम करने के योग्य हो, हमारा राष्ट्र विशाल है, क्योंकि हमारा राष्ट्र समुद्र के तटों से पाताल पुरी तक है, यह त्रिपुरी को देखो, त्रिपुरी में हमारा राष्ट्र है, मानो देखो, सम्पाति को क्यों विजय करने का तुमने एक कर्म बनाया है? मेरे प्यारे! देखो, उस समय अपने विधाता विभीषण को भी, उन्होंने उस काल में अपमानित किया, उन्होंने कहा तुम नहीं जानते, मानो देखो, राष्ट्र का, संग्राम करना यह एक आभूषण कहलाता है। यदि राजा के राष्ट्र में संग्राम नहीं होंगे, तो राजा को मानो

देखो, सम्पदा कहा से प्राप्त होगी, यह सम्पदा का द्यौतक है।

मेरे प्यारे! देखो, उस समय वह वाक देखो, शान्त हो गएं और शान्त हो करके मौन हो गये, परन्तु देखो, सेना स्वामी ने यह कहा कि हम भगवन! इस पर कुछ चिन्तन करेंगे, कुछ मनन करेंगे। मेरे प्यारे! देखो, मनन करने के ऊपर, यह वाक वहीं मौन हो गया। मौन हो जाने के पश्चात महाराजा सम्पाति को यह प्रतीत हो गया था, कि तेरे ऊपर राजा रावण ने आक्रमण करने के लिए अपना एक कर्म बनाया है। परन्तु वह अभी सान्त्वना में है।

वैज्ञानिक गरूड़ व सम्पाति

तो मुनिवरों! देखो, मुझे ऐसा स्मरण है, महाराजा सम्पाति और गरूड़ दोनों एक ही मां के पुत्र थे। परन्तु दोनों विज्ञान में रत्त रहते थे, वैज्ञानिक थे। मानो समुद्रों के तटों के आश्रित रहने वाले मानो उनका एक सूक्ष्म राज्य था। उस राज्य में वह अप्रात रहते थे। परन्तु एक समय महाराजा सम्पाति और गरूड़ दोनों अपने यान में विद्यमान हो करके सूर्य की यात्रा के लिए चले, परन्तु जब वह सूर्य की यात्रा के लिए चले, तो दोनों मानो देखो, किसी कारण से, यन्त्र में किसी प्रकार की मानो देखो, रूग्णता आ गई, रूग्णता आ जाने के पश्चात महाराज सम्पाति तो अपने राष्ट्र में, उस यान के माध्यम से वहां आ गये, परन्तु महाराजा गरूड़ को मानो देखो, यत्र ने कहीं दूरी या अन्तरिक्ष में शक्ति जाओं में परणित कर दिया। परन्तु देखो, वह कही विंध्याचल आश्वानी मानो देखो, एक राष्ट्र था, उसमें प्रवेश कर गये, मानो देखो, वह दण्डक वनों में अपने जीवन को व्यतीत करने लगे, उन्होंने विचारा कि हमारा राष्ट्र और हम दोनों मानो मेरे विधाता सम्पाति समाप्त हो गएं होंगे। जब इस प्रकार का विचार बना तो वह गरूड़ अप्रणा स्वस्ति वह गरूड़ वहीं सूक्ष्मसा मानो क्रियाकलाप करते रहते थे, और अपने उदर की पूर्ति करते थे।

राष्ट्र की प्रतिभा मानो देखो, महाराजा सम्पाति ने अपने में अपनाने की प्रवृत्ति की और देखो, राष्ट्र का पालन करते रहे, परन्तु देखो, पुनः राजा रावण ने वह सभा

की और राजा रावण की सभा में यह निर्णय हो गया कि सम्पाति को विजय किया जाए। सम्पाति को मानो देखो, रावण ने यह कहा कि एक दूत को ऐसा निश्चित किया जाए, जो सम्पाति को यह निश्चित संदेश दें, कि देखो, रावण तुमसे संग्राम करने आ रहा है। तो मानो देखो, जब उनका यह संदेश, एक सम्भवत नाम का एक मानो देखो, सेना खन्धनी मानो देखो, वह सम्पाति के द्वार पर पहुंचा, महाराजा सम्पाति से उन्होंने सब वार्ता मानो देखो, वर्णित की, वर्णन करने के पश्चात मानो देखो, वह अपने में पूर्ण होने के पश्चात, वह तो चला गया।

सम्पाति का राष्ट्र चिन्तन

परन्तु सम्पाति ने यह विचारा, रात्रि छा गई, काल रात्रि की गोद में जाने के पश्चात यह चिन्तन करने लगा कि यह क्या हुआ, मेरा विधाता तो मानो अन्तरिक्ष से वह तो मृत्यु को प्राप्त हो गया है और मैं यहां आ गया हूँ, मैं पालन कर रहा हूँ, प्रजा में किसी प्रकार की सूक्ष्मता नहीं है परन्तु मैं इस योग्य नहीं हूँ जो मैं राजा रावण की सेना में संग्राम कर सकूं, परन्तु देखो, महाराजा सम्पाति ने देखो, रात्रि समय में जब यह चिन्तन किया, उनकी पत्नी उनके समीप आई। पत्नी ने कहा हे देव! आप कैसे चिन्तित हो रहे हैं, मैं नहीं जानती, लेकिन आपका जो चिन्तन है यह मानो रजोगुण, तमोगुण से सना हुआ, चिन्तन मुझे प्रतीत होता है। मेरे प्यारे! महाराजा सम्पाति की पत्नी का नामोकरण मानो देखो, स्वस्तित कहलाता था, वह स्वस्ति होने के पश्चात उसका नाम श्रुति था। मानो श्रुति ने सम्पाति को कहा। सम्पाति को जब श्रुति ने यह कहा कि प्रभु! आपका चिन्तन बड़ा दूषित है। तो उन्होंने कहा हे श्रुति! मैं आज बड़ा दुःखित हो रहा हूँ, उसके मूल में यह है कि कल राजा, कुछ ही समय के पश्चात राजा रावण की सेना आ रही है, अब हमें क्या करना चाहिए? उन्होंने कहा देव! हम इस योग्य नहीं है। यदि मैं अपने पिता से मानो त्रेतकेतु राजा, एक सूक्ष्मसा राज्य था, वह उनके पिता थे। उन्होंने कहा कि यदि मैं अपने पिता से भी कहूँ, तो उसके पश्चात भी हम योग्य नहीं है उनका

तो वह एक कृत्त है।

तो मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने कहा तो देवी! क्या करना चाहिए? उन्होंने अपने सेनापति स्वाति स्वान्धानकेतु को निमन्त्रित किया और स्वान्धानकेतु से कहा कि महाराज! हम क्या करें, कि राजा रावण का यह मानो सन्देश आया है। उन्होंने कहा कि महाराज! हम कुछ कर नहीं पा सकते, आज्ञा दो, संग्राम करेंगे, राष्ट्र को हम मानो देखो, मृत्यु समय तक राष्ट्र की रक्षा करेंगे। मेरे प्यारे! उन्होंने कहा कि नहीं, ऐसा नहीं। मेरे पुत्रों! मुझे ऐसा स्मरण है कि मानो देखो, सम्पाति ने अपने उस राष्ट्र को मेरे पुत्रों! देखो, प्रातःकाल होते ही यह निश्चय कर लिया कि राष्ट्र को हमें रावण को प्रदान कर देना चाहिए।

मेरे प्यारे! देखो, वह राष्ट्र कुछ समय के पश्चात मानो देखो, उस राष्ट्र को सम्पाति ने रावण को प्रदान कर दिया और रावण के एक सेनापति थे जिनका नाम खरदूषण था, वह खरदूषण वहां का अधिराज बनाया। परन्तु खरदूषण की एक भौजई थी, जिसका नामोकरण मानो देखो, सुरसा कहलाया जाता था, वह सुरसा वहां की मानो देखो, अधिराज बना दी और वह सेनापति के रूप में ही परिणत रही।

मेरे पुत्रों! ऐसा मुझे स्मरण है कि महाराजा! सम्पाति और उसकी पत्नी श्रुति मेरे पुत्रों! देखो, भ्रमण करते हुए, वे महर्षि भारद्वाज मुनि के आश्रम में पहुंचे और भारद्वाज मुनि महाराज ने मानो देखो, उन दोनों को आसन दिया और वह विराजमान हो गये। परन्तु महाराजा सम्पाति से, महर्षि भारद्वाज ने कहा तुम ऐसे श्रुति अस्तो को, उन्होंने कहा कि प्रभु! हमारा राष्ट्र सम्ब्रव्हे उन्होंने कहा कि यह श्रवण तो मैंने भी किया है और यह तो मानो पृथ्वी पर एक मानो देखो, एक चर्चा का विषय बना हुआ है, परन्तु तुम यहां कुछ समय तक अपने जीवन को, उन्होंने वहां व्यतीत किया, कुछ विज्ञान में वह सहायक बनें। परन्तु उनके यहां देखो, गरूड़ भी उन्हें प्राप्त हो गया था। गरूड़ विधाता की भी उन्हें प्रतीति हो गई, क्योंकि भारद्वाज मुनि के यहां मानो देखो, वह भी एक विज्ञान का कुछ अनुसन्धान करने लगे।

महाराजा रावण का व्यापक राष्ट्र

तो मेरे पुत्रो! विचार विनियम क्या है, महाराजा सम्पाति का राष्ट्र मानो देखो, रावण को प्राप्त हो गया। रावण उसका धिराज बन गया परिणाम यह हुआ कि राजा रावण का इतना व्यापक राष्ट्र बन गया कि उनके राष्ट्र में, न तो सूर्य उदय होता था और न अस्त होता था। तो मुनिवरों! देखो, ये गाथाएं मैं तुम्हें प्रगट कर रहा हूँ यह इतिहास, साहित्य है। परन्तु देखो, यह अप्रणा कृत्तियो भागवहे अस्वत कहलाता है परन्तु देखो, राजा रावण का जितना भी जीवन चरित्र है उस चरित्र की धाराएं मुझे भली भान्ति स्मरण है। परन्तु देखो, मैं उसमें उस गाथा को आध्यात्मिकवाद और यह बहुत प्रिय लगता है इन आभा के अन्दर, मेरे प्यारे! देखो, आज का हमारा विचार यह क्या कह रहा है मानो देखो, राजा रावण ने जब सम्पाति के राष्ट्र को अपना लिया, उसके पश्चात उन्होंने एक सभा की और सभा करने के पश्चात मानो देखो, उस सभा में दोनों प्रकार का मानो देखो, विचार प्रकट किया गया। राजा रावण के समीप दोनों विचार आने लगे, उन्होंने कहा, प्रजा से भी विचार आने लगे उन्होंने कहा प्रजा में, हे रावण! यह मानो देखो, यह भी कोई प्रतिभा नहीं है मानो प्रतिभा उसी राजा की सुन्दर होती है जिसकी किसी के ऊपर आक्रमण करने की प्रवृत्ति नहीं रहती, वह हिंसा की जो प्रवृत्ति राजा के हृदय में परणित हो जाती है, उसके चरित्र की आभा को नष्ट कर देती है।

अभिमान का राष्ट्र

मेरे प्यारे! देखो, जब यह वाक उन्होंने श्रवण किया तो राजा रावण को क्योंकि देखो, वह जो स्वर्ण की आभा से मानो ज्ञान के ऊपर जो स्वर्ण का आवरण आ गया है वह आवरण मानो रावण के हृदय से दूरी नहीं हुआ। न होने के पश्चात मुनिवरों! देखो, वह चिन्तन देखो, जहां सुन्दर सुन्दर चिन्तन राष्ट्र के प्रति महान चिन्तन होते थे, वहां मानो देखो, सुरा और सुन्दरी के चिन्तन में देखो, राजा रावण लग गया। क्योंकि जब राजा ऐसे लग जाते हैं तो जो उनके सहयोगी है, वह भी

इसी में लग जाते है। क्योंकि राजाओं की प्रतिभा ही मानव की एक आभा कहलाती है, जिसके ऊपर मानो देखो, महारानी मन्दोदरी अपने में बहुत दुःखित रहती थी और यह विचारती रहती थी कि हे प्रभु! आप ने यह क्या किया, मानो देखो, मेरा जो राष्ट्र है मानो हमने अश्वमेध याग क्या किया है, मानो देखो, इससे तो हम मानो बिना याग के प्रियता में रहते थे। परन्तु यह अभिमान का राष्ट्र बन गया है। पति के हृदय में सुरा और सुन्दरी की प्रतिभा आ गई है, यह कोई प्रियता नहीं है, परन्तु देखो, प्रार्थना करती रहती, राष्ट्र में बहुत से प्राणी इस प्रकार की प्रार्थना ही करते रहते, परन्तु देखो, उनके विधाता विभीषण भी प्रभु का चिन्तन में यही वार्ता कहते रहते। परन्तु देखो, उस समय जब यह अस्वात बन गया, तो मानो देखो, यह राष्ट्र के लिए श्राप बन गया, प्रजा में मानो इस प्रकार की प्रवृत्ति जब राजा में आ गई तो प्रजा में भी उसी प्रकार की प्रवृत्ति की उद्बुद्धता हो जाती है।

अभिमान का कारण

तो परिणाम यह मेरे पुत्रों! मानो देखो, सम्पाति का राष्ट्र उन्हें प्राप्त होते ही और अभिमान की मात्रा मानो जागरूक हो गयी, अभिमान जागरूक हो गया, क्यों जागरूक हुआ अभिमान? इसके मूल को नहीं जाना किसी ने, परन्तु कुछ ऐसा ऋषि मुनियों का, ऐसा कुछ अनुभव रहा है क्योंकि देखो, उनका हृदय इस प्रकार का नहीं था जो राष्ट्र की प्रतिभा को अपने में, वह धारण कर लेते। परन्तु देखो, वह दोषारोपण मानो उनके हृदय में प्रायः आना ही था, क्यों आना था? क्योंकि राष्ट्र का उसे अधिकार नहीं था, अधिकार क्योंकि देखो, जब ममत्वां ब्रह्म देवाः ब्रह्मे कृतो राजा वही होता है जो समाज को जीवन दे देता है, राजा वही होता है जो समाज को चरित्र और देखो, माता की रक्षा करने वाला बनता है। मानो राजा वही होता है जो सुरा और सुन्दरी दोनों को मानो देखो, राष्ट्र से दूरी कर देता है। मानो देखो, वही राजा पवित्र होता है। जिसमें जन्य संस्कार होते है। वह मानो देखो, एक राष्ट्र में विशेष कर प्रतिभा में, उसकी आभा में परणित रहते है।

तो बेटा! यह आज का विचार, हमारा यह क्या कह रहा है आज का विचार बेटा! यह है कि हम मुनिवरों! देखो, राष्ट्र और उसकी प्रतिभा को अपनाते चले जाएं, क्योंकि राजा में सदैव रजोगुण की प्रतिभा होती है। राजा में रजोगुण की प्रवृत्ति आना और तमोगुण की प्रवृत्ति आना, उसके साथ बहुत अनिवार्य होती है। सतोगुण की प्रतिभा में वह इतना संलग्न नहीं होता। परन्तु देखो, यह सुरा, सुन्दरी की आभा मानो देखो, राजा रावण के यहां हुई, उसके विधाता कुम्भकरण जो इतना वैज्ञानिक, सात्विक विचारों का, उनकी पत्नी सोमकेतु मानो देखो, वह सदैव प्रार्थना करती रहती थी, वह उनकी वार्ता भी मानो देखो, जब राष्ट्र का इतना विशाल रूप को धारण करता है उस काल में मानो देखो, मानव अपनी प्रतिभा को समाप्त कर देता है। और वह अभिमान में परणित हो करके, अपनी छठा अपनी वास्तविकता हृदय की तरंगों को मानो समाप्त कर देता है, वह भी उसी कार्य में रत्त हो जाता है, जो विज्ञान में, जो विद्यालय में शिक्षा देते रहते थे कि सुरा ब्रहे मानो देखो, हिंसा नहीं करनी चाहिए, हिंसक राष्ट्र का मूल मानो देखो, उनका अभिमान बन गया था? बेटा! अब मैं शेष कड़ी, इसकी आगे की चर्चाएं कल प्रगट करूंगा। आज के वाक उच्चारण करने का अभिप्राय क्या है बेटा! अब मैं तुम्हें कल उच्चारण करूंगा, कि ऋषि मुनियों का जो एक समाज एकत्रित हुआ था मानो देखो, उसकी प्रतिभा उसकी आभा में रमण करूंगा।

वेद शाखा का अभिप्राय

आज का विचार हमारा क्या वेदों की शाखा कह रहा था बेटा! देखो, उच्चारण कर रहे थे अश्वतं ब्रह्मा ब्रहे वर्णासि असुतं देवाः स्वंजनं देवत्वां लोकाः मेरे प्यारे! महर्षि मार्कण्डेय मुनि महाराज की हम चर्चा कर रहे थे मानो देखो, मार्कण्डेय मुनि महाराज अपने में मानो महान वैज्ञानिक और महान प्रतिभाशाली थे। जिन्होंने मानो देखो, वेद के कुछ सूक्तों को ले करके उन्होंने मार्कण्डेय नामक एक शाखा का मानो देखो, निर्माण किया। उसको वेद में से उद्बुद्ध किया। देखो, शाखा कहते किसे

है? वह एक विचारणीय विषय है, शाखा उसे कहते है मानो देखो, एक विषय पर कुछ मन्त्र है और उन मन्त्रों का जो एक भावार्थ होता है वह अपने में मानो जिस समय का, जिस काल का, वह भाषा का विशेषज्ञ मानो देखो, राष्ट्र और समाज में जो साधारण और मार्मिक जो भाषा होती है, उस भाषा में वेदमन्त्र को मानो देखो, उसको रूपान्तरित कर देना और वेदमन्त्र ज्यों का त्यों है, एक शब्द लिया, जैसे एक शब्द हमने ले लिया वर्णाः तो वर्णाः के ऊपर मानो देखो, एक जो राष्ट्र भाषा या समाज की या उस काल की भाषा होती है उसी भाषा से मानो एक वर्ण के ऊपर वह एक एक व्याख्या कर देता है। तो वह एक व्याख्या पोथी बन जाती है। परन्तु देखो, उसको जब मानो देखो, कटिबद्ध कर देते है तो वह शाखा के रूप में परणित हो करके मानो देखो, वह राष्ट्र की सम्पदा बन जाती है और वह आगे आने वाला जो समाज है, वह उस पोथी के माध्यम से वेद के शब्दों को अच्छी प्रकार मानो देखो, उसकी जानकारी उसे हो जाती है।

तो परिणाम यह है मानो देखो, महर्षि मार्कण्डेय मुनि महाराज ने और देखो, उनके यहां उनके एक शिष्य थे जिनका नाम तुरूणकेतु था मानो देखो, तुरूणकेतु और मार्कण्डेय मुनि महाराज दोनों इसमें लगे रहते थे। मार्कण्डेय ऋषि का बहुतसा वर्णन आता है कि वह मानो देखो, सृष्टि के आदि का भी वर्णन है।

वैतरणी नदी

परन्तु मुझे तो मेरे प्यारे महानन्द जी! ने एक समय कुछ वर्णन करते हुए ऐसा कहा था कि मार्कण्डेय ऋषि महाराज मानो देखो, उन्होंने देखो, वैतरणी नदी का वर्णन किया है। मानो देखो, वैतरणी नदी का वर्णन जो एक अग्रहास कहलाती है। वैतरणी नदी उसे कहते है, जहां मानव मानो तर नहीं सकता, पार नहीं हो सकता, उसे हमारे यहां वैतरणी नदी कहते है, नदी कहते है। मानो देखो, प्रवाह को, वह प्रवाह चल रहा है तो मार्कण्डेय ऋषि महाराज ने उसका वर्णन किया। परन्तु देखो, वैतरणी नदी है क्या? मेरे पुत्रों! देखो, जब मोक्षवादी पुरूष कहते है, इस वाक को

मोक्षवादी पुरूष कहते है कि जब मानव आवा गमन में रमण करता है और माता के गर्भ में मानो जीवात्मा प्रवेश करता है तो माता के गर्भ स्थल में मानो देखो, रूदन की नदियाँ मानो गतियाँ कर रही है और उसमें मानो देखो, वह मानव अपने में अपने को अश्वस्त कर रहा है मानो देखो, उसको हमारे यहां वैतरणी नदी कहा जाता है, उससे तैरना है।

तो मुनिवरों! देखो, मार्कण्डेय जी कहते है कि यदि उस नदी को हमें पार करना है तो हमें तपस्या करनी है मानो देखो, तप में अपनी अन्तरात्मा को जानना है, अपने अन्तरात्मा को जानने के पश्चात उस मानो देखो, वैतरणी नदी से वह मानव पार हो जाता है। यह संसार भी बाह्य जगत में वैतरणी नदी के रूप में है। यह वैतरणी के रूप में ऐसे है मानो देखो, स्वर्ण का जो आवरण ज्ञान के ऊपर छा जाता है इस मानो देखो, स्वर्ण के आवरण में यह मानव रत्त रहता है, इसी में गति करता रहता है मानो देखो, इसी में रत्त रहता है आजं ब्रहे सम्भवा देवाः मानो द्रव्य की आभा में रत्त रहता है, उसके पश्चात उसी में मानो गति करता है, वह उससे पार नहीं होता। यह संसार रूपी एक नदी है एक सागर है मानो देखो, उसको नदी कहते है तो उसको सागर कहते है। मार्कण्डेय जी कहते है कि दोनों का स्वरूप एक ही है, मानो देखो, जो इन संसार रूपी समुद्रों में, नाना प्रकार की जो तरंगों का उद्बुद्ध होना है, नाना प्रकार की तरंगें उद्बुद्ध हो रही है, उन उद्बुद्ध हुई तरंगों का सम्भवा ब्रह्मणे कृतां देवाः मानो देखो, उससे पार होना है वे तरंगें आती रहती है, वे मान के रूप में तरंगें बन जाती हैं वे मान, अपमान की जो तरंगें हैं वही तरंगें मुनिवरों! देखो, मानव को अमानव बना देती है देखो, वे योगेश्वर नही बनने देती, कही मान हो रहा है तो कहीं अपमान हो रहा है। कहीं अपमान हो रहा है तो कहीं मान हो रहा है। इसी आभा में लगा रहता है।

परन्तु देखो, इसके कारण ही बाह्य जगत है आन्तरिक जगत जो परोक्ष का जगत है वह माता का गर्भाशय है। उसमें मानो देखो, वैतरणी नदी गति कर रही है, प्रवाह

चल रहा है मानो उससे पार नहीं होता, उसी के संस्कारों को ले करके, बाह्य जगत में आता है। इस मान, अपमान के जगत में लग जाता है। मानो देखो, मोक्ष की ओर अन्तरात्मा जो प्रकाशक है, शरीर को जो चेतनित बना रहा है परन्तु देखो, मानव इससे दूरी हो जाता है। तो इसलिए मार्कण्डेय ऋषि महाराज ने, अपनी वर्णन शैली में, विचार विनिमय में, जो विचार उन्होंने दिया है वह बड़ा विचित्र है यह आध्यात्मिकवाद और भौतिक विज्ञान मानो देखो, उसकी कुछ शेष चर्चाएं कल प्रगट करेंगे, आज का वाक समाप्त, अब वेदों का पठन पाठन होगा इसके पश्चात यह वार्ता समाप्त हो जाएगी।

आज का अभिप्राय यह कि हे मानव! तू अपने से अभिमानित न हो, अभिमान यदि तेरे हृदय में छा गया है, किसी भी प्रकार का अभिमान है, वही तेरे यहाँ मानो आवरण बन करके, तेरे अन्तरात्मा के प्रकाश में मानो बाधक बन जाता है वही मानो देखो, तेरे लिए तुच्छताम् बन करके मुनिवरों! देखो, यहां नाना प्रकार की आभाओं में रमण करा देता है। तो विचार यह है आज का हमारा, कि मानव को अन्तरात्मा को जान करके देखो, प्रभु के समीप जाने के लिए, हमें सदैव तत्पर रहना चाहिए मार्कण्डेय ऋषि महाराज ने, आज के वेद पाठ में भी मानो प्राणों की कुछ विशेषताएं वर्णन की है, उन वाक्यों को मानो हम, वार्ता में प्रगट करने के लिए कि प्राणों का निरोध, प्राणों की प्रतिभा मन से कैसे तारतम्य है ये चर्चाएं, मार्कण्डेय ऋषि महाराज के सत की कल चर्चाएं प्रगट करेंगे, आज का वाक समाप्त, अब वेदों का पठन पाठन। ओ३म् देवं दधि आभ्यां गताः माणां भद्रा श्वेजनाः गा ता रथं आप्यां रथौ। ...।

10. महाराजा रावण का राष्ट्र-830106

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भान्ति, कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेद मन्त्रों का पठन पाठन किया, हमारे यहां परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस मेरे देव परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है क्योंकि वे परमपिता परमात्मा वरणीय है, जो मानव उसका वरण कर लेता है अथवा उसे वर लेता है वह प्रायः उसी को प्राप्त हो जाता है। तो इसीलिए हमें उस परमपिता परमात्मा को अपना वरणीय बना लेना चाहिए। क्योंकि बिना उसकी उपासना के अथवा उसके ज्ञान और विज्ञानमयी स्वरूप को, दृष्टिपात किए बिना मानव का जीवन पवित्र नहीं बनता। जैसा हमारे यहां मार्कण्डेय ऋषि महाराज ने कहा है, उन्होंने एक वर्णन किया है, वेद का मन्त्र उच्चारण करते हुए कहा सभा वर्णं ब्रह्मे अध्यानमं ब्रव्हे वृत्यं ब्रह्मि माताप्रव्हा।

वैतरणी नदी

वेद का ऋषि विवेचना करता हुआ कहता है कि प्रत्येक मानव वैतरणी नदी में ही मानो रमण करता रहता है।

वैतरणी नदी उसे कहा जाता है, जो मानव जिसको पार न कर सके अथवा जिसमें तर भी न सके। उसे हमारे यहां गति प्रवाह को, वैतरणी नदी कहा जाता है। बाह्य जगत और आन्तरिक जगत दोनों में इसका प्रवाह चलता रहता है। यदि मानव सदैव अशुद्ध चिन्तन में लगा रहता है, विलासिता की पिपासा में लगा रहता है। तो मुनिवरों! देखो, वह मानव वैतरणी नदी के तट पर विद्यमान है। क्योंकि वह उससे तरना चाहता है परन्तु इन्द्रियों के जो विषय है, जिसमें नाना प्रकार का अशुद्ध प्रवाह हो रहा है, अशुद्ध जो प्रवाह है वह उस तट से दूसरे तट पर जाने नहीं देता। इसके मूल में क्या है? इन्द्रियों का जितना भी विषय, वासना है, इन्द्रियों का जितना

भी, उसके क्रियाकलाप है, मानो वे इसको तरने नहीं देते, वह वैतरणी नदी में ही गमन करता रहता है। परन्तु बाह्य जगत में तो यह उसी के स्वरूप में जीवात्मा, जो इस संसार में इसलिए आया था कि मुझे मोक्ष को प्राप्त करना है। मुझे मानो देखो, स्थूल, सूक्ष्म और कारण शरीरों को जानना है।

तीन शरीर

मेरे प्यारे! देखो, स्थूल शरीर मानो देखो, स्थूलता में रहता है, सूक्ष्म शरीर मानो देखो, संस्कारों की आभा को कहते है और कारण शरीर उसको कहते है जो मानो देखो, वासनं ब्रह्मे जो परमात्मा के निकट जाने के लिए तत्पर हो गया है। केवल उसकी दो विभक्त क्रियाएं रह गई है जिनको ज्ञानं ब्रह्मा बेटा! पञ्च तन्मात्राओं में जो ज्ञान और प्रयत्न गति करता रहता है मानो उसको लिंगमयी शरीर कहा जाता है। परन्तु लिंग शरीरों को न जानता हुआ, आत्मा मोक्ष और आनन्द को प्राप्त नहीं किया है, वह पुनरूक्ति संसार में आया और चला गया। परन्तु संस्कारों के वशीभूत वह माता के गर्भस्थल में प्रवेश हो गया है। परन्तु माता के गर्भस्थल में जब जीवात्मा मानो देखो, पनपता है। मैंने तुम्हें कई काल में विज्ञान की वार्ता प्रगट करते हुए कहा था कि मानो देखो, उस बालक का माता के गर्भ में जल ही ओढन होता है, जल ही आसन होता है जल ही पाशे होते है। परन्तु देखो, वह भी जल का एक बिन्दु है। परन्तु वह शिशु रूप में, माता के गर्भस्थल में पनपता है। कहीं मानो देखो, उष्णता आ रही है, कहीं शीतलता आ रही है, कहीं मानो देखो, उस माँ के गर्भ स्थल में रहते हुए मानो देखो, नद नदियों का प्रवाह चल रहा है। मानो वह नदियों का प्रवाह कैसा है?

मेरे प्यारे! देखो, वह प्रवाह एक नारकिक प्रवाह कहलाता है वह चल रहा है, जीवात्मा, उस शिशु के रूप में बेटा! उसका दिग्दर्शन कर रही है, दर्शन कर रहा है। आत्मा, उससे बाह्य कर्म की आशा में, परन्तु, उससे बाहर नहीं हो पाता तो वह एक वैतरणी नदी है, उससे वह मानव पार होना चाहता है। परन्तु पार हो नहीं

पाता। तो विचार विनिमय क्या वह जो मानो देखो, नारकिक जो प्रवाह बह रहा है, उसे हमारे यहां, मुनिवरों! आचार्यों ने उसको अव्रहा मानो वैतरणी नदी माना है। मार्कण्डेय मुनि महाराज ने इसका बहुत स्वरूपों में वर्णन किया है। परन्तु उसके वर्णन में और भी नाना प्रकार की वार्त्ताएं आती रहती है। परन्तु विचार यह कि अशान्ति का नाम ही हमारे यहां वैतरणी नदी का स्वरूप माना गया है। परन्तु देखो, शान्ति का नाम ही उस नद नदियों से पार होना है जिसमें आनन्द हो, ज्ञान हो, प्रतिभा हो, मानवीयत्व हो और मुनिवरों! परमात्मा के ऊर्ध्वा आनन्द में वह गति करने वाला हो। जैसे अग्नि का प्रवाह मानो गति कर रहा है अग्नि की ऊर्ध्वा गति है। मेरे पुत्रों! देखो, ऊर्ध्वा गति वाली जो अग्नि है वही प्रकाश देती है। जो मानव ऊर्ध्वा में रहता है वही प्रकाश का गामी बनता है। परन्तु जो ध्रुवा में रहता है वह अन्धकार का गामी बनता है। इसी आशय को ले करके आज बेटा! देखो, मैं उन्हीं वाक्यों में तुम्हें ले जाना चाहता हूँ कि संसार में ज्ञान और विज्ञान भी क्यों न हो परन्तु देखो, मानव अपने नारकिकतव से पार नहीं होता।

वैज्ञानिक मेघनाथ

मेरे प्यारे! मुझे वह काल स्मरण आता रहता है जिस काल में राजा रावण, लंका का स्वामी बना हुआ था। परन्तु राजा रावण के यहां विज्ञान भी पराकाष्ठा पर था। मुझे ऐसा वर्णन, ऐसा मुझे प्रतीत होता है मानो देखो, उस काल का विज्ञान कितना विशाल, राजा रावण के पुत्र मेघनाथ ने एक यन्त्र का निर्माण किया था त्रिपुरी के मध्य में, मानो उनके यहां कुछ वैज्ञानिक सहयोगी थे, जिसमें तुरूअस्वामकेतु एक वैज्ञानिक थे जिन्होंने बेटा! देखो, अग्नि के परमाणु, जल के परमाणुओं का समन्वय किया और अग्नि की उसमें पुट लगाई। मेरे प्यारे! देखो, जब अग्नि और वायु की अस्वात आभा को ले करके अग्नि की पुट लगाई गई तो वह यन्त्र ऐसा था, उस यन्त्र का यदि प्रवाह अन्तरिक्ष में या संग्राम या सेना में कर दिया है तो मानो देखो, नीचे जलाशय बन जाता है और ऊर्ध्वा में, नीचे जल और ऊर्ध्वा से मानो देखो,

अग्नि की वृष्टि प्रारम्भ हो जाती थी, मेरे प्यारे! देखो, सेना में रहने वाले युवक और क्षत्रिय मृत्यु के मुखारविन्द में परणित हो जाते थे।

व्रणीकाम स्वातकेतु यन्त्र

तो मेरे प्यारे! मेघनाथ के यहां ऐसा यान, ऐसा यन्त्र था परन्तु यान भी था और यन्त्र भी था। मेरे प्यारे! देखो, चन्द्रमा इत्यादि लोकों की यात्रा करना उनके लिए बहुत स्वाभाविक था। परन्तु राजा रावण एक समय बेटा! भ्रमण करते हुए मानो देखो, वह कैलाशपति महाराजा शिव के द्वार पर पहुंचे। महाराज शिव और मुनिवरों! देखो, उनके समीप विद्यमान हो रहे थे, महाराज गणेश। मेरे प्यारे! देखो, जब उनके समीप पहुंचे तो बहुत समय तक राजा रावण शिव के यहां बहुतसी विद्याओं का अध्ययन करते रहे। उन्होंने बेटा! यह वाक्, मैंने तुम्हें पुरातन काल में प्रगट किया। मेरे प्यारे! उनके यहां एक ऐसा यन्त्र था, जो राजा रावण, महाराजा गणेश और शिव इनकी सहायता के द्वारा एक यन्त्र का निर्माण हुआ था। जिस यन्त्र को महाराजा शिव ने उसकी मानो देखो, हृदय ग्राहिका का जन्म दिया और कहते है कि एक मानव मानो आक्रमण कर रहा है, जब मानव पर मानव आक्रमण कर रहा था वह कहता है अपनी पुकार से, मेरी कोई रक्षा करने वाला है, तो एक मानव कह रहा कि आ, जाओ, आ रहा हूँ। मैं तुम्हारी रक्षा करूँगा। मानो देखो, उसी का बल उसके हृदय में ग्रहित बन गया और वह बलिष्ठ हो करके मानो उसमें बल आ गया, उसी आभा को ले करके, वह मानव कैसे सहायक बनता है, इसी आभा को ले करके महाराजा शिव और रावण ने, उस यन्त्र का निर्माण किया, जिस यन्त्र में यह विशेषता थी क्या मानो देखो, संग्राम हो रहा है, यहां संग्राम में शत्रु से विजय नहीं हो रहा है। क्योंकि वह यन्त्र उसे सहायता दे रहा है। मेरे प्यारे! देखो, उस यन्त्र को महाराजा शिव ने रावण को प्रदान किया। कि हे रावण! तुम इस यन्त्र को ले जाओ।

यन्त्र की विशेषता

मेरे प्यारे ऋषिवर! वृणीकाम स्वातकेतु यन्त्र को ले करके बेटा! देखो, वहाँ से रावण अपने गृह में प्रवेश किया, भ्रमण करते, जब गृह में आए तो महारानी मन्दोदरी को समीप ले करके कहा कि देवी! हमें यह यन्त्र प्राप्त हुआ है। देवी ने कहाबहुत प्रिय। तो मुनिवरों! वह जो उनका गृह था, जिस आसन पर वह आश्रित रहते थे परन्तु देखो, मध्य का जो उनका खम्ब था, उसमें यन्त्र को वर्तित किया गया। मानो देखो, उसमें वह यन्त्र स्थिर कर दिया गया और उस यन्त्र में यह विशेषता थी कि रावण जब भी संग्राम में जाते, किसी थी जगह, स्थलियों पर, परन्तु उस यन्त्र का तारतम्य लगा और वह यन्त्र मानो उसे सहायता देना प्रारम्भ कर देता था। मेरे प्यारे! देखो, यन्त्र के आने पर, राजा रावण के हृदय में मानो और भी काल तक को विजय करने की भावना उसके हृदय में आ पहुंची। क्या मैं काल को भी विजय कर सकता हूँ। मेरा काल भी नहीं है। परन्तु देखो, इसी विवेचना को ले करके, वह अस्वातम बन गये, परन्तु देखो, अभिमान की कोई मात्रा होती है, उस मात्रा से भी विशेष मानो उसमें अभिमान आ गया क्योंकि संसार में बेटा! अभिमान ही मानव मृत्यु में ले जाता है, मानव को मृत्यु के गृह में प्रवेश कर देता है क्योंकि परमपिता परमात्मा निरभिमानी है। परमात्मा मानो देखो, अभिमान में नहीं है। इसलिए जो मानव संसार में अभिमान करता है, वह अभिमान में ही मृत्यु को प्राप्त हो जाता है।

राजा रावण के यहाँ शोध

तो परिणाम यह है मेरे पुत्रों! देखो, राजा रावण इस प्रकार के उनके यहां क्रियाकलाप वैज्ञानिक आभाओं में सूर्य यान, सूर्य की किरणों के साथ यान गति करने वाला बेटा! देखो, रावण के यहाँ था। मानो देखो, पूर्व काल में भी था, राजा रावण के काल में एक विशेष था। आयुर्वेद विज्ञान मानो देखो, चन्द्र विज्ञान, सूर्य विज्ञान, उसके ऊपर उनका बड़ा अधिपथ्य रहता था। अणु शक्ति के ऊपर मानो राजा रावण के यहां अनुसन्धान होता रहता था, ब्रह्मास्त्र इस प्रकार के थे मानो देखो, जिन ब्रह्मास्त्रों से वह राष्ट्र में, द्वितीय राष्ट्रों में अग्नि प्रदीप्त किया करते थे।

मेरे प्यारे! देखो, राजा रावण के यहाँ ऐसा शोध होता रहता था। परन्तु देखो, यहाँ तो राजा रावण उस एक स्थली पर पातालपुरी में बेटा! राजा रावण के पुत्र मानो अहिरावण राज करते थे। जब राज करते थे तो वह प्रजा में उन्हें सहर्ष अपना धिराज बनाया। परन्तु वह अधिराज ऊर्ध्वा में कर्म करते थे, क्रियाकलाप विचित्र होता रहता, उनके राष्ट्र में शान्ति की आभा में रमण करने वाला मानो देखो, कृति अश्वात, मेरे प्यारे! देखो, अश्वां भो सम्भवा देवत्वं नामाः मुझे ऐसा स्मरण आता रहता है कि महाराजा! सुग्रीव के यहां मुनिवरों! देखो, एक शान्ता नामक एक कन्या थी। शान्ता नामक कन्या का संस्कार, मेरे प्यारे! महाराजा हनुमान से हुआ था। उनके यहां एक पुत्र का जन्म हुआ, पुत्र प्रबल होते ही, विद्यार्थी पने में ही, वह पातालपुरी में चला गया था मानो देखो, पातालपुरी में वह शिक्षा अध्ययन करता रहा, जब वह शिक्षा अध्ययन करता रहा, तो वह कर्मठ थे, बलिष्ठ थे, ब्रह्मवर्चासि का वह पुत्र था, सूर्य विज्ञान पर देखो, उनका बहुत अधिपथ्य था। मेरे प्यारे! उनका पुत्र, अहिरावण का मानो द्वारपाल रहता, द्वारपाल क्या बेटा! वह महामन्त्री के रूप में भी वह रहा।

परन्तु देखो, वहां सम्भवे यह प्रतीत हुआ अहिरावण को, क्या मेरे पिता के हृदय में अभिमान छा गया है, उन्होंने सम्पाति राष्ट्र को अपना लिया है और सम्पाति और गरूड़ मानो देखो, वह विधाता थे जिनका पश्चात में मानो देखो, जटायु नाम से उनका नामोच्चारण भी होता रहा। परन्तु देखो, उनके राष्ट्र को, मेरे पिता ने अब अपना लिया है। ऐसी प्रवृत्ति जब उन्होंने स्वीकार की तो अहिरावण को महाकष्ट हुआ और उन्होंने मुनिवरों! देखो, एक पत्रिका मानो अपने पिता को लेखनीबद्ध करके अपने पिता को प्रदान की और रावण ने जब इस पत्रिका के मानो देखो, अपने नेत्रों से निहारा तो उन्हें मानो देखो, यह प्रतीत हुआ कि अहिरावण मानो देखो, धर्मात्मा बनना चाहता है। राष्ट्र में धर्मात्मा बन गया। परन्तु मैंने जो किया है वह अपने स्वाभिमान से किया है। मानो देखो, उन्होंने अपने पिता को पत्र का

अस्वत किया परन्तु पिता ने उनके वाक को मानो उस रूप में स्वीकार नहीं किया। जिस रूप से पुत्र ने मानो लेखनीबद्ध की थी। तो मुनिवरों! देखो, अहिरावण को यह प्रतीत हुआ कि तुम्हारा जो पितर है वह मद में है वह राष्ट्र के अन्धकार में अन्धकारित हो गया है। अहिरावण ने यह वाक स्वीकार किया, परन्तु वह मौन हो गये।

वैज्ञानिक अहिरावण

मेरे प्यारे! देखो, विज्ञान वहां भी पराकाष्ठा पर था, अहिरावण के यहां पर भी ऐसी एक शक्ति थी कि मानव के स्वरों के साथ में उस शक्ति को लाना, तो वह मूर्छित हो जाती थी। समाज का समाज मूर्छित हो जाता था। परन्तु देखो, ऐसे यान उनके यहां थे, कि वह चन्द्रमा की यात्रा में मानो देखो, मङ्गल और बुद्ध की यात्रा करते रहते थे।

तो मेरे प्यारे! देखो, इसी प्रकार उनके राष्ट्र का क्रियाकलाप चलता रहा। तो मुनिवरों! देखो, उस समय जब ब्रह्मे असतो देवाः मुनिवरों! देखो, ऐसा मुझे स्मरण है क्या, मानो देखो, महाराजा खरदूषण उनके सेनापति थे। मेरे प्यारे! देखो, सुरसा मुनिवरों! देखो, महाराजा सम्पाति से जो सुन्ध नामक राष्ट्र उन्होंने अपनाया था वह उसको मानो देखो, अध्यक्षता के रूप में, उस राष्ट्र की अध्यक्षता करती रही। मेरे प्यारे! देखो, सुरसा श्वाम भानु उनके यहां एक वैज्ञानिक, विज्ञान में रहते थे जिन्होंने मानो सूर्य की किरण के साथ देखो, यन्त्र गति करता था, वह श्वानू नामक जो वैज्ञानिक थे, यह सुरसा उनकी पुत्री थी। मानो इनकी कन्या थी, यह बड़ी कुशल, अपने में कुशलता को प्राप्त होती रहती थी।

महाराजा कुम्भकरण

तो मानो देखो, इसी प्रकार इनके राष्ट्र का क्रियाकलाप लंकेश बन करके मुनिवरों! वह अश्वत बनाया। जिसको देखो, महाराजा कुम्भकरण कहते है, उनका जीवन इतना पवित्र रहा परन्तु देखो, वह हिंसा में विश्वास नहीं करते थे, उनका अंहिसा

में अटूट विश्वास था। मानो देखो, आहार करते थे वैज्ञानिकों को भी यही शिक्षा देते थे। परन्तु जब यह दृष्टिपात किया कि हमारा तो राष्ट्र मानो अभ्रशं हो गया है। राजा मेरा पिता सम्भवे पिता के तुल्य मानो देखो, विधाता जैसे पुत्र पिता से दुःखित हो गए है। मानो देखो, उसी आभा में मुनिवरों! देखो, वह भी उसी की गति में गति करने लगे। एक समय बेटा! उनकी पत्नी रम्भातकेतु ने कहा हे प्रभु! आप के जीवन की जो दशा है, वह भिन्न बन गई है। उन्होंने कहा कि हां देवी! भिन्न बन गई है, मैं जान रहा हूँ। परन्तु वायुमण्डल, राष्ट्र का दूषित हो गया है। क्योंकि जेठे विधाता के दूषित होने पर। परन्तु देवी ने कहा प्रभु! आप इस प्रकार दूषित क्यों हो रहे हैं। आप दूषित न हुईए। उन्होंने कहा देवी! मैं प्रयत्न तो कर रहा हूँ, परन्तु मेरा अन्तर्हृदय नास्तिकता के आंगन में जा रहा है, क्योंकि मैंने विज्ञान को बहुत जाना है। मैं इस विज्ञान को जाना है कि मेरा अन्तर्हृदय यह कह रहा है कि पांच गति इस प्रकृति की होती है। पांचों गतियों में जब मैं गति करता हूँ तो मुझे देखो, ब्रह्म के दर्शन नहीं होते। उन गतियों में ब्रह्म का दिग्दर्शन नहीं होता। जब मुझे ब्रह्म का दिग्दर्शन नहीं होता तो मानो मेरी नास्तिकता की दशा बन गई है।

तप की मीमांसा

मेरे प्यारे! देखो, देवी ने कहा प्रभु! मैं जब विद्यालय में अध्ययन करती थी तो मेरे आचार्य यह कहा करते थे कि जब मानव की प्रकृति के गर्भ में जाने के पश्चात उसकी दशा मानो द्रव्य की लोलुपता में मानो देखो, भरण हो जाए, और नास्तिक हो जाए, नेत्रों में हीनता आ जाए, तो उस समय मानो देखो, उस मानव को तपस्या करनी चाहिए। मानो देखो, तप करना चाहिए। वे बोले की देवी! तुम्हारे गुरु ने मानो तप की मीमांसा क्या की है? उन्होंने कहा प्रभु! तप की जो उन्होंने मीमांसा की है, वह यह की है कि तपां मनवंचत देवत्यां इन्द्राणि गच्छप्राह्रि स्वाहा क्योंकि उन्होंने इन्द्रियों की देखो, इन इन्द्रियाँ का जो सारथी मन है, उस मन को पवित्र बनाने के लिए मानो देखो, अपने विचार अश्वानो को और देखो, उनको मौन हो करके,

इन्द्रियों के विषयों को हृदय में परणित करके और मौन हो करके चिन्तन करना चाहिए। इसलिए मानो देखो, मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने तप की मीमांसा की है और भी उन्होंने कहा है कि हम देखो, जनता में, जनार्दन में कोई मानो चेतना को दृष्टिपात करने लगे या जिस विज्ञान को आप ने जाना है, जिस विज्ञान की प्रतिभा को जाना है जिस गति को जाना है पञ्च रूपों में जो गतियाँ हो रही है मानो देखो, उसमें जो एक विशेष गति है उसका नाम ब्रह्म उच्चारण कर देना चाहिए। तो उससे भी हमारा कार्य मानो देखो, हम उसमें शुद्ध रूप में विशुद्धता को प्राप्त कर सकते है।

मेरे पुत्रों! देखो, महाराजा कुम्भकरण ने कहा देवी! वाक तो तुम्हारा प्रिय है, मानो तुम्हारे गुरु ने व्याख्या तो की है परन्तु मेरी व्याख्या यह है इस सम्बन्ध में, क्या प्रकृतिवाद में रत्त रहने से मानो देखो, जो परमाणुवाद में उड़ान उड़ने लगता है उसे और कोई दृष्टिपात नहीं आता। मानो देखो, वह गति को भी परमाणुवाद में ही रत्त रहने लगता है। तो मानो देखो, इस प्रकार उन्होंने अपनी पत्नी के वाक्यों को उस रूप में नहीं स्वीकार किया, जिस रूप में उसे स्वीकार करना था। परन्तु उसे उनका जीवन, वह पत्नी भी मौन हो गई, वह अपने प्रभु से यह कहती रहती हे प्रभु! यह कैसा नृत्त हो रहा है। मेरे नेत्रों के समीप यह कैसा नृत्त हो रहा है मैं इसको स्वीकार नहीं कर पा रही हूँ। क्योंकि संसार में, सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके बेटा! कोई भी काल हो, कोई मेरी पुत्री यह नहीं चाहती की मेरे पति में किसी प्रकार की दूषितता हो, वह सदैव यह चाहती है कि मेरे पति का आहार व्यवहार ब्रह्मवर्चोसि बुद्धिमता, ब्रह्मवेत्ता सर्वत्र गुणों को वह दृष्टिपात करना चाहती है मानो यौगिकवाद में भी देवी मानो देखो, अपने पति की सहायक बन जाती है, सहायक बन करके योग में परणित करा देती है। परन्तु कोई मेरी पुत्री ऐसी नहीं हुई अब तक, जो मानो किसी प्रकार की दूषितता को वह दृष्टिपात करने वाली हो। वह सदैव प्रभु से यह आन्तरिक प्रार्थना करती रहती है कि मेरा गृह, मेरा जीवन उस काल में स्वर्ग बनेगा जबकि

मेरे जो पति देव है उनके हृदय में मानो देखो, एक ज्ञान का, विज्ञान का, यौगिकवाद का और प्रभु के मनन और चिन्तन करने का प्रवाह गति करता रहेगा।

तो मानो देखो, इस प्रकार वह सदैव उपासना में रत्त रहती है परिणाम यह हुआ परन्तु देखो, वह तो रत्त रहना ही था, परन्तु देखो, महाराजा कुम्भकरण अपने में मानो देखो, आलस्य और प्रमाद में परणित हो गये, आलस्य, प्रमाद में हो गये, उनका अन्नाद दूषित हो गया, उनके मानो आहार भी दूषित हो गया, दूषित होने पर हिमालय में रहते, कही विद्यालयों में रहते, कही मानो देखो, आलस्य में, कही सुस्त रहते। तो मानो देखो, इस प्रकार उनकी विचारधारा बनने लगी। बनने का मानो देखो, मूल कारण उनके विधाता थे। उनका मूल कारण मानो देखो, जन समूह का जो प्रवाह था, उसमें जो जन समूह में जो प्रतिष्ठा हो रही थी, उस प्रतिष्ठा को वह अपने में सहन नहीं कर सके।

महाराजा विभीषण

परिणाम यह हुआ कि मानो देखो, इसमें अश्वं भवा सम्भवे मानो देखो, तृतीय विधाता विभीषण, प्रभु के चिन्तन में रहते थे, वह यह विचारते थे कि मानो देखो, इस प्रकार इनका नृत्त हो रहा है, तो इस नृत्त के प्रवाह में अपने जीवन को समाप्त न करूँ। मानो वह सदैव यां ब्रह्म अपने में मङ्गल में रहते थे, मुनिवरों! देखो, महाराजा विभीषण जी की पत्नी का नाम मुनिवरों! देखो, रीचकेतु था रीचकेतु उनकी पत्नी जो मान्धाता के पौत्राणि गच्छतं रेवकेतु मुनि महाराज की कन्या थी, वे मानो देखो, दोनों प्रभु का चिन्तन करते आहार और व्यवहारों में दोनों में, एक पवित्रता की धारा प्रवाह से गति करती थी। तो मानो देखो, वह सदैव अपने राष्ट्र के लिए कामना करते रहते, प्रभु का चिन्तन, याग नित्यप्रति किया करते थे, क्योंकि देवपूजा करना, ब्रह्मयाग करना यह मानव का क्रियाकलाप परम्परागतों से ही, मानवीय क्षेत्र में चला आ रह है।

रावण द्वारा ऋषियों पर कर

तो मेरे प्यारे! विचार विनिमय क्या कि हम बेटा! यह विचार इसलिए दे रहे है क्या तुम्हारे हृदय की जो प्रेरणा हमें बाध्य करती रहती है। मानो इस प्रकार उनके जीवन का क्रियाकलाप, राष्ट्र का जीवन चलता रहा। परन्तु राष्ट्र में देखो, एक दूसरे की आभा में दूषितपना आने लगा। जब दूषितपना आने लगा, तो मेरे प्यारे! देखो, एक समय राजा रावण ने ऋषि मुनियों की एक सभा की और ऋषि मुनियों को जो महान तपस्वी थे उन पर मुनिवरों! देखो, कर की विवेचना की। राजा रावण ने कहा कि जो भी मेरे राष्ट्र में रहता है, उसे राष्ट्रीय कर देना चाहिए। उसे राष्ट्रीय ऋण देना चाहिए। क्योंकि उसके ऊपर राष्ट्र का ऋण है वह जो भी आहार कर रहा है, वह राष्ट्र का कर रहा है। जो भी पृथ्वी के गर्भ से जन्म होता है, चाहे वह खाद्य हो, चाहे वह खनिज हो, परन्तु जो उसको पान करने वाला है, उसे राष्ट्र का मानो ऋण देना चाहिए। राष्ट्रीय ऋणों में परिणत हो गये। एक समय मानो देखो, ऋषि मुनियों पर राष्ट्रीय ऋण कहा था मानो देखो, यहां तक विवेचना, इतनी कायरता राजा रावण के जीवन में आई, क्या मानो देखो, ऋषि मुनियों के माष को मुनिवरों! देखो, अंगों में से प्रदान करके मानो देखो, ऋण में, अपने में स्वीकार करने लगा।

व्यवसायी राजा रावण

तो मानो देखो, इस प्रकार की हीनता के आने के कारण बेटा! देखो, लंका का राष्ट्र दूषित हो गया। मेरे प्यारे! देखो, दूषित होने पर अब राजा रावण ने एक समय अपने राष्ट्र में एक सभा की और उस सभा में जितने भी मानो देखो, कलाकार जितने भी मानो देखो, तन्तु विचारधारा के प्राणी थे, जो अपना व्यवसाय करने वाले थे, उन्हें एकत्रित किया। राजा का राष्ट्र मानो व्यवसायी बन गया और व्यवसायी कैसा बन गया, क्या मानो देखो, द्रव्य हीनं ब्रह्मा द्रव्यपति होते हुए, उनके हृदयों में चिन्ता स्थापित हो गई। क्योंकि राष्ट्र जब व्यवसायी बन जाता है तो मानो देखो, जो उद्योग का स्वामी बन जाता है, उद्योगपति बन जाता है उस समय जानो कि राष्ट्र में, प्रजा के वैभव को संग्रह करने वाला राष्ट्र बन जाता है और जब संग्रह

करने लगता है तो प्रजा में अशान्ति आ जाती है। उस अशान्ति के मूल में, मेरे प्यारे! देखो, उसके पिछले विभाग में रक्त भरी क्रान्ति बहती रहती है। तो मानो देखो, इस प्रकार राजा रावण का राष्ट्र व्यवसायी बन गया। यन्त्रों को लाना जाना, मानो देखो, यातायात अस्वाक करना मानो देखो, यन्त्रों को द्वितीय राष्ट्र में प्रदान करना, वहां से यन्त्रों को लाना मानो देखो, जितना भी उद्योग उनका था वह सब देखो, राजा रावण के राष्ट्र और भुजों में आ गया। जितना विज्ञान जो स्वतन्त्रता से विज्ञान के ऊपर मानव अपनी टिप्पणियाँ कर रहा था। मानो देखो, राजा रावण के राष्ट्र में मानो क्रियाकलाप कर रहा था, वह भी मानो देखो, उनको दण्डित किया जाने लगा। और देखो, उसका स्वामीत्व राष्ट्र बन गया। इस प्रकार का नियम बन गया तो एक समय मुनिवरों! देखो, विभीषण और उनको पत्नी राजा रावण के कक्ष में जा पहुंचे। राजा रावण ने कहाआओ, मानो वह विराजमान हो गये। असुतम ब्रह्मे दोनों ने नतमस्तिष्क हो करके कहा हे प्रभु! आप हमारे जेठे पिता है, जेठे विधाता है। विधाता है, तो पिता है। परन्तु आप राष्ट्र के भी पिता है। हम राष्ट्र की प्रजा के समतुल्य है। परन्तु देखो, राष्ट्र में जो क्रियाकलाप हो रहा है वह हमें प्रिय नहीं लग रहा है। रावण ने कहातुम्हें प्रिय क्यों नहीं लग रहा है? उन्होंने कहा प्रभु! जो आपको जीवन देखो, सात्विक और महानता में है, उसी जीवन को लाने से राष्ट्र का कल्याण हो सकता है और तुम्हारा भी, और हमारा भी कल्याण उसी में होगा। हमारे जो महापिता मानो पुलस्त्य ऋषि महाराजा थे, वह पाण्डित्व की दृष्टि से महान और पवित्र कहलाए जाते थे। उनका ऋषि मुनियों में बड़ा नामोकरण था, ऋषि मुनियों की कोई सभा होती तो नामो का उद्घोष किया जाता था। परन्तु आज हमारे ही, हम जब उनके पडपौत्र है, पौत्र है, परन्तु हम जब ऋषि मुनियों के मांषो तक का देखो, ऋण ले लेते है, राष्ट्रों को नामो घोषित करके, तो हम जैसा दूषित कौन होगा।

दूषित आहार व्यवहार का प्रभाव

मेरे प्यारे! देखो, जब रावण को यह आगाह कराया, तो राजा रावण मौन हो करके कुछ चिन्तन में लग गये। उन्होंने कहा कि हे भो सम्भवा हे ध्यावस्ते मानो मैं यह जानता हूँ जो तुम उच्चारण कर रहे हो। परन्तु विप्राण भूषणां वृहे आन्तो न प्रतीत, यह बुद्धि का सन्तुलन मेरे हृदय से दूरी चला गया है। परन्तु देखो, जो राष्ट्र का नियम, राष्ट्र की दशा देखो, रूपान्तर हो गई है, वह रूपान्तर रहेगी। परन्तु उस दशा का आना उसके लिए मानो देखो, अब इस समय सम्भव नहीं है। मेरे प्यारे! प्रार्थना करने के पश्चात, वह मौन तो कर दिये, परन्तु वह देखो, रहा ज्यों का त्यों। मेरे प्यारे! जब समाज का विनाश का समय आता है, किसी भी प्राणी का, उसकी बुद्धि में विपरीतपना आ जाता है उसके आहार और व्यवहार सब दूषित हो जाते है।

तो मेरे प्यारे! मुझे ऐसा स्मरण आता रहा है क्या मानो देखो, उसमें दूषितपना आ जाने पर विभीषण और उनकी पत्नी मानो देखो, अपने आसन पर आ पहुंचे। तो मेरे प्यारे! देखो, ऋषि मुनियों से करो की प्रथा मानो देखो, उस काल में जो प्रथा बनी है ऋण की, वह राजा रावण के काल में विशेष बनी। परन्तु ऋषि मुनियों ने मानो देखो, राष्ट्र को त्यागने का प्रयास किया। मानो देखो, कोई महाराज रघु प्रणाली, राष्ट्र में चले गये, कोई शिव के हिमालय में चले गएं परन्तु देखो, उसमें बुद्धिमान जो बुद्धिमता व्यक्ति आलम्बी थे वह राष्ट्र में न रहे। परन्तु देखो, उनका सूक्ष्मवाद बन गया और राष्ट्र में जब विवेकी पुरूष नहीं होते, विवेकी ऋषि मुनि नहीं होते, वेद के मर्म को जानने वाले मानो देखो, राष्ट्र में नहीं होते, तो राष्ट्र अग्नि के मुख में चला ही जाता है। मानो इसी प्रकार ऐसा क्रियाकलाप राजा रावण के राष्ट्र में होता रहा, परन्तु राजा रावण उसी में मग्न और प्रसन्न रहे। मेरे प्यारे! देखो, उनकी भौजई जिसका नाम शकुन्तलानसी था मानो देखो, वह अपने में बड़ी शकुन्तका के रूप में अपने में मानो वह शकुन्तका का उच्चारण किया करती थी मेरे प्यारे! देखो, राजा रावण के गुप्तचर विभाग में मानो देखो, वह विशेषज्ञ थी, वह

गुप्तचार विभाग में रहती थी। उनका भी अपने पन में एक अधिपथ्य था। परन्तु वह अपने सौन्दर्य, अपनी आभा में कटिबद्ध रहती थी। परन्तु देखो, उसमें विवेक तो था नहीं, परन्तु देखो, अधिपथ्य होने से वह गुप्तचर विभाग की अध्यक्षता करती रहती थी।

तो मुनिवरों! देखो, विचार विनिमय क्या मैं विशेष विवेचनाओं में आज तुम्हें ले जाना नहीं चाहता हूँ, मैं ऐसे साहित्य के वन में चला गया हूँ जहां मानो देखो, मुझे बहुतसी आभाओं में जाने के पश्चात, मुझे भी मौन होना पड़ेगा, मौन होना ही होगा। क्योंकि देखो, पराकाष्ठा किसी न किसी रूपों में होती रहती है।

मुझे वह काल, मुझे वह राष्ट्र की प्रतिभा स्मरण आती रहती है परन्तु वह राजा रावण नित्यप्रति याग में भी रहते थे, परन्तु याग की प्रतिभा को क्रियाकलाप में न लाना ही मानो देखो, निर्बुद्धि के रूप में उसको घोषित किया गया था। ऋषि मुनियों ने निर्बुद्धि मानो देखो, घोषित किया गया, यह कहा कि राजा है परन्तु देखो, विवेकी नहीं है और विवेक नहीं है तो राजा क्या है। मानो देखो, ऋषि मुनियों ने यह घोषित कर दिया था उस काल में, जब घोषित किया तो राजा रावण जब यह श्रवण करता कि ऋषि मुनियों मानो देखो, ऋण से अवक्रण हुए है तो उसी काल में उनको दण्डित करने लगे।

लंका की भौतिक उन्नति

मानो देखो, इस प्रकार का विज्ञान राजा रावण के राष्ट्र में पराकाष्ठा पर था, राजा रावण के यहाँ कोई सूर्य यात्रा में वैज्ञानिक लगा हुआ है, कोई चन्द्रमा की यात्रा में लगा हुआ है, कोई मानो देखो, लोकों की परिक्रमा में लगा हुआ है, बेटा! कोई मानो देखो, पृथ्वी के आंगन में यन्त्र गतियाँ कर रहे है इसी प्रकार सूर्य विज्ञान देखो, वायु विज्ञान, अग्नि विज्ञान, नाना प्रकार के मानो देखो, पृथ्वी के गर्भ से नाना प्रकार के खाद्य खनिज पदार्थों को मेरे प्यारे! देखो, वैज्ञानिक उसमें लगे हुए थे। सुन्दर सुन्दर भवनों का निर्माण हो रहा था, लंका ऐसे प्रतीत होती थी मानो जैसे

आज इसका निर्माण हुआ है, नदियाँ इस प्रकार की सजातीय रहती क्योंकि स्वर्ण के बेटा! देखो, पात्र थे यह मानो देखो, ज्ञान का जो मुखारविन्द था, वह उसमें मानो देखो, वह उससे ओत प्रोत, वह गुथा हुआ था।

वैधराज सुधन्वा का लंका त्याग

तो विचार विनिमय क्या, मेरे पुत्रों! देखो, सुन्दर सुन्दर मार्ग, वाहनों की गतियाँ मानो देखो, राष्ट्र में हो रही है। आयुर्वेद पराकाष्ठा पर है। जैसे मैंने तुम्हें कई काल में वर्णन कराया मानो देखो, अश्विनी कुमार जैसे **मुनिवरों! देखो, सुधन्वा अपने में यह अनुभव करता रहता कि मानो जो यह अश्वमेध याग करने के पश्चात, जो अभिमान की मात्रा उत्पन्न हो गई थी, वह अभिमान की मात्रा मानो आज पुष्प के रूप में, वह कृत हो रही है, मानो देखो, वह आज मुझे अनुभव हो रहा है। मानो देखो, उस समय महाराज सुधन्वा ने भी अपने में यह निश्चय कर लिया था कि मुझे भी इस लंका राष्ट्र को त्यागना ही होगा।** क्योंकि मैं इनको सहन नहीं कर सकता जो राष्ट्र में हो रहा है। मानो देखो, जो नृत्त हो रहा है जो कृतियाँ हो रही है वह दूरी अस्वतां निर्माण राष्ट्र चला जा रहा है, यह रसातल को जो रहा है, मैं इसका कैसे स्वीकार करूँ। परन्तु देखो, वह इसी चिन्तन में लगे रहते थे और भी नाना मानो देखो, प्रतिष्ठित जो महानुभाव थे वह इस चिन्तन में लगे रहते थे।

तो मेरे प्यारे! देखो, उस राष्ट्र का पतन होने लगा। परन्तु देखो, मैं शेष चर्चाएं तुम्हें कल प्रगट करूंगा। आज का वाक हमारा क्या कह रहा है बेटा! तुम्हें यह प्रतीत हो गया होगा, कि मानो देखो, इस प्रकार के राष्ट्र में अग्नि प्रदीप्त हो जाती है, एक तो राजा को व्यवसायी नहीं बनना चाहिए, जो राष्ट्र को ऊँचा बनाना चाहता है। परन्तु देखो, उन्होंने अपने राष्ट्र को उन्नत बनाने में मानो देखो, बहुत परिश्रम किया, परन्तु उसके पश्चात वह दूषितपना आ गया। तो मेरे प्यारे! विचार विनिमय क्या विचार क्या कह रहा है हमारा कि, हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए मानो देखो, यह उच्चारण करे कि हमारे हृदयों में अभिमान न जागरूक हो, अभिमान

ही एक मृत्यु का मूल बन करके मानो देखो, अन्धकार का द्यौतक बनता है इसीलिए मानो हम किसी भी द्रव्य की आभा में उसकी लोलुपता में हम देखो, अपने श्रोत्रों की, नेत्रों की उस शून्यता में न रह जाएं, हम आत्मतत्व को भी जानने वाले बने। तो मेरे प्यारे! विचार विनिमय क्या, मानो इस प्रकार का चक्र चलता रहा, राष्ट्र की आभाएं गति करती रही। बेटा! ऋषि मुनियों की सभाएं, वाचनाएं मानो देखो, उसके पश्चात मेरा दूसरा अध्याय किस काल में प्रारम्भ होगा। यह वाक बेटा! आज का समाप्त हो गया। आज के वाक उच्चारण करने का हमारा अभिप्राय यह क्या, मानो देखो, मैं प्रभु से यह याचना करता हूँ कि इस प्रकार के राष्ट्रों को, इस प्रकार के मानव को इस प्रकार के धिराजों को प्रभु सुमति सुबुद्धि सुवर्णा सब प्रदान करे। यह है बेटा! आज का वाक आज का वाक समाप्त, अब वेदों का पठन पाठन होगा। आज के वाक उच्चारण करने का अभिप्राय यह कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, देव की महिमा का गुणगान गाते हुए हम मानो देखो, उसी प्रारम्भ के विचारों पर आ जाएं कि हम संसार में अपने जीवन को नारकिक न बनाते हुए, सात्विक और सतोगुणी बनाए, सतोगुणी कैसे बनेगा एक दूसरे की सम्मति, एक दूसरे के विचारों का एकोकीवरण, एकोकीचरण रहना चाहिए, मानो प्रसन्नता से युक्त रहना चाहिए, प्रसन्नता जब होती है जब मानो एक दूसरे के मानो देखो, विचारों से उनके विचारों में अपनी सम्मति के अश्वत उत्पन्न करता है। मानो देखो, वही अपनी अन्तरात्मा के अनुकूल अपना कर्म करने के लिए, जो अन्तर्हृदय कह रहा है परमात्मा की उपासना में संलग्न होना, जो चेतना है संसार को चेतनित बना रही है यह संसार चेतना में दृष्टिपात आ रहा है। ... शेष अनुपलब्ध।

11. दानशीलता-840428

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भान्ति, कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेद मन्त्रों का पठन पाठन किया। हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस मेरे देव परमपिता परमात्मा की महिता का गुणगान गाया जाता है, क्योंकि वे परमपिता परमात्मा महिमावादी है। वह महान और चैतन्यवत कहे जाते हैं। हमारे आचार्यों ने परमपिता परमात्मा की विवेचना करते हुए कहा है कि कोई भी स्थली ऐसी नहीं है जहाँ वे परमपिता परमात्मा नहीं है, समुद्रों की कोई भी तरंगे ऐसी नहीं है, पर्वतों की कोई गुफा ऐसी नहीं मानी जहाँ वह मेरा देव विद्यमान न हो।

प्रकाश की प्रतिष्ठा

तो इसीलिए हम उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाने के लिए सदैव तत्पर रहते हैं, क्योंकि वेदों का प्रत्येक मन्त्र ज्ञान और विज्ञान की उड़ान उड़ता रहता है, प्रत्येक वेद मन्त्रों में उस महानता का वर्णन आता रहता है जिसको जान करके मानव पवित्र और महान बनता रहता है। क्योंकि मानव का प्रकाश में जाना ही उसका एक लक्ष्य है और जहाँ प्रकाश में प्रकाश की प्रतिष्ठा हुई, मानव की मनोनीत यात्रा समाप्त हो जाती है। जैसे एक यात्री गमन कर रहा है जब वह अपने लक्ष्य पर चला जाता है तो यात्रा समाप्त हो जाती है इसी प्रकार मेरे पुत्रो! यह मानव इस संसार में आया है तो यात्रा करने के लिए आया है। यहाँ प्रत्येक मानव यात्री बनना ही चाहता है। यात्रा का अभिप्राय यह है कि गमन और भ्रमण को दृष्टिपात करता हुआ मानव यहाँ से गमन कर जाता है, अन्तिम चरण उसका सान्त्वना को प्राप्त हो जाता है। जब हम इन वाक्यों पर विचार विनिमय करते हैं कि यह संसार क्या है? तो बहुत ऋषि मुनियों ने अपनी अपनी कल्पनाएं अपने अपने विचार व्यक्त किये।

तो बेटा! आज मैं उन विचारों में तो तुम्हें ले जाना नहीं चाहता हूँ केवल यह विचार विनिमय करना है कि हम परमपिता परमात्मा की महती, अथवा उसका यह गान गाया जा रहा है, एक ध्वनि पर ध्वनि प्रतिष्ठित हो रही है और उस ध्वनि में मानव ध्वनित हो रहा है। जैसा हमने पुरातन काल में इससे पूर्वकाल में भी उस संगतिकरण के सम्बन्ध में विवेचना हो रही थी। क्योंकि यागों का चलन हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, माना गया है। यागां ब्रह्मवाचों देवब्रहाः देवमृतम् यह जो याग कर्म है यह सृष्टि के प्रारम्भ से ही इसकी कल्पना प्रारम्भ हुई और आचार्यों ने इसके ऊपर अन्वेषण करते हुए यह कहा है कि यदि याग हमसे चला गया तो हमारा प्राण चला गया। क्योंकि हमारा जो याग है वही प्राण है और जो प्राण है वही सूत्र है, वही याग है।

संसार का सुकर्म

तो विचारा गया कि ब्रह्मवाचों इतना व्यापक देने का अभिप्राय यह है यागां ब्रह्म वाचो देवां जितना भी संसार का सुकर्म है, सुचिन्तन है, वह सर्वत्र क्रिया कलाप का नामोकरण याग माना गया है। हमारे यहाँ अग्नि में प्रवेश करने से अग्न्याधान करना भी अग्नि को साकल्य देना देवताओं के लिए प्रदान करना है, जिससे वायुमण्डल में एक महानता की प्रतिभा आती है। बेटा! इस सम्बन्ध में मैं अपनी कोई विवेचना देने नहीं आया हूँ। केवल विचार विनिमय यह है इससे पूर्वकाल में कुछ संगतिकरण के सम्बन्ध में कुछ विवेचनाएं हो रही थीं और कुछ याग के सम्बन्ध में भी चर्चाएं मानो उसका उद्घोष भी उच्चारण किया गया। उस उद्घोष में बेटा! कुछ ऐसा स्मरण है, ऐसा कुछ भान होता है कि मानव को अपने जीवन की प्रतिभा में शुभकर्म करना है, सुचिन्तन करना है अथवा संगतिकरण करना है। संगतिकरण में मैंने इससे पूर्व काल में बहुत से तथ्य तुम्हें उद्धृत किये, परन्तु आज भी मुझे स्मरण आ रहा है।

संगतिकरण

बेटा! देखो, संगतिकरण नाना प्रकार के साकल्यों को कहा जाता है चाहे वह साकल्य मेघों के अस्वतों में रहने वाला हो। चाहे वह साकल्य गुरुत्व में परणित होने वाला हो। परन्तु होता वह साकल्य ही है। किसी साकल्य में अग्नि प्रधान है तो किसी में वायु प्रधान है। परन्तु और भी नाना प्रकार की पुष्टियों को ले करके जब मानव व्यापक याग में परणित हो करके अग्नि में प्राणस्तु करने लगता है, तो मेरे प्यारे! वह संगतिकरण की प्रतिभा बन जाती है। संगतिकरण के ऊपर बेटा! मैंने बहुत पुरातनकाल में तुम्हें एक वाक्य भी प्रगट कराया था।

इस संगतिकरण की चर्चा एक समय महर्षि भारद्वाज मुनि के यहाँ हुई। भारद्वाज मुनि के यहाँ ब्रह्मचारी सुकेता, ब्रह्मचारी कवन्धी दोनों विद्यमान थे परन्तु जब संगतिकरण की चर्चाएं हुई। तो उन्होंने कहा भगवन! वेद का मन्त्र कुछ कहता है, वह संगति की चर्चा कर रहा है। परन्तु देखो, हम उस संगति को जानना चाहते हैं महर्षि भारद्वाज मुनि ने ब्रह्मचारी कवन्धी और सुकेता ने अपने में चिन्तन करना प्रारम्भ किया और चिंन्तन करते करते उसको क्रिया में लाना प्रारम्भ किया।

तो उन्होंने मेरे पुत्रो! देखो, गुरुत्व आकर्षण के ऊपर, किस प्रकार ये इतने असंख्य और महाभीमकाय विशाल लोक लोकान्तर अन्तरिक्ष में भ्रमण कर रहे हैं। इस पर चिन्तन करते करते वे बहुत दूरी चले गये। तो उन्होंने एक यान का निर्माण किया वह नाना साकल्य ले करके उनका संगतिकरण किया, संगतिकरण का अभिप्राय यह हो गया कि वह ऊर्ध्वा में उड़ान उड़ने लगा। ऊर्ध्वा में उड़ान उड़ता हुआ अपने में महानता की प्रतिष्ठा में प्रतिष्ठित हो गया। तो मेरे पुत्रो! परमाणुओं में संगतिकरण की चर्चा इसलिए कर रहा हूँ कि वैज्ञानिक भी इसके आश्रित रहते हैं। वैज्ञानिक जन मिलान में एक दूसरे में कुछ लगाते हैं। तो उसी का नाम संगतिकरण बन जाता है।

परमपिता का दान

परन्तु आज मैं विशेष विवेचना न देता हुआ केवल आज तुम्हें ये चर्चा कर रहा हूँ

कि हमारे यहाँ जहाँ संगतिकरण आता है वहाँ त्याग की बड़ी विवेचना आती है, मानव को दानी बनना चाहिए। दान किसे कहते हैं? कोई दानी नहीं बन रहा है, बेटा! कोई दानी बन नहीं पाता है क्योंकि दानी किसे कहते हैं? जो दान देता है वह दानी कहलाता है, परन्तु मैं जब बेटा! इसके ऊपर विचार करता हूँ तो एक वेदमन्त्र स्मरण आता है और वह वेदमन्त्र कहता है ब्रह्मा वर्चो देव ब्रहे वाचनं सूर्याणि गच्छतं ब्रह्म वाचा परन्तु देखो, यह वाक आता है, वेद का मन्त्र कहता है कि हे मानव! तू दान में जाना चाहता है, तो तू उस परमपिता परमात्मा के दान की चर्चा कर। जो एक एक वस्तु में पिरोया हुआ, परमाणु में पिरोया हुआ है और उसके पश्चात वह दानेषु बना हुआ है।

चेतना का स्रोत

बेटा! वह कैसा दान कर रहा है? प्रकाश आ रहा है, सूर्य से प्रकाश आ रहा है और सूर्य में प्रकाश द्यौ से आ रहा है और द्यौ से प्रकाश चेतना में बद्ध हो करके आ रहा है और उस चेतना का जो स्रोत है वह ब्रह्म माना गया है। तो विचार विनिमय क्या? कि वह कैसा विचित्र दानी है, बेटा! कैसा महान है? प्रकाश दे रहा है, मानव उसमें रत्त हो रहा है, प्रकाश को पान कर रहा है, वह प्रकाश का दान दे रहा है, वह कैसा अमूल्य दानी है। पुत्रो! अमृत का प्रसारण कर रहा है, अमृत दे रहा है, वह दान दे रहा है। दान किसका मानो ब्रह्म वाचो देवाः दानं ब्रह्म वाचम् इसको हम दान नहीं कहते। इसे कहते हैं कि यह उसका क्रिया कलाप है। स्वतः उसकी प्रतिभा मानी जाती है।

द्रव्य का सदुपयोग

तो विचार आता है कि दान क्या है? मेरे पुत्रो! देखो, दान उसे कहते हैं जो देवपूजा कर रहा है, परन्तु उसे यह भान है कि वह देवपूजा कर रहा है वह तो अपने हृदय का शोधन कर रहा है, अपने हृदय का सदुपयोग कर रहा है। अब यदि द्रव्य का सदुपयोग होता है तो उसको क्या हम दान कह सकते हैं? वह क्या है! परन्तु विचार

आता है कि ब्रह्म वाचो देवाः मेरे प्यारे! देखो, वह दान नहीं कहलाता, वह तो यज्ञमान बन करके वह देवताओं को हवि दे रहा है। क्योंकि देवता उसके शरीर में क्रिया कलाप कर रहे हैं, ब्रह्माण्ड में क्रिया कलाप कर रहे हैं। तो देवताओं को भोज नहीं दिया जाएगा तो किसे दिया जाएं? तो यह अग्नि अपने में धारण होती है अग्नि अपने में प्रकाश देती हुई सूक्ष्म रूप बना देती है। क्या यह दान कहलाएगा? परन्तु वेद का मन्त्र कहता है, यह दान नहीं कहलाता, यह तो अपने हव्य का सदुपयोग कर रहा है। क्योंकि द्रव्य का सदुपयोग करने को हम दान कहते है। परन्तु यह हमारे विचार में नहीं आता।

प्राणों की हवि

परन्तु आगे अनुसन्धानवेत्ताओं ने कहा है दानां दयितं ब्रह्मे दानेषु, दानी वह कहलाता है जो मेरे प्यारे! अपने प्राणों की हवि प्रदान कर देता है। प्राण कौन न्यौछावर करता है? कौन प्राण की धारा को अपने में प्रणव बनाता है? मेरे पुत्रो! वह आत्म चेतनावादी है। वह आत्मा का प्रतिष्ठित कहलाता है, परन्तु वास्तव में दानी वह कहलाता है जो उद्गीत गा रहा है, उद्गान गा रहा है। अपनी आत्मा को इतना बलिष्ठ बनाता है कि सिंहराज, मृगराज मौन हो करके उसकी वाणी का श्रवण करने लगे, उसकी वाणी को अपने में ग्रहण करने लगे। तो वह दानेषु कहलाता है।

दान की प्रतिभा

परन्तु देखो, जो वायुमण्डल को पवित्र बना रहा है, जो हिंसक प्राणियों को अहिंसा परणित कर रहा है, वह दान की एक प्रतिभा कहलाती है। परन्तु देखो, इससे भी सूक्ष्मरूपों में जाते हैं तो यहाँ राजा शिव की चर्चाएं आती रहती हैं। यहाँ मुनियों का जीवन स्मरण आता रहता है। ऋषि मुनि तप रहे हैं, त्यागी तपस्वी बन रहे है, परन्तु उस त्याग और तपस्या से वायुमण्डल का शोधन हो रहा है। अपने विचारों को महानता में परणित कर रहा है। तो वह विचारों का दान दे रहा है, वह अपने जीवन का उद्घोष कर रहा है। उसका परिणाम यह होता है कि वायुमण्डल में

पवित्रता आ जाती है। तो आज वह दान कौन माता कर रही है।

माता का पवित्र दान

मैंने कई काल में माताओं की चर्चाएं की है। कई काल में माता दान दे रही है। माता के गर्भस्थल में शिशु पनप रहा है। माता अपने विचारों को दे रही है, बालक को राष्ट्रीयवादी बना रही है, बालक को वेद के मर्म को जानने वाला ब्रह्मवेत्ता निर्धारित कर रही है। जब वह ब्रह्मवेत्ता बना देती है तो मानो वह माता कितना पवित्र दान दे रही है, वह कितना पवित्र दान दिया जा रहा है राष्ट्र, समाज को। माता लोरियों का पान कराती रहती है, बुद्ध और शुद्ध की विवेचना करती रहती है। ब्रह्मज्ञान की विवेचना करती रहती है कि हे पुत्र! यह ब्रह्म क्या है? जो सर्वत्रता में परणित रहने वाला है। वह रजोगुण, तमोगुण, सतोगुण में जो आयतन बनाए हुए, विद्यमान है, उसी का नामोकरण मेरे पुत्रो! उन्होंने मानो देखो, ब्रह्म की घोषणा की। जब ब्रह्मा की इस प्रकार घोषणा होने लगी तो वे परमपिता परमात्मा को साक्षी बना करके अपने विचारों को माता अपने में वह दानक प्रतिव्रता वह समाज को चाहती है, वह समाज को अर्पित करना चाहती है।

ब्रह्म की प्रतिभा

मेरे पुत्रो! वह काल मुझे स्मरण आता रहता है। माता कौशल्या का जीवन भी तपोमय कहलाया जाता था। माता क्या दे देती है संसार को? मुझे वह काल स्मरण आता रहता है बेटा! महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज का जीवन। वशिष्ठ मुनि महाराज की माता का जीवन, मेरे पुत्रो! देखो, बालक माता के गर्भ में प्रवेश हो गया था तो माता मुनिवरों! देखो, ब्रह्मज्ञान का अध्ययन करती रहती थी। अपनी वेदी बनाकर के विवेचना में परणित रहती और ब्रह्मज्ञान का अनुसरण करती रहती कि ब्रह्म क्या है? कहीं उन्होंने बेटा! रजोगुण को, तमोगुण को ही ब्रह्म की उपाधि प्रदान की। कहीं उन्होंने मुनिवरों! देखो, सतोगुण की उपाधि प्रदान की। परन्तु देखो, जब यह विचारा गया कि रजोगुण, तमोगुण, सतोगुण इन तीनों गुणों पर अनुशासन करने

के पश्चात ब्रह्म की प्रतिभा का भान होता है। ब्रह्मवादी वह बनता है जो विवेकी बन जाता है, जो शून्यता को प्राप्त हो जाता है। मानो देखो, वह माता कितना प्रिय याग कर रही है कि वह शून्यता में ब्रह्म का चिन्तन कर रही है। प्रत्येक प्राण सूत्र को प्राणं ब्रह्म वाचाः बेटा! प्रत्येक श्वांस की प्रतिभा को मुनिवरों! देखो, ब्रह्म में पिरोना चाहती है। वह ब्रह्म में पिरोती हुई शून्यवाद को प्राप्त हो करके उसमें जागरूकता आ गई है कि मुझे दान देना है, मुझे दान करना है। तो अपनी प्रवृत्तियों का दान दे रही है। बालक पनप रहा है और प्रकाश पा रहा है, ब्रह्मज्ञान का प्रकाश पा करके जब यह माता के गर्भ को त्याग कर और पृथ्वी माता के गर्भ में प्रवेश करता है तो उस समय वह जो माता का दिया हुआ उद्बुद्ध जो ज्ञान है, उद्बुद्ध जो अग्नि है उसे देकर के वह माता का धन्यवाद करता है। वह विचारता है कि माता ने यह पवित्रता की प्रतिभा प्रदान की है।

मेरे प्यारे! देखो, मुझे ऐसा स्मरण है कि महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज ब्रह्मवेत्ता बने। वह ब्रह्मचारियों में नहीं वह ब्रह्मवेत्ताओं में उपाधि प्रदान करते थे। माता अपना उद्घोष कर रही है। लोरियों का पान कराती है, तो एक समय माता यह चिन्तन कर रही थी कि यह जो संसार है यह क्या है? इसमें मानो देखो, इस संसार में प्रयुक्त रहता है। मैं इस संसार को जानना चाहती हूँ। बालक लोरियाँ का पान कर रहा है, नेत्रों को शान्तना में पान करके माता के उद्गानों को अपने में उद्गीत रूप में लाना चाहता है। माता अपने में चिन्तन कर रही थी कि यह संसार क्या है? यहाँ जो मानव इस संसार को जिस प्रतिभा में दृष्टिपात करता है वह ही दृष्टिगोचर आने लगता है। जैसे इस संसार को एक मानव दानों के रूप में स्वीकार करता है कि यह संसार तो दान का क्षेत्र हैं, प्रत्येक मानव देखो, दानी बना हुआ है, आदान प्रदान हो रहा है। प्राणियों के आदान प्रदान को दे करके उन्होंने कहा यह दानेषु हो रहा है, यह दान हो रहा है। जहाँ परमाणुओं का एक आदान प्रदान हो रहा है, द्वितीय परमाणु आदान प्रदान की प्रतिभा में रत्त हो रहा है।

देवताओं की प्रसन्नता

तो विचार विनिमय क्या? वह दानेषु बना हुआ है। माता अपने में चिन्तन कर रही है कि यह संसार तो यज्ञवेदी है मैंने अपनी वेदी पर विद्यमान हो करके साकल्यों से देवताओं को प्रसन्न किया है, परन्तु विचारा गया कि यह देवताओं का प्रसन्न होना ही संसार है। परन्तु आगे विचारा गया कि यह संसार तो एक ब्रह्मवेत्ताओं का समूह है। यहाँ प्रत्येक मानव विवेक चाहता है मेरी प्यारी माता विवेक चाहती हैं और विवेकी बनाना चाहती है। जो इस विवेक में आकर के एक मानव विवेकी बनकर के अपने विवेक का दान दे रहा है, अपनी प्रतिभा में रत्त हो करके अपनी मानवीयता का एक चित्रण कर रहा है।

तो मुनिवरों! देखो, माता अपने में चिन्तन कर रही है और विचार रही हैं कि मैं राष्ट्र को कुछ देना चाहती हूँ, मैं मानव समाज को कुछ देना चाहती हूँ, ब्रह्मवेत्ताओं को कुछ देना चाहती हूँ। तो जो माता दान कर रही हैं वह कोई दानी नहीं बन पाती। क्योंकि देखो, यह कोई द्रव्य, दानेषु बना हुआ है। यह विशेषता का वाक्य नहीं हैं। परन्तु दान वह देता है जो अपने विचारों को दे करके लेखनीबद्ध करके चला जाता है। लेखनी उद्गीत गाने लगती है तो अपने में प्रतिभा गीत बन जाता है।

विचार विनिमय क्या? मुझे वह काल स्मरण आता रहता है जहाँ भगवान कृष्ण और महारानी रूक्मणी दोनों विद्यमान रहते थे और दोनों विद्यमान रह करके समाज में एक समय यह विचारने लगे कि भगवन! यह जो संसार है यह एक समय देखो, मां काली के रूप में आने वाला है। भगवान कृष्ण ने कहा हां प्रियतम प्रायः ऐसा ही है। हमें क्या करना है? तो वह ज्ञानी बन गए और विज्ञान के उन तथ्यों को उन्होंने अपने में निर्धारण किया। जो हमारे यहाँ बेटा! सोमभानु का सोमवृद्धि की कुछ विधाओं का उन्होंने अपने में भान किया। विज्ञान में अणुवाद का संग्राम हो रहा है। अणु परमाणुओं को घोषित किया जा रहा है उनका उद्गान किया जा रहा

है। परन्तु देखो, वह ऐसा यन्त्र है जो उनके विषय में परमाणुओं को अपने में शोषण कर रहा है।

तो बेटा! वैज्ञानिक कितना विशाल काम कर रहा है। वह ज्ञानी बन रहा है, समाज की रक्षा करने के लिए, राष्ट्र की रक्षा करने में लगा हुआ है। वह एक समाज को दूसरे समाज में पिरोना चाहता है। तो मैं दान की चर्चा करता दूरी चला गया। विचार यह दे रहा था कि माता मुनिवरों! देखो, सोमभानु की माता ने अपने पुत्र को जिनको कभी श्रैणा धारा भी कहते थे, माता अपने बालक को पनपा रही है, बना रही है। तो वह दान दे रही है। वह दानेषु बनी हुई है।

तो मुनिवरों! देखो, एक मानव, मानव को ऊँचा बनाना चाहता है अपना उद्घोष करना चाहता है तो वह दान किया जा रहा है। दान की चर्चा करते हुए आचार्यों ने कहा कि जब मानव देव पूजा करता है तो तीनों वाक्य उसमें समाहित हो जाते हैं। मेरे पुत्रो! देखो, मानव अपने में प्रतिष्ठित कल्पना करने लगता है, ऊँची से ऊँची कल्पना करना यह दानेषु कहलाया जाता है।

किरणों के साथ में यन्त्र

मुझे स्मरण आता है महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज का जीवन। एक समय महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज जहाँ ब्रह्मवेत्ता थे वहाँ वह विज्ञानवेत्ता भी विशेष माने जाते हैं। एक समय माता अरूणधति के समीप विद्यमान होकर के अपने विद्यालय में यन्त्र का किसी काल में निर्माण किया था और उस यन्त्र का जब निर्माण किया तो यन्त्र में यह विशेषता हमारे यहाँ मानी गई सम्भवाः देवो ब्रह्मवाचोवर्णाप्रतिदेवाः मेरे प्यारे! देखो, महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज ने यन्त्र का निर्माण किया इसको उषेरमणि यन्त्र कहते थे, इसमें विद्यमान हो करके, एक ऊषा नाम की किरण होती है सूर्य की, मेरे प्यारे! ऊषा किरण के साथ साथ वह यन्त्र गति कर रहा है। वह यन्त्र गमन कर रहा है, वायु मण्डल में गमन हो रहा है, किरणों के साथ में यन्त्र गमन कर रहा है, परन्तु यन्त्र में यह विशेषता हैं कि वह किसी के परमाणुओं को निगलता चला

जा रहा है और शुद्ध वायुमण्डल का प्रसारण कर रहा है। मेरे प्यारे! इतना विशाल याज्ञिक बना हुआ है वह, कितना विशाल दानेषु बना हुआ है, वह दान कर रहा है, अपने को ऊर्ध्वा में सूर्य की किरणों में रमण कर रहा है। तो विचार क्या, मुनिवरों! देखो, यागों में रमण करना, एक एक याग में रमण करना अपने को दानेषु बनाना है।

उत्तम महादानी

बेटा! उस समय यह विचार हुआ कि संसार में कौन दानी है? कौन दान करता है? तो विचारते विचारते ऋषियों ने यह कहा कि सबसे उत्तम महादानी वह प्रभु है, वह चैतन्य देव है, जब सृष्टि का सृजन हुआ, तो एक एक परमाणु को एक एक सूत्र में पिरो दिया। जब एक एक परमाणु को एक एक सूत्र में पिरो दिया, तो कोई सूत्र ऐसा नहीं जो एक दूसरे में पिरोया हुआ न हो। किसी को सुखद हो। परमाणुओं का आदान प्रदान हो रहा है, विचारों की प्रतिभा में, विचारों के परमाणुओं को अर्पित किया जा रहा है। जो विचार यह कि वह विशालता में एक दानेषु परमपिता परमात्मा जो प्रकाश देता है। रात्रि आ जाती है तो चन्द्रमा का प्रकाश आता है, वह भी तो अमृतमयी देने वाला है।

प्रभु का याग

प्रभु ने ऐसा कहा जाता है कि जब सृष्टि का प्रारम्भ हुआ तो प्रभु! ने एक याग किया था उस काल में, वह जो याग था उस याग का नाम था अग्निहोत्री याग। उस याग में आत्मा को यज्ञमान बनाया गया, आत्मा को यज्ञमान बना करके वह जो ब्रह्म बने और वायु को उद्गीत गाने वाला निर्धारित किया और अग्नि मेरे प्यारे! द्रव्यों को प्रदान कर रही थी और पृथ्वी साकल्य की प्रतिपदा कहलाती है। विचार आ गया कि मुनिवरों! देखो, प्रभु ने कोई उद्गाता बनाया, वह उद्गीत गाने वाला, कोई प्रकाश देने वाला, कोई वह प्रिय यागां ब्रह्मयागाः मेरे प्यारे! वह ब्रह्मा का याग माना गया है। वह ब्रह्मयाग कर रहा है, उसी को ले करके यह संसार का चक्र

चल रहा है, यह संसार गतिशील हो रहा है, नाना परमाणुओं का आदान प्रदान हो रहा है। परमाणु का विभाजन किया गया तो मुनिवरों! देखो, उसमें से सर्वत्र ब्रह्माण्ड दृष्टिपात हुआ।

समाज का निर्माण

तो विचारने से प्रतीत हुआ कि वह मेरा देव परमपिता परमात्मा सर्वत्र ज्ञानी है, वह तो सर्वत्रदानी बना हुआ है, दान दे रहा है, उद्गीत गा रहा है, उद्घोष हो रहा है। जिस उद्घोष को पा करके मानव कुछ अपना निर्णय देता रहता है।

तो आओ, मेरे प्यारे! मैं तुम्हें विशेष विवेचना देने नहीं आया हूँ। विचार यह देने के लिए आया हूँ कि यहाँ प्रत्येक मानव मां का दानेषु बने हुए हैं, चन्द्रमा तारा मण्डलों का प्रकाश आ रहा है, एक दूसरे प्रकाश की प्रतिष्ठा हो रही है। तो वह कैसा प्रिय याग हो रहा है। कैसा प्रिय वह दान दिया जा रहा है कि उससे समाज का निर्माण होता है। माता के गर्भ में शिशु जाता है, तो आकाशगंगा की छाया आ जाती है, लघु मस्तिष्क में छाया आ जाती है, माला बन जाती है तारा मण्डलों की। इसलिए वह वैज्ञानिक बन करके अपने जीवन को महान बना सकते हैं। तो विचार विनिमय क्या? मुनिवरों! देखो, यही प्रत्येक दशा में दान दिया जा रहा है। याज्ञिक, यज्ञमान याग कर रहा है, अपना याग कर रहा है, अपने को साक्षी बना रहा है और अग्नि में साकल्य प्रदान कर रहा है, वायुमण्डल का शोधन कर रहा है। तो वह दानेषु बना हुआ है, दानं ब्रह्म वाचो देवाः।

एक देखो, पाण्डितव है, वह पाण्डितव क्या है? इस समाज में त्रुटि नहीं होनी चाहिए। समाज में विचित्रता आ जाएं। तो वह अपने विचारों को उद्घोषित करता हुआ पवित्रता में दृष्टिपात करना चाहता है। तो वह प्रिय यागों में परणित हो रहा है। आज मैं विशेषता में जाना नहीं चाहता हूँ, केवल विचार यह देने के लिए आया हूँ कि हमें दानं ब्रह्म वाचो। बेटा! हमारे यहाँ ऐसे दानी हुए हैं जिन्होंने पत्नी के बदले में बेटा! अपने शरीरों को प्रदान कर दिया है और कहा कि एकाकी यही मेरे

समीप है, मैं इसको प्रदान करने वाला हूँ।

महादान

बेटा! मुझे एक गाथा स्मरण आती है एक समय देखो, महर्षि प्रवाहण महर्षि शिलक और महर्षि दालम्य यह तीनों माता मल्दालसा के पुत्र कहलाते थे। जब माता अपने विद्यालय में ब्रह्मवेत्ताओं को उपाधि प्रदान कर रही थी तो एक समय जब वह गृह की स्थलियों से माता की आज्ञा से त्याग दिया तो सोमकेतु ऋषि महाराज थे जो वायु गोत्रीय कहलाते थे। वह उनके समीप जाकर के अध्ययन करने लगी। वह अपने में रत्त होने लगी तो मुनिवरों! देखो, जब वे तीनों विधाता अध्ययन कर रहे थे तो महर्षि प्रवाहण एक समय बेटा! भ्रमण करते हुए गंगा के तट पर पहुंचे। गंगा के तट पर जैसे ही विद्यमान हो गएं तो वह सन्धि का काल था, तो सन्ध्या करने लगे तो बेटा! मुझे स्मरण है कि उसमें एक कृतिकमयी ग्राह था जो एक प्राणी को तपस्या करते हुए स्वाति ब्रह्मवेत्ता को अपने में धारण करने लगे।

अपने में जब धारण कर लिया तो मैंने यह श्रवण किया है कि उस समय महर्षि प्रवाहण ने तपस्या में यह अपने में मनन किया और देखो, प्रार्थना की कि हे ग्राह! तुम इस ब्रह्मचारी को छोड़ दो, अन्यथा यह बड़ा अनर्थ हो जाएगा। कहा कि मैं इसको नहीं त्यागूंगा। उन्होंने कहा किसी प्रकार तुम इसको त्याग सकते हो? कहा कि एक प्रकार से त्याग सकता हूँ यदि इसके बदले में मुझे मेरा भोज्य प्राप्त हो जाए। क्योंकि यह ब्रह्मचारी मेरा भोज्य बन गया है, यह मेरा भोज्य है। इससे मेरा प्राण गति करेगा। महर्षि प्रवाहण ने कहा कि तुम मुझे आहार करो। उन्होंने कहा मैं तुम्हें आहार कर सकता हूँ। अप्रतम् मुझे इसके बदले अपना मानसिक प्रिय सभी कुछ प्रदान करो।

उस समय जब वे प्रदान करने लगे तो मुझे ऐसा प्रतीत होता है, ऐसा श्रवण किया है कि उन्होंने अपने श्वांस की प्राण सूत्र को सूत्रित होते हुए मेरे प्यारे! देखो, उदर में प्रवेश कर गये। जब उदर में प्रवेश कर गएं तो उन्होंने ब्रह्मचारी को त्याग दिया।

तो वह समाधिष्ट हो गये। तो ऐसा बेटा! मुझे स्मरण है कि वह व्यान प्राण को जानते थे। वह व्यान प्राण को मूलाधार से ले करके अपने प्राण को मुनिवरों! देखो, रीढ़ के साथ साथ गमन करा करके ब्रह्मरन्ध्र में प्रवेश कराना जानते थे, कृतिकाओं को जानते थे। तो तीन दिवस उसके उदर में रहे। परन्तु ग्राह ने यह प्रार्थना की कि प्रभु मैं प्रतिभाषित हो गया हूँ। मैं दुःखित हो गया हूँ। तुम मेरे शरीर से दूर चले जाओ।

मुझे कुछ ऐसा स्मरण है कि वह योगेश्वर, वह योगी मुनिवरों! देखो, कौन है? ऋषि प्रवाहण उसके उदर से दूरी हो गये। तो यह कितना महान दान है जो प्राणी की रक्षा करने के लिए अपने प्राणों की बलि प्रदान कर रहे हैं। अपने प्राणों का दान दे रहे हैं। यह सर्वत्र दानेषु बने हुए ऋषि है।

तपस्या का प्रभाव

तो विचार विनिमय क्या? आज मैं तुम्हें यह विचार देने के लिए आया हूँ हमें विचारना है अनुसन्धान, अन्वेषण करना है, हमें अपने जीवन को किस प्रकार महान बनाना है, पवित्र बनाना है। बेटा! हमें दान देना है, प्रवृत्तियों का, हमें अहिंसा परमोधर्मः में परणित हो जाना है। तो विचार विनिमय क्या? द्रव्य का दान, जहाँ मानव द्रव्य का सदुपयोग करता है, उसे भी हम दान कहते हैं। परन्तु एक मानव भावना से प्राणों की रक्षा करता है, प्राणों से प्राणों का संचालन कर रहा है, वह भी एक मुनिवरों! दानेषु बना हुआ है। आज मैं विशेष विवेचना तुम्हें देना नहीं चाहता हूँ। आज मैं भयंकर वन में चला गया हूँ। बेटा! विचार क्या? माता दानेषु बनी हुई है, राजा अपनी प्रजा के लिए तपस्या कर रहा है। राजा प्रजा को ऊँचा बनाना चाहता है और देखो, अपनी प्रवृत्तियों का अपने तपों में रत्त रह करके वह दानेषु बन जाता है प्रजा के लिए। और प्रजा उसका अनुसरण करके उसके लिए दानेषु बन जाती है और राज्य ऊर्ध्वा में गति करने लगता है।

बेटा! मुझे वह काल स्मरण आता रहता है जब किसी काल में महाराजा अश्वपति

के यहाँ बेटा! अध्यापन कार्य और क्रिया कलाप करते रहते थे। तो महाराजा अश्वपति एक समय विद्यालय में आए और विद्यालय में आ करके उन्होंने कहा कि मैं अपने राष्ट्र को दानेषु बनाना चाहता हूँ। वह कैसे बन सकता है? तो उस समय सर्वत्र मानो ब्रह्मवेत्ताओं ने अपने कण्ठ से उद्गमृता उत्पन्न करते हुए कहा कि तुम तपस्या को चले जाओ। तो **महाराजा अश्वपति ने १२ वर्ष का तप किया, और १२ वर्ष तक वेद के छन्दों में रमण करते रहे। उसका परिणाम यह हुआ कि उनका राष्ट्र सर्वत्र गायत्री की गोद में जाने के लिए तत्पर हो गया।** क्योंकि प्रत्येक प्राणी गायत्री का पठन पाठन कर रहा है, वेद की ध्वनि को ध्वनित कर रहा है। तो महाराजा अश्वपति ने यह विचारा कि वास्तव में इस क्रिया कलाप को हम स्वतः करेंगे। वह प्रजा उसी के अनुसार पनपने लगेगी। यदि हमारा क्रिया कलाप अशुद्ध होगा तो प्रजा अशुद्ध होगी, यदि हमारा विचार, क्रिया कलाप पवित्र रहेगा, ऊँची उड़ान उड़ने वाला होगा तो प्रजा भी ऊँची उड़ान उड़ने वाली बनेगी।

राष्ट्र उत्थान में सहायक

यह अपने में उन्होंने धारण किया, अपने में यह उद्घोष किया कि वास्तव में हमें अपने को महान बनाने के लिए वास्तव में तपस्वी बन करके दानेषु बनना है जिससे प्रजा अपना अनुसरण करने लगे। राजा दान दे रहा है, दूसरों को प्रेरणा प्राप्त हो रही है और इस प्रकार राजा एक दूसरे का परस्पर अनुसरण करने से सर्वत्र प्रजा यज्ञ और दान की महिमा से मण्डित होकर राष्ट्र उत्थान में सहायक होती है।

सृष्टि की सहायक

आज के वाक उच्चारण करने का अभिप्राय क्या कि हम सभी दानेषु को अपना अपना कर्तव्य मानें। दानेषु केवल द्रव्य का ही नहीं होता। सबसे बड़ा और महान दानी वे परमपिता परमात्मा का है जो इस विशाल सृष्टि की रचना करके कितना बड़ा दानी बना हुआ है। मानव को उसकी प्रतिभा के ऊपर मनन चिन्तन करके उस प्रभु के ज्ञान विज्ञान में रमण करना चाहिए।

द्वितीय देखो, हमारी माता भी दानी बनी हुई है, किस प्रकार अनेक कष्टों को सहन करके वह शिशु का पालन पोषण करती है और प्रभु की सृष्टि में महान सहायक बन रही है। माता का कितना बड़ा त्याग और बलिदान हैमानव आज इसको दान ही नहीं समझता। यह कैसी विडम्बना है और माता के प्रति, नारी जाति के प्रति अपने कर्तव्य को नहीं निभाता, नित्यप्रति अधिक उदासीन होता जा रहा है। इसी प्रकार मानो देखो, सूर्य, चन्द्रमा और अनन्त तारागण अपनी अपनी प्रभा से इस सृष्टि को प्रकाश का, ज्योति का दान करके आभायित बना रहे हैं। क्या पृथ्वी, क्या समुद्र, क्या पर्वत और क्या नदियां, सभी निजनिज क्षेत्र में जैसाजैसा परमात्मा ने इनको कार्य सौंपा है, उसको कर रहे हैं। यह संसार चक्र एक विराट यज्ञ का स्वरूप है, यह एक महान यज्ञशाला है, जिसमें सभी पञ्चभूत तथा अन्य प्रकृति के तत्त्व निज निज सामर्थ्यानुसार अपनी अपनी आहुति देते है, साकल्य प्रदान करते हैं।

तो मुनिवरों! देखो, आज के हमारे वाक का केवल यही अभिप्राय है कि मानव को भी यज्ञ करना अनिवार्य है और इसी में दान व संगतिकरण और देवपूजा तीनों का सम्मिलन हो जाता है। अब हमारा वाक समाप्त होने जा रहा है, समय मिलेगा तो शेष चर्चाएं कल करेंगे। अब वेद के मन्त्रों का पठन पाठन होगा।

12. औषध विज्ञान-840718

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भान्ति, कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेद मन्त्रों का पठन पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस परमपिता परमात्मा की महती का वर्णन किया जाता है नाना प्रकार का प्रकृति का जो आभूषण है जिसमें मानो सजातीय रहता है। कोई तो मानो इस प्रकृति को आभूषणों के रूप में स्वीकार कर रहा है और कोई इस प्रकृति में इतना रत्त हो जाता है कि अपने को इसमें मानो संलग्न करा करके अपने अस्तित्व को समाप्त कर देता है परन्तु ये जो परमात्मा का अमूल्य जगत, जिसमें हम संलग्न हो जाते है जब हम प्रभु को अपने से दूरी कर देते है तो प्रकृति में लिप्त हो जाते है। परन्तु जब हम परमात्मा को अपने समीप ममतामयी मातामयी, मानो उसको एक स्रोत स्वीकार कर लेते हे तो प्रकृति के आभूषणों में हम इतने संलग्न नहीं होते। उससे हमारा जीवन उपरामता को प्राप्त हो जाता है। और अपने देव को हम स्मरण करने लगते है। जो संसार का नियन्ता अथवा निर्माण करने वाला है।

अशुद्ध प्रवृत्ति

जो इस सर्वत्र ब्रह्माण्ड को अपने में धारण कर रहा है और ब्रह्माण्ड की एक माला बना देता है। परन्तु वह कैसी विचित्र माला है, जिसको धारण करने के पश्चात मानव का जीवन पवित्र और महान बन जाता है। परन्तु हमें वह माला धारण कर लेनी चाहिए, जो परमपिता परमात्मा की माला को अपने में धारण करना नहीं चाहते, वह केवल एक अशुद्ध प्रवृत्ति वाले कहलाते है। परन्तु यह माला क्या है? जिस माला के सम्बन्ध में वेदज्ञ ध्वनि भी आती है, परन्तु जब व्याकरण की दृष्टि में, व्याकरण के उस अनहद रूपों में परणित होते है तो एक मालासी हमें, दृष्टिपात आने लगती है।

मुझे स्मरण आता रहता है पुत्रों! एक समय महर्षि श्वेनकेतु, अपने में अध्ययन कर रहे थे। अध्ययन करते करते कहीं, इन्होंने एक अक्षर, अनहद का श्रवण किया। परन्तु श्वेनकेतु अपने पूज्य गुरुदेव के समीप पहुंचे। वे कहीं हिमालय की कन्दराओं में, तपस्या में तल्लीन थे। परन्तु उन्होंने कहा हे भगवन! मैं ये जानना चाहता हूँ कि अनहद किसे कहते है? स्वर ध्वनि किसे कहते है? और स्वर ध्वनि की उपलब्धि क्या है?

व्याकरण सूत्रों का विकास

तो मानो जब यह वाक ऋषि ने प्रगट किया, तो उनके पूज्य गुरुदेव बोले कि हे ब्रह्मचारी! तुम यह वाक क्यों प्रगट कर रहे हो? उन्होंने कहा प्रभु! मैंने यह शब्द श्रवण किया, मैं इसके गर्भ में नहीं जा सका हूँ। उन्होंने कहा कि अनहद ब्रव्हे वाचप्रवि शिव ब्रहा मानो वह जो परमपिता परमात्मा शिव है, वह जो विष्णु है, जो पालन करने वाला है मानो देखो, जिस समय सृष्टि का प्रारम्भ हुआ, तो सृष्टि के प्रारम्भ में, प्रत्येक प्राणी के मस्तिष्क की, इस प्रकार रचना की, इसमें ज्ञान और प्रयत्न निहित रह सके। जिसमें ज्ञान और प्रयत्न की धारा, एक विशुद्ध रूप से गति करती रहे। परन्तु उसी स्वरूप को ले करके, पुनः जब सब प्राणियों को मस्तिष्क प्रदान कर दिया तो पश्चात में मानो देखो, इस देव का, मानव के मस्तिष्क का निर्माण किया और वह ऐसे तन्तुओं से निर्माण किया, जिससे और प्राणियों का भी किया। परन्तु देखो, जब इसका निर्माण होने लगा, तो इसमें नाड़ियों का एक ऐसा समूह, एक ध्वनि रचित्त की, जिसको व्याकरण की दृष्टि से मानो देखो, सूत्रों का निकास हुआ और वह मानो जैसे महाराजा शिव का मानो देखो, दण्डवत नृत्य कहा जाता है। वह जो नृत्य है, वह नृत्य यही है कि परमात्मा का नृत्य, आत्मा रूपी शिव का जब नृत्य होता है मानो प्राणं मनश्चप्पव्हे जब इनकी स्वरध्वनि एक सूत्र में आती है।

तो मानो इसमें से सूत्रों का निकास होता है। तो व्याकरणवेत्ताओं ने, उस अनहद,

जो ध्वनि उत्पन्न होती है उसी अनहद के स्वरों को ले करके, एक दूसरा जो स्वर माला में पिरोया हुआ था, उस माला को एकोकीकरण करके मानो देखो, उससे व्याकरण की उत्पत्ति का मूल बनता है। परन्तु जब मूल बना तो उस मूल में ही मानो देखो, यह प्रतिभाषित हो गया। शिकां ब्व्हे व्रेतकेतु ने कहाधन्य है प्रभु! आपने मुझे जो मेरा विचार रहा था, वहीं मुझे स्मरण पाया। वही आपके हृदयों में पाया। परन्तु विचार विनिमय क्या कि मुनिवरों! देखो, हमारा जो तपस्या का अथवा साधना का एक स्रोत माना गया है। वे परमपिता परमात्मा के आश्रित हो करके, हम अपने उस श्रोत्तीय विज्ञान में परणित हो जाए। मानो देखो, हमारा जीवन परमात्मा से कटिबद्ध रहा है। उसी से कटिबद्ध हो रहा है।

प्रभु की महानता

परन्तु देखो, आज बेटा! मैं विशेष चर्चा न प्रगट करता हुआ, केवल यह वाक की, हम परमपिता परमात्मा के आश्रित अथवा उसे अपने में स्मरण करने वाले बने और वह स्मरणीय कहलाता है। जब क्षुधा लगती है तो मानव उसी की गोद में जाता है। जैसे माता का पुत्र, व्याकुल हो रहा है, क्षुधा से पीड़ित हो रहा है, माता उसे अपनी लोरियों में आलिंगन करा देती है। उसे लोरियो का पान करा देती है वह आनन्दित हो करके मानो देखो, माता की लोरियों से, अपनी क्षुधा की शान्ति, क्षुधा में अमृत हो करके मानो उसको प्राप्त कर लेता है। तो मैं आज तुम्हें विशेष वाक न देता हुआ, मानो देखो, यह सर्वत्र जो वायु मण्डल बना हुआ है यह मानव का जो मस्तिष्क का निर्माण हुआ है यह प्रभु की एक अनुभूति है, प्रभु की महानता है। इसके ऊपर प्रत्येक मानव को परम्परागतो से विचार विनिमय करके, अपनी आभा में परणित हो जाना चाहिए।

सृष्टि विज्ञान

तो आज मैं मुनिवरों! विशेष वाक्यों में न जाता हुआ, वाक क्या प्रारम्भ हो रहा था। वाक क्या कह रहा है मानो बेटा! मैं उसी विज्ञान में जाना चाहता हूँ, जिस विज्ञान

की मानो मैंने एक गाथा, एक रूपरेखा का निर्माण किया है, एक रूपरेखा की मानो एक कृति को ले करके, एक अङ्ग को ले करके मैं मानो प्रभु की सृष्टि में पहुँच गया था और वह सृष्टि विज्ञान क्या, वह जो स्थावर सृष्टि है, इसका जो मानवीय विज्ञान है, यह बड़ा विशुद्ध और विचित्र माना गया है परन्तु देखो, आज मैं पुनः से उसी क्षेत्र में जाना चाहता हूँ जहाँ मुनिवरों! देखो, मानव अपने में साधक बन करके, साधना करता हुआ, नाना प्रकार के वृक्षों का, नाना वनस्पतियों का अपने में अध्ययन करता हुआ मानो देखो, उसमें नृत्त करना, उसने उनके गुणों की प्रतिभा को अपने में धारण करना है मानो उन्हीं को धारण करने वाला प्राणी, इस समूह सागर से पार हो जाता है।

तो आओ मुनिवरों! देखो, आज मैं तुम्हें, उस क्षेत्र में ले जाना चाहता हूँ जहाँ ऋषि मुनि साधना में परणित हो करके, अपनी साधना में रत्त रहते। मानो देखो, मुझे ऐसा स्मरण है आयुर्वेदाचार्यो के मतां में नाना प्रकार की वार्त्ताएं आती रहती है। परन्तु उन वार्त्ताओं में, मैं आज जाना नहीं चाहता हूँ, विचार केवल यह है कि हमारे चहां लेपन, शोधन, आहार, विचारा, सम्भूति, प्रतिभा, वाचनकृत्तिका मानो धेनु वृत्तिका सम्भेनकेत, सम्भिविका मानो देखो, यह प्रकृति के सर्वत्र नामो का वर्णन आता है। क्या मानो देखो, इसी प्रकार मानव के शरीर में, इस प्रकार की अनूभूतियां, इस प्रकार की विचित्रताएँ मेरे पुत्रों! आना प्रारम्भ हो जाती है।

महात्मा कुक्कुट मुनि का जीवन

तो मानव इस संसार सागर में अपने को सफलता के मार्ग पर ले जाता है और विचारता रहता है कि मानो देखो, मुझे स्मरण आता रहता है। मुझे स्मरण है महात्मा कुक्कुट मुनि महाराज का जीवन, मैंने तुम्हें कई काल में कुक्कुट मुनि के जीवन की चर्चाएं की, परन्तु राजा रावण भी उनके यहाँ साधना के लिए, प्रवेश करते रहे। परन्तु महात्मा कुक्कुट मुनि महाराज का आयु, जब केवल मानो सौ वर्ष का हुआ, तो वह साधना तो पूर्व ही करते रहते थे और जब उनका आयु केवल

पन्द्रह वर्ष का था, माता के आंगन में खिलवाड़ करते थे, विद्यालयों में शिक्षा अध्ययन करते थे। परन्तु उसी समय से साधना में, अनुष्ठान में उनकी बड़ी प्रवृत्ति रहती। तो वह एक समय, माता पिता की आज्ञा पा करके, वह मानो पर्वतों में चले गएं और पर्वतों में एक मानो जलाशय का, क्षितिज स्थली थी, वहाँ मानो एक आसन पर विद्यमान हो करके वह मानो देखो, माता गायत्री की गोद में चले गएं और अपने में यह सङ्कल्प कर लिया कि मैं अपने आन्तरिक और बाह्य प्रकाश दोनों का समन्वय चाहता हूँ। आन्तरिक जगत और बाह्य जगत दोनों प्रकाश को, अपने सामूहिक, दोनों का समन्वय करता हुआ अपने इस सागर संसार की प्रतिभा से ऊर्ध्वा गति में प्रवेश करना चाहता हूँ।

तो महात्मा कुक्कुट मुनि महाराज तपस्या में तल्लीन हो गये। परन्तु वह प्रभु के सम्बन्ध में विचार विनिमय करते रहते और विचार यह करते रहते, उनके जो श्वांस की गति मानो कभी धीमी बन जाए, कभी ऊर्ध्वा में बन जाए, मानो कभी मध्यम हो जाए और कभी कृतिका मानो उग्र बनती चली जाए। इस प्रकार मानो जब श्वासों की गति पर अन्वेषण करने लगे, तो करते करते इस स्थली पर जा पहुंचे कि यह जो प्राण स्वरूप है, यह मन चित्त के आधार, यह जो चित्त मण्डल बना हुआ है इसकी जो प्रतिभा है वह मन पर आती है, मन प्राण से समन्वय करता है, परन्तु इसी प्रकार यह देखो, मन की धीमी मध्य और उग्रुत गति बनी रहती है।

औषध का प्रभाव

एक वाक्, दूसरा मूल उन्होंने जाना कि हम जो भी आहार करते है मानो यदि हम वनस्पतियों में प्रवेश करते है, तो एक वनस्पति ऐसी है, जिसमें देखो, अग्नि तत्त्व प्रधान माना गया है, अग्नि की उष्णता विशेष होती है जब वह उसको पान कर लेती है तो प्राण की गति मानो गति विशाल बन जाती है और यदि हम मध्यम, शीतल औषध का पान करते है तो प्राण की गति शीतल बन जाती है। परन्तु देखो, मन की प्रवृत्ति उसमें परिणित हो जाती है। यदि हम मानो उत्तेजित औषध का पान

कर लेते है तो हमारे रक्त की गति भी विशाल बन करके प्राण उसमें मिश्रित हो जाता है मानो वहीं प्राण एक आभा में रत्त रहने वाला है यदि हम मानो देखो, शीतल श्वेत्तामी औषधियों का पान करते है तो मानो हमारी कामवासना, उत्तेजना, नाड़ी की धीमी गति बन जाती है, देखो, उससे हमारे विकार समाप्त हो जाते है। तो परिणाम, मानो देखो, इस प्रकार का जो विचार महात्मा कुकुट मुनि महाराज के चिन्तन में आया। महात्मा कुक्कुट मुनि महाराज ने विचारा कि यह जो हमारा चित्त का मण्डल है, इस चित्त के मण्डल में तो संस्कार निहित रहते है अङ्कुर, तरंगें भ्रमण कर रही है वह जो सूक्ष्म अङ्कुर तरंगें, भ्रमण कर रहे है, उन तरंगों का जो समावेश, मन में प्रवेश करता है तो मन की गति भी, उसी प्रकार की बन जाती है। मानो देखो, मानव का आहार, व्यवहार में परणित हो जाता है। मुझे मेरे प्यारे महानन्द जी! ने, इससे पूर्व काल में, अपने जो विचार हमें व्यक्त कराए वे बड़े विचित्र वाक थे, उनके, परन्तु देखो, इनका एक विचार ऐसा महान, मार्मिक हमारे दर्शन शास्त्रों से सुगठित होता है। जैसे इन्होंने आहार की चर्चाएं की, क्या आहार मानव के प्राणों की रक्षा के लिए होना चाहिए।

सूक्ष्म आयु का कारण

परन्तु देखो, जब दूसरे के रक्त को हम पान करते रहेंगे, दूसरे के गर्भो को पान करते रहेंगे, तो रक्त की गति में भी विशालपन आ जाएगा, रक्त की गति में भी दूषित पना आ जाएगा और प्राण उसी के अनुकूल बरतने लगता है। प्राण में मानो देखो, मध्यपन, वृद्धपन, स्वातिपन, वाचीपन, भिन्न भिन्न प्रकार की देखो, श्वांस की प्रति गतियाँ बन जाती है क्योंक उसके मूल में यह है कि हमारा जो आन्तरिक जगत बना हुआ है, इस मानव शरीर का है, जो मानो देखो, जिसको ऊहा अपने में ला करके, रस नही बना सकता, उसका भी मानो देखो, संसार के ओभो अप्रत्तियों में रमण करता हुआ, दूसरे के रक्त को भी, वह अपने में पचाना चाहता है, अपने में संग्रह करके, उसे वितरण करना चाहता है। तो वितरण करने में,

आन्तरिक जगत में मानो देखो, कठिनाईयाँ आती रहती है। वह जो प्राण को, कठिनाईयाँ आती रहती है मानो सामान्य जो प्राण है, जो सात्विक पदार्थों को रस बना करके प्रदान कर सकता था वह रजोगुणी, तमोगुणी पदार्थों को भी उनका मानो देखो, उनको भी वितरण करना चाहता है। वह वितरण न हो करके, कहीं मानो देखो, पदार्थों में प्राण की न्यूनता हो जाती है, कहीं प्राण की ऊर्ध्वा गति बन जाती है तो मानो देखो, उस मानव का जैसे प्राण की गति देखो, धीमी अथवा दीर्घ बनती रहती है तो मानव का आयु सूक्ष्म बनता रहता है, मानव की आयु में सूक्ष्मपना आता रहता है। इसीलिए मानव में जब, रक्त में रक्त का मिलन होता है तो रक्त का विशेषकर, उनका एकोकी वर्ग नहीं, एकोकी करण न हो करके, मानो देखो, वह उत्तेजना में परणित हो जाता है, उस उत्तेजना से क्रोधाग्नि, कामाग्नि, जागरूक जितनी होगी, उतना मानव का आयु सूक्ष्म बनता रहेगा। उतना ही सूक्ष्म बना रहेगा। तो आज मैं बेटा! दर्शन शास्त्रों में, तुम्हें उस मानवीय क्षेत्र में ले जाना चाहता हूँ, जहाँ मानव अपने अन्तिम चरण में प्रवेश कर जाता है मानो देखो, इससे उसकी उत्तेजना में बलबती हो करके, मानव की कामप्रही प्रवृत्तियाँ बन करके आयु सूक्ष्म बनी रहता है। एक दूसरे के श्वासों में, श्वासों को मिलाना भी आयु में सूक्ष्मता बन जाती है।

मानव जीवन की उच्चता

तो परिणाम क्या है मानो देखो, विशेषताओं में जाना नहीं चाहता हूँ पुत्रों! यह महात्मा कुक्कुट मुनि महाराज का अनुसन्धान किया हुआ एक वक्तव्य है। महात्मा कुक्कुट मुनि महाराज ने कहा है, कि हम मानो देखो, स्वाभाविक जो हमारा शरीर, भोजन को पान करना चाहता है, जिस वायु में रमण करना चाहता है, उसी में अपने स्वभाव से, अपने मानवीय जीवन को, जितना बरतता रहेगा, उतना ही मानव का जीवन ऊँचा और धीमा और आयु दीर्घता में परणित होता चला जाएगा।

कन्दमूल के औषध गुण

तो आओ मेरे प्यारे! देखो, मैंने बहुत पुरातन काल में अपने विचार देते हुए कहा है कि महात्मा बृणी व्रत्तो नाना महापुरुषों का एक ही वक्तव्य रहा है कि वनस्पतियों को मानो उनका औषध बना करके पान करोगे तो जीवन का सञ्चारऊँचा रहेगा। मानो महात्मा कुक्कुट मुनि महाराज का यह वक्तव्य है क्योंकि कोई महात्मा, महापुरुष ऐसा नहीं होता जिसमें यह गुण न हो, औषधि का गुण भी उसमें होता है। औषध विज्ञान भी मानो उसे विशेषकर कृत करता रहता है। मानो देखो, कन्द मूल ये जो फल है अथवा वृक्षों का जो कन्द मूल है, इसको जो मानव पान करता है मानो जो पृथ्वी के अङ्ग में मानो देखो, पौधों में फल होते है, उनमें रजोगुणी रस होता है क्योंकि वे पृथ्वी के, आन्तरिक रस से रसित होते है जो रस सूक्ष्म बन करके, वृक्ष की नस नाड़ियों में परणित हो करके, फल में रस को प्रदान किया जाता है। वह, जो कन्द मूल है वह सात्विक होते है। मानो जितने भी रस, पृथ्वी से लिए जाते है मानो देखो, उन रसों में रजोगुण होता है, उन रसों में वायु प्रधान होता है, परन्तु उनका वायु प्रधान होने से वह कन्दमूल मानो देखो, उनको हम स्वन्प्रव्हे व्रातं बृहि यत्ताहः उनको मानो देखो, हमारे यहाँ देखो, रसिता को ले करके अपने में रजोगुणी बन जाते है और जितने भी ऋतुगामी, फल होते है, कन्दमूल होते है, जो वृक्षों के ऊर्ध्वा में रसित होते है और वह ऋतु के अनुकूल मानव पान करता है तो वह रस, उस शरीर के लिए आवश्यक कहलाता है। उसमें मानो आयुता ही नहीं होती है उसमें सुसज्जिता भी होती है जो पृथ्वी पर मानो देखो, जितने भी फहलाव करने वाले, जितने भी पौधे है अथवा उनका जो फल है, उन फलों में भी मानो देखो, जो रजोगुण की मात्रा होती है उनमें वायु प्रधानता है, वह वायु प्रधान होते है।

परन्तु देखो, कन्दमूल भी देखो, इसी प्रकार, जो पृथ्वी में अप्रेत करते है, वह कन्दमूल और ये कन्दमूल का मिलन मानो देखो, इनको किसी किसी काल में एक दूसरे से मिलान करके रस को रसित बना करके, इनका सोमरसों में क्रियाकलाप

होते रहते है मानो देखो, जैसे मैंने बहुत पुरातन काल में, तुम्हें वर्णन करते हुए कहा था कि यह जो मानो, जितना औषध विज्ञान है, यह बड़ा विचित्र विज्ञान माना गया है।

महात्मा दधीचि का जीवन

मुझे स्मरण आता रहता है, महात्मा दधीचि के जीवन में प्रायः ऐसा आता है कि जब वह अनुष्ठान करते थे तो मानो वह सायं काल को देखो, भ्रमण करने जाते। प्रातःकालीन भ्रमण करने जाते। तो नाना औषधियों को ले करके वह उनका रस बना करके, उसको पान करते थे। उस रस को पान करके मानो वह लेखनियाँ बद्ध करते रहते थे। जैसे हमारे यहाँ महर्षि कणाद के जीवन में, मुझे स्मरण कराया, एक समय महानन्द जी ने, कि महर्षि कणाद के जीवन में, उन्होंने मानो देखो, पतञ्जलि जी के जीवन में, अनुशासन के ऊपर जब लेखनी बद्ध करने लगे, तो लेखनी बद्ध करते करते योग की प्रतिभा में चले गएं मानो परन्तु देखो, आहार क्या करते थे, यह विचारना है। मानो देखो, आहार क्या करते थे, वह स्वयं देखो, कनक को ले करके, उस कनक को मानो देखो, जल में रसित करके उसका मानो दुग्ध बना करके, प्रातःकालीन पान करते थे।

सूक्ष्म आहार का प्रभाव

एक समय मानो देखो, अश्विनी कुमार और महात्मा सुधन्वा एक स्थान पर विद्यमान थे। तो मानो एक स्थान पर जब विद्यमान थे तो एक वृक्ष, पीपल का वृक्ष था, उस पीपल के वृक्ष पर मानो एक पक्षी गान गा रहा है वह कौरुक कह रहा है कौरुक, कौरुक कह रहा है। परन्तु देखो, सुधन्वा ने अश्विनी से कहा, यह पक्षी? क्या कह रहा है उन्होंने कहा प्रभु! हम तो इस भाषा को जान नहीं पाए। परन्तु देखो, कुमार ने कहा कि भगवन! यह कह रहा है कौरुक, कौरुक, ऋतु अस्तु ब्रह्माः मानो देखो, वह क्या कह रहा है प्रभु! इसको नहीं जानते। तो महात्मा सुधन्वा ने कहा, वैद्यराज सुधन्वा ने कहा कि यह कहता है कौरुक, कौरुक, कौरुक तीन समय कौरुक कह

करके वह पत्ती शान्त हो गया। तो पत्ती जब कौरुक कहता है तो वह कहता है कि ऋतभुक, मितभुक, और मानो देखो, सोवृत्ति कृतिभा मानो देखो, यह उच्चारण करके सुधन्वा ने कहा देखो, एक तो हित भुक, और मित, भुक, और ऋतभुक ये तीन मानो देखो, पदार्थ होते है। मानव को जब क्षुधा लगे मानो देखो, हित भुक पान करना चाहिए। जो हित में आने वाला पदार्थ है, उसका पान करो। परन्तु देखो, जो मित भुक, जो मित्र की दृष्टि से प्रिय लगने वाला हो। और एक वह जो ऋतु के अनुसार हो, जो ऋतु में, छहऋतु है, ऋतु में जो अन्न हो, कन्दमूल हो उसे पान करना चाहिए। परन्तु देखो, मानव कहता है ऋतो भवति हित, भुका वृत्ते मानो देखो, सूक्ष्म आहार करना चाहिए। सूक्ष्म आहार करने वाला मानो देखो, संसार में रुग्ण नहीं होता।

महापुरुषों की देन

मुझे वह काल स्मरण आता रहता है। जब मानो हम पूज्यपाद गुरुओं के द्वारा अध्ययन करते थे, तो गुरुदेव जब मानो प्रातःकालीन अन्न का पान कराते तो ऋतु के अनुसार आ जाता है और देखो, मित के अनुसार जो उन्हें प्रिय लगता परन्तु देखो, लवण युक्त रहता, उस पदार्थ को देते मानो उससे तृप्ति हो जाती। मानो सूक्ष्म आहार देना और साधना में परणित रहना, अध्ययन कराना मानो जब ब्रह्मचारी का यह आहार बन गया, सूक्ष्म मानो अन्न बन गया, प्राणों की रक्षा के, सुयोग्य अन्न की पान किया जाता तो वह मानव उत्तेजित नहीं होता। वह मानव सदैव, उसके रसों में, शरीर में मानो वह बुद्धिमानों, परमात्मा प्रदान करता है, उस मानव को, जो मानव सुन्दर, सुन्दर लेखनियाँ बद्ध करके, संसार को कुछ दे करके चले जाते है मानो देखो, अब्रहे व्रातम् मुझे स्मरण आता रहता है बहुत से महापुरुषों का जीवन, मैं महानन्द जी के कल के विचारों के ऊपर एक टिप्पणियाँ दे रहा हूँ।

मानो देखो, वह काल स्मरण है, महर्षि वाल्मीकि का जीवन स्मरण आता रहता है बाल्मीकि महाराज! मानो देखो, वह नदी के तट पर रहते थे, तट पर रह करके

मानो देखो, जल को पान करना और जल को शक्तिशाली बना लेना मानो देखो, उसमें आम, पीपल, और देखो, वह सोमनी वंचितिका और त्रेती वर्णाश, श्वेतम्भरी मानो देखो, उन सब औषधियों को ले करके, उनके पत्रों को ले करके, उनका रस बना करके बाल्मीकि जी पान करते थे। परन्तु देखो, राम का जीवन मानो उन्होंने लेखनियाँ बद्ध की, क्या दे करके चले गये, महापुरुषों का जीवन दे करके चले गये।

औषध मिश्रण

तो मैं उच्चारण यह कर रहा हूँ कि पूज्यपाद गुरुओं के द्वारा, जब अध्ययन करते थे तो प्रायः इस प्रकार का अध्ययन हमारे जीवन में रहा। मानो देखो, सूक्ष्म आहार करना ही मानव की यौगिकता है। मानो देखो, उससे शरीर मानो ओजस्वी बना रहता है और ऊर्ध्वा में गति करता रहता है जब मानो देखो, ऋतु वत्सं ऋतु और देखो, मित और देखो, वह सौ कृत्ति कृतोकर्णावस्तुति ये तीनों रूख्यकों का पान करता है, भोक्ता बनता है वह भोगतव्य को प्राप्त हो करके, ज्ञान, विज्ञान की उड़ाने उड़ता है तो यह वाक जब उन्होंने वर्णन किया। वैद्यराज ने जब यह वर्णन किया तो अश्विनी कुमार नतमस्तिष्क हो गये। उन्होंने कहा, धन्य है प्रभु! यह वाक हमें हमारे पूज्यपाद गुरुदेव भी अध्ययन कराते थे, जब आयुर्वेद का अध्ययन कराते थे। जब माता लोरियों का पान कराती, जब हम कुछ जानने के योग्य हुए तो माता भी यही वाक कहा करती थी। क्योंकि माता सदैव मानो देखो, चन्द्रमा की पूर्णता, कान्ति में, वह गो रस को ले करके, वह चन्द्रमा में तपा करके पान कराती रहती थी। उस चन्द्रमा के गुणों का, रसो का रसित प्राप्त हो जाता है। मानो देखो, हमारे यहाँ ऐसे ऐसे, मानो इस प्रकार के जानने वाले हुए, सम्भवा देवो ब्रह्म वाचा मानो हम जल को, रात्रि समय देखो, भयंकर वन में जल को स्थित कर देना और जल को स्थित करके उस जल में देखो, शैलखण्डा, औषध का मिश्रण करा देते थे प्रातःकालीन, मानो देखो, सायंकाल को भी कर देती थी, वह दिवस समय में, सूर्य

की किरण तपाती, रात्रि समय प्राणी, भिन्न भिन्न प्राणी उस जल का, अपने में सेवन करते रहते थे और जब सेवन करते तो मानो देखो, वह प्रातःकाल, अगले प्रातःकाल उस जल को ले करके उसे मानो देखो, उस जल को मानो देखो, वत्रते व्रेत पर करके रस को मानो चरणामृत के नाते मानो देखो, उसमें तुलसी का सेलानी अंचकेतु, अंकेतु सत्यानाशी के और स्वाति के पत्रों का मानो उसमें मिश्रण करके, उनका रस बना करके पान किया जाता।

औषध से विभिन्न प्राणियों का भाषा ज्ञान

तो ऐसा हमारे यहाँ आया है कि इन औषधियों के कृत से, जलों के व्रणे संस्कारों से मानो जितने प्राणी, उस जल को पान करते थे, रात्रि के काल में, उन औषधियों से, उस जल का संस्कार करने के पश्चात प्राणी पान करता रहता था, यदि छहमाह तक इस प्रकार जल को पान कर ले तो जितने भी प्राणी, उस औषधि के जल को पान करते है उतने ही प्राणियों को मानो भाषा का वह रूपान्तर जान लेता है। मानो उन भाषाओं का विशेषज्ञ बन जाता है, कि सर्पराज यह कह रहा है और यह सर्पराज की भाषा है मानो यह कीट की भाषा है, यह मृग की भाषा है। नाना प्राणियों की, जितने प्राणी उसको पान करेंगे, उन प्राणियों की भाषा का विशेषज्ञ, बुद्धिमान बन जाता है।

सोम रस

तो यह प्रायः देखो, इस प्रकार का अनुष्ठान, प्राचीन काल में, हमारे यहाँ प्रायः होता रहा है। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव क्या, आदि ऋषिवर देखो, एक कुम्भक ऋषि महाराज का आसन था पूज्यपाद गुरुदेव के आसन के निकट वह मानो देखो, कुम्भक ऋषि, इस प्रकार का अनुष्ठान करते थे। छहछः माह तक, जब भी अनुष्ठान करते तो जल को मानो स्वच्छ जल को, किसी पात्र में प्रदान कर देना और मानो देखो, उसको सूर्य की किरण का अवधान, संस्कार होना, फिर चन्द्रमा की कान्ति का संस्कार होना और मानो देखो, प्राणी उसे रात्रि समय, जल को अपने में पान करते रहते

थे। उसी जल में इन औषधियों का मिश्रण करके मानो उसका पिपाद बना करके उस पान करते रहे है। वह सोम रस कहलाता है। उसको भी हमारे यहाँ सोम रस कहते है। सोम रस क्यों कहते है? क्योंकि उससे हमें सौम्यता प्राप्त होती है। उस जल से, हमें प्राण शक्ति प्राप्त होती है, वह औषधियों का संस्कार है और प्राणियों के विचारों का संस्कार, हमारे उदर में जा करके, स्मरण शक्ति में देखो, वह जागरुक हो जाता है।

तो परिणाम क्या बेटा! यह मैं भयंकर वन में चला गया हूँ, बेटा! मैं बहुत दूरी चला गया हूँ, विचार तो बहुत ही विचित्र है ये, परन्तु देखो, जब बहुत गम्भीर साधना में एकत्रित हो करके, इन विचारों का अनुष्ठान करते रहे है। तो विचार विनिमय क्या मानो देखो, सोमरस की एक प्रतिभा तो यह कहलाती है। एक सोमरस और बनाया करते थे पूज्यपाद गुरुदेव, एक सोमरस और बनाते थे। वह सोमरस क्या था? कि गऊ के दुग्ध को लिया और गऊ के दुग्ध को ले करके, उसमें तन्दुल लिए और तन्दुल ले करके मानो देखो, बीस भाग उसमें मानो दुग्ध हो और एक भाग उसमें तन्दुल हो। एक भाग मानो देखो, उसमें अपामार्ग का जो बीज होता है उसको लिया जाता है और तुलसी का, मानो सौवाँ भाग, तुलसी का लिया जाता है और उसे ले करके और उसमें मानो देखो, प्रतिपदा शैल खण्डा के चौथाई भाग उसमें मिश्रण किया जाता है। और देखो, उसमें एक गंगा तटो का कुछ जल ले करके उसमें परणित किया जाता है। मानो देखो, उसको चन्द्रमा के दिवस मानो देखो, अग्नि में तपा करके, सायं काल को पूर्णिमा के चन्द्रमा में उसे परणित कर देते थे। मानो देखो, परणित करके वह रात्रि समय, चन्द्रमा की कान्ति लगती रहती और वह मानो देखो, प्रातःकालीन मानो देखो, उस रस को, उसका रस बनाते, उसमें देखो, खरल करके रस बनाते रहते और रस बना करके मानो देखो, तुलसी के पत्रों का उसमें मिश्रण करते रहते और सत्यानाशी के पत्रों का मिश्रण करते। एक सोम बेल होती है उसका मिश्रण करते, एक जटामांसी होती है उसका मिश्रण

करते, एक सोम कृतिका होती है उसका मिश्रण करते। परन्तु देखो, इन सब औषधियों का मिश्रण करके, उनको खरल बना करके, रस बना करके उसको पान किया जाता था तो उसको भी बेटा! सोम रस कहा जाता है।

तो मुनिवरों! देखो, सोमरस की, सोम रस का अभिप्राय यह है जो मानव को प्रतिभा देने वाला हो, मानो प्रकाश देने वाला, वहीं अन्नाद हमारे जीवन का सोमरस बन करके रहता है। परन्तु देखो, इन विषैले पदार्थों को सोम रस नहीं कहा जाता है मानो देखो, इनको तो दूषित रस कहा जाता है। इनको दूषित रस कहना चाहिए। परन्तु विचार विनिमय इस सोम रस का पान करना, यह मानव, एकान्त में इस प्रकार के अनुष्ठान करने वाला देखो, यहाँ यदि बारह अनुष्ठान इन रसो के कर लेता है तो मुनिवरों! मानो देखो, उसका लगभग एक हजार वर्ष का आयु बन जाता है। इसी प्रकार अनुष्ठान करते चले जाओ, अहा देखो, ऋतभुक मितभुक और हितभुक का पान करते रहो तो मानव के जीवन में मानो देखो, रुग्ण होने का एक मूल कारण नही बनता है, एक मूलता में यह है कि मानव को प्राणशक्ति को ऊर्ध्वा बना लेना चाहिए, देवत्व में ले जाना चाहिए।

ब्रह्मचर्य के दो ही प्रकार के स्वरूप माने गएं है। एक ब्रह्मचर्य की ध्रुवा गति होती है, एक ब्रह्मचर्य की ऊर्ध्वा गति होती है। ध्रुवा गति वाला पितर यागी भी बन जाता है। परन्तु वह ध्रुवा गति, देव यागी भी बन जाता है। वह मानो देखो, जब विचारों को मन्थन करता करता, ब्रह्मरन्ध में जब उसकी कृतिका चली जाती है देखो, ब्रह्मरन्ध में रस लेना प्रारम्भ हो जाता है तो मानो देखो, प्राण सूत्र में पिरोया हुआ, ब्रह्मरन्ध उस मानो देखो, चरी की, उन परमाणुओं की जब ऊर्ध्वा गति बन जाती है तो मानो देखो, ऋषि जन, रसना के अग्र भाग को मानो देखो, वह ब्रह्मरन्ध के अग्र भाग में परणित करते हुए, सोमरस का पान करते है। एक सोमरस वह होता है जिसको हमारे यहाँ, आध्यात्मिक रूप दिया जाता है। तो बेटा! मैं कहा चला गया हूँ, तुम्हें यह प्रतीत हो गया होगा, मैं बहुत दूरी चला गया हूँ, तुम्हारे विचारो

में, इससे पूर्व विचारों में, तुम्हें मैं ब्रह्माण्ड की, मेरे शरीर रूपी ब्रह्माण्ड की, ग्रन्थियों में स्पष्टीकरण कर दिया है। मुझे कुछ ऐसा भाव हो रहा है परन्तु देखो, मेरे जो संस्कार देखो, जो सुषुप्ति में चले गये, वह भी जागरूक हो गएं है। परिणाम मुझे यह दृष्टिपात आ रहा है कि यह जो ज्ञान, विज्ञान की चर्चाएं, यह मानो देखो, औषध विज्ञान से ही प्रारम्भ होती है। मानो देखो, मानव उड़ान उड़ने लगता है विचित्र, विचित्र उड़ाने उड़ता हुआ, अपने ब्रह्मरन्ध में, अपनी आभा को परणित करने लगता है।

तो आओ मेरे पुत्रों! मैं विशेषता में न ले जाता हुआ, तुम्हें उस क्षेत्र में ले गया हूँ जहाँ मानवीयता की प्रतिभा का जन्म होता है। आनन्दत्व की प्रतिभा का जन्म हो करके, मानव सागर से पार हो जाता है। तो आओ मेरे पुत्रों! आज मैंने तुम्हें कुछ सूक्ष्म महापुरुषों की चर्चाएं की, कुछ औषधि विज्ञान की चर्चाएं की है, कुछ अपने अनुभव, पूज्यपाद गुरुदेव के चरणों में विद्यमान हो करके, जिन रसों का पान करते रहे है मानो देखो, उस प्रतिभा को भी जान करके, हम मानो सोम की प्रतिभा में परणित हो गएं है। परिणाम क्या है, हम मानो देखो, जब आत्मा, मन और प्राण दोनों का सम्मिश्रण करते है। साधना में, अनुष्ठान में, परणित हो करके मानो देखो, सन्तुलित करके, जब इसमें परणित हो जाते है तो मानो देखो, एक मन और प्राण के सम्मिलान से जब देखो, इस ब्रह्मरन्ध्र में, एकता के सूत्र में परणित होते है तो वह भी हम एक सोम रस को पानकर रहे है। जो प्रभु का दिया हुआ, अनन्य सोम रस है, जिसको योगी जन पान करके अपनी आयु को दीर्घ बना करके, इस संसार सागर से पार हो जाते है।

प्रभु की प्रतिभा

आओ मेरे प्यारे! मैं विशेष विवेचना न देता हुआ, केवल विचार यह चल रहे है कि हमारे यहाँ देखो, जिस मानव को स्वस्थ रहना है, जिस मानव को महान बनना है उसको अपने जीवन में अनुष्ठान करने चाहिए औषधि विज्ञान को विशेषकर जानना

चाहिए मानो देखो, इस प्रकार की प्रतिभाशाली पुरुषों का हमें संग प्राप्त हो, जिससे जीवन की प्रतिभा एक महान बन करके रहे। मानो क्रोधाग्नि में हमारा जीवन नहीं समाप्त होना चाहिए, यह संसार की प्रतिभा में मानव को रत्त नहीं रहना चाहिए। मानव को यदि रत्त रहना है तो प्रभु! की प्रतिभा में रत्त रह करके बेटा! अपने मानव जीवन को सुसुज्ञित बना करके मानो देखो, उस सागर से पार हो जाना है। यह है बेटा! आज का वाक्, अब मुझे समय मिलेगा, मैं तुम्हें शेष चर्चाएं कल प्रगट करूंगा। आज के वाक उच्चारण करने का अभिप्राय यह कि भिन्न भिन्न प्रकार की औषधियों के पिपाद बनाए जाते है, सौम्यता में प्रदान किए जाते है, नाना प्रकार से हम वायुमण्डल, ऋतभुक मितभुक और हितभुक को हमें पान करना चाहिए। जिससे जीवन पवित्र बन जाए।

जैसा मेरे पुत्र महानन्द जी ने कहा है कि मानव शरीर को दूसरे प्राणियों का गृह नहीं बनाना चाहिए मानो इससे पूर्व काल में, यह प्रगट कर रहे थे कि दूसरे मानव के रक्त को पान करने वालों का आयु सूक्ष्म होता है। उनका आयु दीर्घ नहीं होता, यह हम भी उच्चारण करते है। मानो देखो, बहुत प्रकार के दैत्य हुए है, त्रेता के काल में, दैत्य राज हुए है। जिन्होंने मांसों का भक्षण करके, दूसरे प्राणियों का भक्षण करके, अपनी आयु को उन्होंने सूक्ष्म बनाया है उनका आयु सूक्ष्म बन गया है। परन्तु देखो, इसी प्रकार मानव को, आयु को हमें सूक्ष्म नहीं बनाना चाहिए, विशाल बनाना चाहिए। आयु का अभिप्राय यह है कि शरीर को त्यागने का नाम आयु नहीं है, आयु उसे कहते है जो मानो देखो, अपने जीवन में आहार पान कर रहा है, उसके पश्चात रुग्णता में परणित हो रहा है। वह रुग्ण वाला जो प्राणी है, वह पाप का मूल बन रहा है पाप के मूल में परणित हो रहा है और वह मानो देखो, उससे आयु सूक्ष्म बनती रहती है।

तो यह आज का हमारा वाक समाप्त होने जा रहा है, आज के वाक उच्चारण करने का अभिप्राय यह, कि हमें ऋतभुक, मितभुक और हितभुक का पान करते, हमें

अपने जीवन को ऊँचा बनाना है देखो, हित ऋत, मित भूक ध्वस्ति ब्रह्मवा वाचन्नेम देवो ब्रह्मा ये बेटा! सब वैद्यराज अपने में अनुभव करते है ये आज का वाक समाप्त, अब वेदों का पठन पाठन।